

मैंने कहा था

सम्पादक
डा. गिरिराज शरण

प्रतिभा
प्रतिष्ठान,
नई दिल्ली

प्रकाशक : प्रतिभा प्रतिष्ठान, १६८५ दखनीराय स्ट्रीट,
नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-२

संस्करण : प्रथम, १६८२

मूल्य : पच्चीस रुपये

Patel Ne Kaha Tha (Thus Spake Sardar Patel) Rs. 25.00

हम अपने धर्म का पालन करें, तो दुःख से भरे इस संसार में अवश्य सुखी होंगे। ईश्वर पर भरोसा रखकर, अपने कर्तव्य का पालन करते हुए, हमें आनन्द से अपने दिन बिताने चाहिए। सबसे सुन्दर मार्ग यह है कि हम किसी भी बात की चिन्ता न करें।

—सरदार पटेल

लौहपुरुष

हमारे देश के स्वाधीनता-आंदोलन और स्वतंत्र गणराज्य के नव-निर्माण में अग्रणी जननेता सरदार वल्लभ भाई पटेल सर्वत्यागी देशभक्त और निर्भय राष्ट्रवादी थे। अपने गुरु-गंभीर व्यक्तित्व, त्यागमय चरित्र, कूटनीति-कौशल और संकल्पनिष्ठा के बल पर वे स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान-मंत्री पद के सच्चे अधिकारी माने जाते थे (उनके उत्साही समर्थकों और अनुयायियों की संख्या भी सर्वाधिक थी।) मगर गांधीजी की इच्छा से, पद-मोह त्यागकर, उन्होंने नेहरूजी के नेतृत्व में राजसत्ता संभाली, और कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुशासन का जीवन्त आदर्श प्रस्तुत किया।

"सत्ताधीशों की सत्ता उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाती है, जबकि महान् देशभक्तों की सत्ता उनके मरने के बाद ही सचमुच काम करती है। लोग उनके जीवन का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं, उनके गुण गाते है, और दिन-रात उन्हें याद करते हैं—" उनका यह कथन स्वयं उनके लिए भी

सच साबित हुआ। उनके त्यागमय और ध्येय-समर्पित जीवन की तुलना आज के राजनीतिक वातावरण में तो असंभव है ही, उनके समकालीन महामानवों के बीच भी उनकी महानता निर्विवाद थी।

गुजरात के एक शांतिप्रिय किसान के होनहार सपूत वल्लभ भाई में सामाजिक जागरूकता जन्मजात थी। स्थानीय सामाजिक हलचलों में उत्साह से भाग लेते हुए, अहमदाबाद नगर-पालिका के सभासद पद से अपनी राजनीति-यात्रा शुरू करने वाले सरदार पटेल बहुत शीघ्र राष्ट्रीय आंदोलन के आधार-स्तंभ बन गए। भारत विभाजन और लाखों शरणार्थियों की करुण पुकार से दुखी देश में शांति-व्यवस्था स्थापित करने के साथ ही, ५५० से अधिक छोटी-बड़ी रियासतों को समाप्त करके विराट भारतीय गणराज्य की प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले 'लौहपुरुष' सरदार पटेल को इतिहास कभी नहीं भूलेगा।

भारत की ग्रामीण संस्कृति के साकार प्रतीक, और महात्मा गांधी के आदर्श—सादा जीवन, उच्च विचार—के सर्वोत्तम उदाहरण थे सरदार पटेल। स्वाभिमान, सच्चाई, निर्भयता, सहनशीलता और आदर्श-निष्ठा उनके सहज गुण थे। साहस और तेजस्विता के साथ ही अनुशासन भी उनके चरित्र में भरपूर था। कायरता उन्हें असहनीय थी—"कायरता का मैं कट्टर शत्रु हूं और कायर मनुष्यों का साथ देने के लिए कभी तैयार नहीं हो सकता।···आपकी कायरता का असर आपके पड़ौसियों पर होता है और उसका बोझ दूसरे पर भी पड़ता है। इसलिए आपको मजबूत बनना चाहिए।"

अनेक मतभेदों के बावजूद, नेहरूजी ने भी उन्हें 'राष्ट्रीय

एकता का शिल्पी' कहकर सम्मानित किया था।

हम जानते हैं कि भारत को स्वतंत्रता तो मिली, किन्तु क्षत-विक्षत रूप में—देश का विभाजन, ५६२ देशी रियासतों के साथ जिन्हें अंग्रेजों की कूटनीति के कारण भारतीय संघ में विलय होने न होने का अधिकार दे दिया गया था, ऐसी प्रतिकूल और अनिश्चित स्थिति को समाप्त कर राष्ट्र को अखंडता और स्थायित्व देने का महत् कार्य सरदार पटेल ने ही पूरा किया। शाश्वत नियम है कि पौधा कोई लगाता है, फल कोई खाता है। सरदार पटेल ने भी राष्ट्र की नवरचना में जिस दायित्व का निर्वाह किया उसके लिए यह संपूर्ण राष्ट्र उनका चिरऋणी रहेगा।

ऐसे महामानव के प्रेरक विचारों से देश की छात्र-युवा पीढ़ी को परिचित कराने का यह अकिंचन प्रयास है। ये विचार सरदार पटेल के जीवन-दर्शन को तो प्रस्तुत करते ही है, निराश और पराजित मानव को आशा का नया संदेश भी देते है।

इसमें मुझे डॉ० राजकुमार अग्रवाल, प्रो० बुद्धिप्रकाश और डॉ० कृष्णचन्द्र गुप्त का भरपूर सहयोग मिला है—उनका आभार मानना मेरा पहला कर्तव्य है। आशा है, हम सबका श्रम सार्थक होगा और इस पुस्तक का भरपूर स्वागत होगा।

—डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

अनुक्रम

पटेल ने कहा था

अक्रोध

लोहा भले ही गरम हो जाए, परन्तु हथौड़े को तो ठंडा ही रहना चाहिए। हथौड़ा गरम हो जाए तो अपना ही हत्था जला देगा। आप ठंडे ही रहिए। कौनसा लोहा गरम होने के बाद ठंडा नहीं होता? कोई भी राज्य प्रजा पर कितना ही गरम क्यों न हो जाए, उसे अन्त में ठंडा होना ही पड़ेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५२

अच्छे कार्य

कितना ही धन बुद्धि से प्राप्त कर लें, परन्तु एक पाई भी साथ नहीं जाती। मनुष्य जब जन्म लेता है तब मुट्ठी बन्द करके आता है, परन्तु जब जाता है तब खाली हाथ जाता है। अगर कोई अच्छा काम करके जाता है, तो पीछे सुगन्ध छोड़ जाता है। गरीब लोगों की सहायता करके जाता है, तो उसे कोई न कोई याद करता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७०

अतिथि

मेहमानों के गुणगान करना हिन्दुस्तान की विशेषता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३६८

अधिकार

अधिकार मनुष्य को अन्धा बना देता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १११

अधिकार हजम करने के लिए जब तक पूरी कीमत न चुकाई जाए, तब तक यदि अधिकार मिल भी जाएं तो उन्हें गंवा बैठेंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३६३

छोटों के हकों की रक्षा करने में बड़ों के हकों की रक्षा भी हो जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४६८

जो आदमी अपने हकों की अपेक्षा रखता है, उसे अपने फर्ज का भी खयाल रखना चाहिए।

— सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४६८

अधिकारी

जो सिपाही है, वह धरती पर चलता है, इसलिए उसको गिरने का कोई डर नहीं है। लेकिन जो अधिकारी बन गया है, अमलदार बन गया, वह ऊपर चढ़ गया, उसको तो कभी गिरना ही है। यदि वह अपनी मर्यादा न रखे और मर्यादा की जगह न संभाले, तो वह गिर जाएगा और उसको चोट लगेगी।

तो जो अधिकारी बनता है, उसको अधिकारी पद संभालने के लिए रात-दिन जाग्रत रहना चाहिए। यदि आप जाग्रत न रहेंगे, तो आप को जरूर गिरना है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५५

अफसर कोई हमारे दुश्मन नहीं हैं। वह बेचारा हुक्म का ताबेदार बनकर आया है। हुक्म न मानकर नौकरी छोड़ने की उसकी हिम्मत नहीं। उससे हमें द्वेष न करना चाहिए। किसी

के जीवन की आवश्यकताएं पूरी न होने देना, दूध, साग, धोबी और नाई न मिलने देना सत्याग्रह नहीं है। बाजार में मिलने वाली चीजें, पूरे दाम पर, सबकी तरह उसे भी मिलनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४६

अनुयायी

यदि मैं लीडर का साथ न दे सकूं और उनके पैर मैं मजबूत न कर सकूं, तो मैं मिनट भी गवर्नमेंट में न रहूंगा। यह मेरा काम नहीं है। इस तरह की बेवफाई करना मेरे चरित्र में नहीं है, क्योंकि अपने जिस लीडर (महात्मा गांधी) से मुल्क की सेवा का धर्म मैंने सीख लिया है, उसमें इस प्रकार की बेवफाई आ जाए, तो मुझे अपघात (आत्महत्या) कर लेना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० २६

अन्याय

हम खुद ही अन्यायी बन जाएं, तो हम दूसरों से न्याय नहीं मांग सकते। गलती करने वाले को माफ कर दो। उसके साथ मुहब्बत करो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ६८

अपने विषय में

कुछ लोग कभी-कभी मुझ पर इल्जाम लगाते हैं कि वह तो राजाओं का पिट्ठू है। कुछ लोग मुझे धनिक और जमींदारों का भी पिट्ठू कहते हैं। मगर मैं असल में सबका पिट्ठू हूं; मैं मजदूरों का भी हूं, क्योंकि मैं मजदूरों का काम भी करता हूं। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूं, आपमें से बहुत कम लोग जानते होंगे कि जब से मैंने गांधीजी का साथ दिया, तब से मेरे पास कोई दमड़ी भी अपनी नहीं है। तब से एक धेला भी मैंने

अपना बनाकर नहीं रखा। क्योंकि यह उनके सिद्धान्त के खिलाफ है। तो मुझे मिल्कियत की कोई जरूरत नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १७३

बहुत दफे मेरे पर जो यह अटैक (आक्रमण) होता है कि यह तो बिड़लाजी का साथी है, अमुक का साथी है, यह सब गलत है। मैंने जब से गांधीजी का साथ दिया, तब से यह एक प्रतिज्ञा ले ली कि अपनी मिल्कियत में कुछ नहीं रखूंगा। यह उनके पास से मैंने सीख लिया और उससे बढ़कर सोशलिज्म कोई और नहीं मानता। गांधीजी के पास रहकर मैंने यह भी सीख लिया कि न राजाओं से दुश्मनी करना, न कैपिटलिस्ट से दुश्मनी करना, न लैंडलॉर्ड से दुश्मनी करना, न किसी और से दुश्मनी करना। देश के हित के लिए सबसे काम लेना और सबमें एक-दूसरे के लिए मुहब्बत पैदा कर अपने-अपने काम करवा लेना। यह मैंने बापू से सीख लिया।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० २९-३०

मुझमें समझने की शक्ति है और मैंने दुनिया भी काफी देखी है। इसलिए समझे बिना ही, एक हाथ को लंगोटी पहनकर घूमनेवाले के पीछे पागल हो जाऊं, ऐसा मैं नहीं हूं। मेरे पास बहुतों को ठगकर धनवान बनने का धंधा था, मगर वह मैंने छोड़ दिया; क्योंकि इस आदमी से मैंने यह सीखा है कि वह धंधा करके किसान की भलाई नहीं हो सकती। उन्हीं के मार्ग से हो सकती है। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८५

मेरी तो आदत पड़ गई है कि जहां पैर रख दिया, वहां से पीछे न हटाया जाए। जहां पैर रखने के बाद वापस लौटना पड़े, वहां पैर रखने की मुझे आदत नहीं, अंधेरे में कूद पड़ने की मेरी आदत नहीं, अंधेरे में कूद पड़ने का मेरा स्वभाव नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३९५

मैं किसान का लड़का हूं। किसान की जबान में मिठास नहीं होती। मेरी जीभ कुल्हाड़े जैसी है; और मेरी बात कड़वी लगे, तो भी हम दोनों के हित की है। मैं साफ बात पसन्द करने वाला हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २३३

मैं कोई नेता नहीं हूं। मैं तो एक सिपाही हूं। मैं किसान का बेटा हूं, और यह नहीं मानता कि जबानी जमा-खर्च से स्वराज्य मिल जाएगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५७

मैंने अपना जीवन गुलामी मिटाने के लिए अर्पण किया है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४६

मैं विद्वान् होने का दावा नहीं करता। कला या साइंस के विशाल गगन में भी मैंने कोई उड़ान नहीं भरी है। मेरा काम तो कच्ची झोंपड़ियों में, और गरीब किसानों के खेतों, ऊसर जमीनों या शहरों के गन्दे मकानों और मोरियों में रहा है। सार्वजनिक जीवन में भी मैं कोई नीतिज्ञ या पॉलिटिशियन नहीं, बल्कि मार्क एन्टनी की तरह एक सीधा-सादा अक्खड़ आदमी हूं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ११३

अपराध

अपराध स्वीकार करके फांसी के तख्ते पर लटकने में बहादुरी है। वैसे, छिपने में तो कायरता ही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ९७

अपराधी को पकड़ने के लिए पुलिस की मदद लेने के बजाय, अपराधों को रोकने में हमारी शोभा है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३३९

अपराधी

दुनिया में हम सब थोड़े-बहुत अंश में अपराधी हैं। मगर जो आदमी पसीना बहाकर खेत में काम करता है, और दुनिया के लिए अन्न और वस्त्र की सामग्री पैदा करता है—वह दुनिया में सबसे कम अपराधी है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६२

अपवित्र

नापाक तो वह कहलाता है, जिसे देश का दर्द न हो और जो स्वतन्त्रता न चाहता हो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३७६

अविश्वास

अविश्वास भय का कारण है। प्रजा का विश्वास राज्य की निर्भयता की निशानी है। इतना याद रखना चाहिए कि राज्य प्रजा के लिए है, प्रजा राज्य के लिए नहीं है।

असंगत

जहां साधारण आवश्यकताएं पूरी करने की भी शक्ति न हो, वहां भविष्य में आने वाली बड़ी जिम्मेदारियों का चित्र खींचना बेमौके होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १०८

असंतोष

अखिल ब्रह्मांड में हमारी क्या बिसात है, और हमें किसलिए असंतोष होना चाहिए?

—सरदार पटेल की अनुभव वाणी, पृष्ठ ११२

असहयोग

असहयोग जनता और राज्य के बीच नीति, नियम और मर्यादा में रहकर चलाया जाने वाला महान युद्ध है। इस युद्ध

में दोनों के बल की परीक्षा होती है। युद्ध में नियमों का दोनों पक्ष पूरी तरह पालन करें, तो इससे ठीक एक पक्ष भी घाटे में नहीं रहेगा। जीतने वाले को तो खोना है ही नहीं। असल में, दोनों ही पक्षों को इससे बहुत लाभ होगा। इस महान् युद्ध के परिणाम जितने सुंदर हैं, उतना ही यह युद्ध कठिन है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ११

कुछ लोगों को तो असहयोग में धर्म-भंग का दोष दिखाई देता है। मैं उनके बराबर विद्वत्ता या धर्मतत्त्वों के ज्ञान का दावा तो नहीं करता। फिर भी उनसे पूछता हूं कि जनता को असहयोग में शरीक न होने की, असहयोग से दूर रहने की—सार यह है कि असहयोगवादियों से असहयोग करने की सलाह देते समय धर्म-भंग का दोष कहां चला जाता है?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १८

अस्पृश्य

अस्पृश्य की व्याख्या आप जानते हैं। प्राणी के शरीर में से जब प्राण निकल जाते हैं, तब वह अस्पृश्य बन जाता है—मनुष्य हो या पशु, जब वह प्राणहीन बनकर, शव होकर पड़ जाता है—तब उसे कोई नहीं छूता, और उसे दफनाने या जलाने की क्रिया होती है। मगर जब तक मनुष्य या प्राणीमात्र में प्राण रहते हैं, तब तक वह अछूत नहीं होता। यह प्राण प्रभु का एक अंश है, और किसी भी प्राणी को अछूत कहना भगवान के अंश का, भगवान का तिरस्कार करने के बराबर है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २०६

जिसने ईश्वर को पहचान लिया, उसके लिए तो दुनिया में कोई अछूत नहीं है। उसके मन में ऊंच-नीच का भेद नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२०

हिन्दुस्तान में धर्म के नाम पर कई तरह के वहम घुस गए हैं। चमार को खाने को दिया जाएगा, तो दूर से टुकड़ा फेंका जाएगा। ऊंचे से पानी पिलाया जाएगा। इस प्रकार जो मनुष्य दूसरों को अछूत मानते हैं और उनका तिरस्कार करते हैं, उनका तिरस्कार करने वाले दुनिया में दूसरे होते है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२०

अस्पृश्यता

अस्पृश्यता एक वहम है। जब कुत्ते को छूकर नहाना नहीं पड़ता, बिल्ली को छूकर नहाना नहीं पड़ता; तो फिर जो हमारे जैसे मनुष्य है, उन्हें छूकर कैसे अपवित्र हो जाते हैं? हिन्दुओ, जागो! आप भूल कर रहे हैं। अंत्यज मुसलमान या ईसाई बन जाते हैं। वे ईसाई बनकर आते हैं, तो आप उन्हें सलाम करते हैं! इस प्रकार हमारे यहां धर्म का निवास न रहता हो, तो ईश्वर का क्या दोष? जब वह हिन्दू धर्म छोड़ देता है, तब हमारे साथ बैठने लायक हो जाता है। फिर तो वह विधर्मी बनकर विरोधी बन जाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १०५

अस्पृश्यता हिन्दू धर्म पर एक कलंक है। वह धर्म के बहाने चलने वाला एक ढोंग है। हमें इसे मिटाना ही पड़ेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३५

ऊंच-नीच का भेदभाव मानने वाले को राजसत्ता प्राप्त करने का अधिकार ही नही है। जो दूसरों पर सवारी गांठता है, उसके कन्धे पर चढ़ बैठने वाला इस जगत् में कोई न कोई मिल ही जाता है। इसीलिए हमारे इस संगठन में छुआछूत की जरा भी गुंजाइश नहीं होनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३१७

हम लोगों में कहावत है कि जहां गांव होता है, वहां ढेड़-वाड़ा होता है। मगर जहां अच्छा गांव हो वहां कोई वाड़ा नहीं होना चाहिए। ढेड़वाड़े का सच्चा अर्थ तो यह है कि जहां गांव होता है, वहां कमजोर, झूठ बोलने वाले और चोरी करने वाले लोग होते हैं। गांव में ढेड़ हो और जुलाहे का धन्धा करता हो, मजदूरी करता हो, मगर सच बोलता हो तो उसे उत्तम ब्राह्मण समझना चाहिए। और ब्राह्मण गन्दा हो, उसे अक्षर भी न आते हों और अगड़म-बगड़म पढ़कर विवाह आदि क्रियाएं कराता हो, तो वह पाप करता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८३

अस्थिरता

ऐसा तो कोई भाग्यशाली ही होगा, जो पैर अस्थिर होने पर भी आगे बढ़े और न गिरे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४०८

अहिंसा

अहिंसा का बहाना न बनाइए। इसमें अहिंसा का तो नाम-निशान भी नहीं था। अहिंसा को हमने अपनी कायरता को छिपाने का साधन बना लिया था।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५०८

अहिंसा के सिवाय दूसरे किसी ढंग से जीना नहीं हो सकता। नहीं तो जैसे जंगल में शेर-भेड़िये जानवरों को चीरकर खाते हैं, वैसे ही मनुष्य करने लगेंगे और सृष्टि का अन्त हो जाएगा। ऐसे समय संभव है कि हिन्दुस्तान दुनिया को दूसरा ही मार्ग दिखा दे। वही मार्ग हमें अख्तियार करना है, और उसमें आप सबको साथ देना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५२८

आज दुनिया के लोग एक-दूसरे को फाड़ खाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारे यहां तो 'अहिंसा परमो धर्मः' है। अगर हममें यह सच्ची भावना हो, तो हमारे यहां दुःख नहीं होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२१

जो तलवार चलाना जानते हुए भी तलवार को म्यान में रखता है, उसी की अहिंसा सच्ची कही जाएगी। कायरों की अहिंसा का मूल्य ही क्या?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३२०

दुनिया जब तक अहिंसा को स्वीकार नहीं करेगी, तब तक दुनिया में शान्ति कायम नहीं होगी।

—सरदार पटेल की अनुभव-वाणी, पृष्ठ १२०

मनुष्य जंगली भेड़ियों की तरह एक-दूसरे को फाड़ खाने को तैयार है। इस बात की खोजबीन हो रही है कि अपने-अपने मुल्क में ऐसी शक्ति पैदा की जाए, जिससे अनेक शहरों का हवाई जहाजों में से नाश हो सके। जिस ढंग से ये शक्तियां काम कर रही है, उससे वे किसी दिन टकरा जाएंगी। ऐसे समय हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है, जो संसार के सामने दूसरा ही सबक रख रहा है कि मनुष्य को मनुष्य की तरह रहना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३६५

हिन्दुस्तान तलवार से लड़ना नहीं चाहता। दुनिया का इतिहास यह कहता है कि तलवार से लिया हुआ—तलवार से ही चला जाएगा। सत्य से लिया हुआ नहीं जाता। गांधीजी कहते हैं कि हिन्दुस्तान की संस्कृति अलग है। उसे तलवार से स्वतन्त्रता नहीं लेनी है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४५६

मैं सच्चाई के साथ दावा करके कह सकता हूं कि हमने मनसा-वाचा-कर्मणा अहिंसादरायण रहने का प्रयत्न किया है। हमने अपनी कमजोरियों पर विजय पाकर शुद्ध होने की, सच्चे दिल से और निश्चित रूप से कोशिश की है।

सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४७

आज्ञा-पालन

अफसर का हुक्म मानना चाहिए। किसी भी हालत में विनय नहीं छोड़ना चाहिए। कभी कोई हुक्म अन्त:करण के विरुद्ध मालूम हो, तो अफसर के हाथों में इस्तीफा रख दो, परन्तु विनय नहीं छोड़नी चाहिए।

सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२५

सिपाही यह कहें कि हमें लड़ना तो है, मगर वे हथियार नहीं रखने हैं जो सेनापति बतलाता है, तो वह लड़ाई नहीं चल सकती।

सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४५६

आत्मतेज

यह शरीर पंचमहाभूत का बना हुआ है। शरीर बूढ़ा होता है, परन्तु अन्दर की चिंगारी तेज रहनी चाहिए।

सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४४६

आत्म-त्याग की भावना

हममें आत्म-त्याग की भावना न हो, हम निजी महत्त्वाकांक्षाओं को देश के व्यापक हित के सामने गौण समझने को तैयार न हों, तो हमारा धारासभाओं में जाना बेकार है। अगर हम ऊंचे दरजे की हिम्मत, ऊंचे प्रकार की शक्ति, और ऊंचे दरजे की बलिदान की भावना नहीं दिखा सकते, तो हम देश के साथ और हमें मत देने वाले लोगों के साथ न्याय नहीं करेंगे।

सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३२६

आत्मदोष-दर्शन

यदि हमें न्याय प्राप्त करना हो और आजादी लेनी हो, तो अपने खुद के दोष देखना और सुधारना, सहनशीलता, आत्मश्रद्धा और धैर्य रखना, त्याग करना—गरज यह कि जिनसे हमें न्याय लेना है, उनके दोष देखने के बजाय उनके बड़े गुणों और चरित्र का अनुकरण करना सीखना चाहिए।

सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२

आत्मप्रशंसा

अपनी बड़ाई गा-गाकर आदमी स्वयं बड़ा नहीं हो सकता। मनुष्य का छोटापन या बड़प्पन उसके काम, व्यवहार और मनोवृत्ति से आप ही प्रकट हो जाते है। इस प्रकार के लोग अपने स्वार्थ में इतने लिप्त हैं, कि वे समझते हैं कि अपने स्वार्थ को परमार्थ के कपड़े पहनाकर जनता की आंख से छिपा सकते है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० २१५

आत्मबल

आत्मबल के बिना कोई काम नही होता, भले ही अपनी ही सरकार हो। मैं आत्मबल को मानने वाला हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५७१

आत्मरक्षा

युग को पहचानकर आत्मरक्षा करना हमारा फर्ज है। यह समय ऐसा है कि चारों तरफ गुण्डे घूमते है। अगर यह मानने का कारण देंगे कि हम कायर है, तो गुण्डे निर्भय होकर घूमेंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१७

आत्मा

यह शरीर मिट्टी का बना हुआ है, मिट्टी के पुतले की तरह टूट जाने वाला है। लाठियों से सिर के टुकड़े हो जाएगे, मगर

दिल के टुकड़े नहीं होंगे। आत्मा को गोली या लाठी नहीं मार सकती। दिल के भीतर की असली चीज़ को—आत्मा को—कोई हथियार नहीं छू सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २३७

आदमी

जब सरकार अपराध नहीं पकड़ सकती, या जब सरकार किसी को जरूरत से ज्यादा सजा देती है, तब वह आदमी मनुष्य न रहकर राक्षस बन जाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ८६

आदर

ज़मीन-जायदाद चली जाएगी तो फिर पैदा की जा सकेगी, घर-बार चला जाएगा तो फिर खड़ा हो जाएगा, मगर इज्जत चली जाएगी तो फिर से नहीं आयेगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २४१

जो मनुष्य सम्मान प्राप्त करने योग्य होता है, वह हर जगह सम्मान प्राप्त कर लेता है। परन्तु अपने जन्म स्थान में सम्मान प्राप्त करना कठिन है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५००

देश की बेइज्जती हो, इसके बजाय इज्जत वाला व्यापार करने और हिन्दुस्तान के मार्गदर्शक बनने के लिए चाहे जितना नुकसान उठा लीजिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २३४

मनुष्य जितने सम्मान के लायक हो, उतना ही उसका सम्मान करना चाहिए, उससे अधिक नहीं करना चाहिए, नहीं तो उसके नीचे गिरने का डर रहता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४४७

मान-सम्मान किसी के देने से नहीं मिलते, अपनी योग्यतानुसार मिलते है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५६६

हमारे घर में ही हमारी इज्जत न हो, तो विदेश में कहां से होगी ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २०

आधुनिक युवा

आजकल के जवान तो अपने कपड़ो का बोझ नहीं उठा सकते।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०७

आप जाग्रत हो जाइए

आप जाग्रत हो जाइए। चारों तरफ क्या हो रहा है, उसे जानिए। नही जानेंगे तो ठगे जाएंगे। आजकल दुनिया ऐसी बन गई है कि एक स्थान पर होने वाली घटना की जानकारी चौबीस घंटे में सारी दुनिया में हो जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०३

आराम

थका हुआ मनुष्य दौड़ने लगे, तो स्थान पर पहुचने के बजाय जान गंवा बैठता है। ऐसे समय विश्राम लेना और आगे बढ़ने की ताकत जुटाना उसका धर्म हो जाता है। इसके लिए जुल्म सहते-सहते आराम लेने और शक्ति प्राप्त करने का दोहरा प्रयत्न करना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३११

आलस्य

पुरुषार्थ कठिनाइयां पार करने में है। परन्तु मनुष्य ज्यादातर आलसी होता है। और आलस्य शरीर का ही नहीं होता, मन का भी होता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५६१

आवश्यकता

हमें चार चीजों की जरूरत है—हवा, पानी, रोटी और कपड़ा। दो चीजें भगवान ने मुफ्त दी हैं। और जैसे रोटी घर में तैयार होती है, वैसे ही कपड़ा भी हमारे घर में बनना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१६

इन्कलाब

इन्कलाब तो किया जा सकता है, मगर उस इन्कलाब से समाज को आघात नहीं पहुंचना चाहिए। उससे हिंसा न हो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०७

इतिहास से शिक्षा लें

मैं आपको यह कहने के लिए आया हूं कि हम हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास से शिक्षा लें। अपनी जिन गलतियों के कारण हम इतनी सदियों तक गुलाम रहे, जिनसे हमें शर्मिन्दा होना पड़ा, उनसे अब हम बचने की कोशिश करें। आज हम आजाद हुए हैं, और अब हिन्दुस्तान के सुपुत्रों का यह कर्तव्य है कि वे अपने देश को फिर कभी गुलाम न बनने दें।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १७

ईर्ष्या

पड़ोसी का महल देखकर अपनी झोंपड़ी तोड़ डालने वाला महल तो बना नहीं सकता, झोंपड़ी भी खो बैठता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७६

ईश्वर

ईश्वर का नाम ही (रामबाण) दवा है। दूसरी सब दवाएं बेकार हैं।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११२

ईश्वर की गति अकल और अगम्य है। अतः उत्तम मार्ग यही है कि ईश्वर पर श्रद्धा रखकर हम अपना कर्तव्य करते रहें। और सब बातें बेकार हैं। मनुष्य का सोचा कुछ होता नहीं।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११५

ईश्वर जब तक हमें इस संसार में रखे, तब तक हम अपना कर्तव्य करते रहें, और जानेवालों का शोक न करें। तभी कहा जाएगा कि हमने इस क्षणभर में नष्ट हो जाने वाले संसार का सार समझ लिया है। जब तक हमें जीना है तब तक हमारा शरीर चंगा रहे, और हम लोगों के भले का काम कर सकें, तो जीवन में हमें पूरा रस मिलना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० १११

जीवन की डोर तो ईश्वर के हाथ में है, इसलिए चिन्ता की कोई बात हो ही नहीं सकती।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ १११

मनुष्य में एक चिंगारी मौजूद है। उसे जगत का और जगत के सर्जनहार का ज्ञान होना चाहिए। उसका ज्ञान हो जाए, तो एक आदमी ऊंचा और एक नीचा मालूम नहीं हो सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ ४२०

उत्तम खेती

"उत्तम खेती और अधम चाकरी।" खेती सबसे अच्छी है और नौकरी सबसे बुरी। खेती में न कोई खुशामद करनी पड़ती है न पाप। किसान अपने लिए मेहनत करके धरती से अनाज पैदा करते है, खुद खाते हैं और दूसरों को खिलाते हैं। किसान को ही अन्नदाता कहते हैं, जो पाप नहीं करता।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८५

उत्पादन करो

हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि पहले उत्पादन करो और फिर समानता से बांटो। लेकिन आज दौलत पैदा करने से पहले ही लोग लड़ने लगते हैं।

— भारत की एकता का निर्माण, पृ० १०१

उत्साह

उतावले उत्साह से बड़ा परिणाम निकलने की आशा नहीं रखनी चाहिए। उत्साह में आए हुए कार्यकर्ताओं का उत्साह मन्द पड़ने पर वह भाररूप बन सकता है। इसलिए इस विषय के बारे में हर तरफ से पूरा विचार करके निश्चय करना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ६३

ऊंच-नीच

अब जात-पांत के, ऊंच-नीच, सम्प्रदायों के भेद-भाव भूलकर सब एक हो जाइए। मेल रखिए और निडर बनिए। घर में बैठकर काम करने का समय नहीं है। बीती हुई घड़ियां ज्योतिषी भी नहीं देखता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०३

मैं जात-बिरादरी को भूल चुका हूं। सारा हिन्दुस्तान मेरा गांव है। सभी जातियों के लोग मेरे भाईबन्द है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५००

व्यक्तियों के अच्छे जीवन से ही सामाजिक जीवन ऊंचा होता है। जिसके पास कम शक्ति हो, शक्तिवालों को उसे ऊंचा उठाना चाहिए। समाज में से ऊंच-नीच के भेद मिटा देने चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५७३

सभी जातियां एक पिता की संतान हैं। मनुष्य के मर जाने पर—ब्राह्मण का चोला हो, या चमार का, उसे कोई नहीं छू सकता। प्राण तो पवन के साथ मिल जाते हैं, और यह चोला रह जाता है। इसलिए ऊंच-नीच का भेद क्यों मानते हैं?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०१

हमें किसी को ऊंच-नीच नहीं मानना चाहिए। गांव में रहने वाले सब—अठारहों वर्ण—एक ईश्वर की संतान है।

—*सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४८३*

एकता

अब सब सावधान रहें, पूरी तरह जाग्रत रहें और गाफिल न रहें। सरकार एक भी उपाय बाकी नही छोड़ेगी, आप में फूट डालेगी, आपस में झगड़े कराएगी, कुछ न कुछ फितूर करेगी; मगर आप अपने तमाम निजी और गांवों के झगड़ों को, अभी लड़ाई के दिनों में कुएं में डाल दीजिए; लड़ाई खतम होने तक ऐसी हरएक बात को भूल जाइए; बाद में चाहें तो सब याद करके लड़ लेना। और चाहें तो इस तरह बाद में लड़ने के निश्चय के दस्तावेज लिखकर, पेटियों मे संभालकर रख लीजिए। मगर अभी तो बाप दादों का बैर भी भूल जाएं। जन्मभर जिसके साथ न बोले हों और अबोला रखा हो, उसके साथ भी आज बोलिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४१

एका अगर हममें हो जाए, तो सरकार अपने आप खतम हो जाए। सरकार हमें बन्दूक दिखाकर अदालतों में नही बुलाती। हमीं माया-जाल में फंसकर अदालतों में दौड़े जाते है। हम गांव में से ही दो आदमी ऐसे अच्छे ढूंढ निकालें, जिनके द्वारा हमारा न्याय हो सके।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २८

जब जनता एक हो जाती है, तब उसके सामने ज़ालिम से ज़ालिम हुकूमत भी नहीं टिक सकती।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १३८

तुम्हारे दिल में यह भावना पैदा हो कि तुम सब सगे भाई-बहन हो, तभी एक दल के कहलाओगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२५

तोप-बन्दूक की लड़ाई लड़नेवाले भी एकमत से न लड़ें, तो लड़ाई हार जाएं। तब हमें तो नैतिक बल से लड़ना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४५१

मुहब्बत से संगठन करना और समय की मांग को समझना चाहिए। हमें एकत्रित होके लड़ना है, अपने स्थान (देश) का रक्षण करना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१४

हमारे देश के कुछ हिस्सों ने हमसे अलग होने का और अपनी निजी सरकार बनाने का जो फैसला किया है, उससे हममें से बहुतों को बड़ी जबर्दस्त निराशा और दुःख हुआ है। लेकिन हमारा विश्वास है कि इस विधान अलगाव के बावजूद, हम लोगों के बीच जो सांस्कृतिक एकता का मूल भाव है वह हमारे पारस्परिक हितों में बना रहेगा, और खासकर उनसे जो हमारे अभिन्न अंग है, और जिनके आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक सम्बन्ध हमारे साथ अटूट है। अतएव इन रियासतों को, शेष भारत के साथ अपनी पारस्परिक मैत्री और सहयोग का सम्बन्ध बनाए रखना चाहिए। भारत के साथ-साथ इन रियासतों की सुरक्षा का तकाजा है, कि देश के विभिन्न भागों के बीच एकता और सहयोग कायम रहे।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ११

हमें अपना कर्तव्य पूरा करना हो, तो हम लोगों में एकता होनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३२६

हमें सबके साथ हिल-मिल कर रहना सीखना चाहिए। सबके स्वभाव एक-से नहीं होते; और हमारा स्वभाव दूसरों को पसन्द न हो, तो भी हमें प्रयत्न करके सबके साथ मेल साधना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११६

एक ओर रहो

सच्ची बात तो यह है कि दो घोड़ों पर सवारी नहीं हो सकती, एक घोड़े पर ही सवारी होगी। अपना घोड़ा पसन्द कर लो!

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ७०

कठिनाइयां

कठिनाइयां दूर करने का प्रयत्न हो न हो, तो कठिनाइयां मिटें कैसे? मुश्किलें दीखते ही हाथ-पैर बांधकर बैठ जाना, और उन्हें दूर करने की कोई कोशिश न करना निरी कायरता है।

सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५६१

कमजोर शासक

सत्ता के सामने सयानापन बेकार है। मोम का हाकिम लोहे के चने चबवाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ६१

कम्युनिस्ट

जो अपने को कम्युनिस्ट कहते हैं, उनके प्रति मुझे प्रेम है, आदर है। मगर उनमें युद्ध में ताकत होगी, तब उन्हें दुनिया के मजदूरों का आदर प्राप्त होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ०३६७

मुल्क में गड़बड़ कराओ, अशान्ति पैदा करो, और रेल की पटरी उखाड़ दो। इस प्रकार की हड़ताल कराओ कि राज-शासन चले ही नहीं। यह कम्युनिस्टों का काम है। तब हमने सोच लिया कि इन कम्युनिस्टों के साथ ट्रेड-यूनियन में बैठना मुल्क के लिए बहुत बड़ी खतरनाक चीज है। इसलिए हमने अलग रहने का फैसला किया।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १६३

हमें यहां एक और बात की फिक्र है, जिस बात ने हैदराबाद को सारी दुनिया में मशहूर कर दिया है। वहां यहां का नलगंज एरिया है, जिसमें कम्युनिस्ट लोग कोई-कोई काम करते हैं। वहां जो लोग फिसाद कर रहे हैं, वह सब तो कम्युनिस्ट नहीं हैं; क्योंकि उनको लूट-पाट का मौका मिल गया है। लेकिन उसको जोड़ने वाले हैं कम्युनिस्ट लोग। यदि उनके दिल में यह हो कि हिन्दुस्तान में चीन की तरह साम्यवादी पंथ बने, तो वे लोग पागल हैं। मैं कहना चाहता हूं जिस प्रकार ये लोग कर रहे हैं, उस प्रकार तो चाईना वालों ने भी नहीं किया। मैं नहीं समझता हूं कि दुनिया में कोई भी कम्युनिस्ट वैसा पागलपन करेगा, जैसाकि हिन्दुस्तान में किया जा रहा है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ९०

कर्तव्य

कर्तव्यनिष्ठ पुरुष कभी निराश नहीं होता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७८

जब तक जीवित रहें तब तक हम अपना कर्तव्य करते रहें, तो उसमें हमें पूरा आनन्द मिलना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० १११

बहुत समय से भारत गुलामी में पड़ा था, और आज हमें अपने जीवन में भारत को स्वतन्त्र देखने का मौका मिला है। भारत को स्वतन्त्र बनाने में जो मुसीबतें आई हैं, जो संघर्ष करना पड़ा, जो दुःख सहने पड़े वह सब आपने देखे हैं। लेकिन जब इतनी बड़ी क्रांति होती है, तो उसमें मुसीबतें आया ही करती हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमने बहुत-सी मुसीबतों को पार कर लिया है, फिर भी बहुत-सी कठिनाइयां हमारे सामने है। और यदि आज हम गलती करेंगे, तो हम को बड़ा नुकसान होगा। ऐसा हुआ तो भविष्य की प्रजा और इतिहास हमारे नाम पर बुराई की छाप लगाएगे। इसलिए हमें सावधानी से अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए तैयार होना है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १७

मनुष्य का सोचा कुछ नही होता, ईश्वर का ही सोचा होता है—ऐसा समझ कर हमें ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, अपना कर्तव्य करते रहना चाहिए, और जिस समय जो हो जाए उसे खुशी से स्वीकार करना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११६

यह सच है कि पानी में तैरने वाले ही डूबते है, किनारे खड़े रहने वाले नही। मगर ऐसे लोग तैरना भी नही सीखते।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७५

राज्य अपना धर्म पालन करे या न करे, मगर हमें तो अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१७

हमें जहा से खाने को मिलता है, उस स्थान के प्रति भी हमारा कुछ कर्तव्य है। जिस माता के स्तनों का दूध पीते हैं, उसके प्रति अपना धर्मपालन करना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३६६

कवायद

कवायाद उपयोगी चीज है। जिस आदमी के दोनों पैर सीधे नहीं पड़ते, वह क्या सेवा करेगा? मगर इसकी तह में जो शिक्षा है, उसे समझ लो। वह जीवन का पाथेय है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२

कष्ट

कष्ट तो उसे दिया जा सकता है, जिसकी आत्मा—जिसका मन दुर्बल है। जो देश के लिए सिर हथेली में लिए फिरते हैं "सिर जावे तो जावे, पर आजादी घर आवे" का मन्त्र जपते हैं, उन्हें सरकार की रोटियां क्या दुःख दे सकती है?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २३६

जैसे प्रसव-वेदना के बाद राहत मिलती है उसी तरह ज्यादती के बाद ही फतह होती है, आराम होता है। यहां सारे देश की मुक्ति का सवाल है। सरकार जुल्म करेगी, तभी कुछ होगा। मैं तो आज हूं, कल नहीं। मगर मैं यह चाहता हूं कि किसान नामर्द न रहे। वे तैयार न होंगे, तो हिन्दुस्तान का नाश हो जाएगा। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२६

बहादुर आदमियों का स्वेच्छा से किया हुआ कष्ट-सहन ही फलदायक हो सकता है, कायर और लाचार मनुष्यों का मजबूर होकर उठाया हुआ कष्ट नहीं। साथ ही वह समझपूर्वक होना चाहिए। यों तो हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग तकलीफ बरदाश्त करते हैं, और अज्ञान में मर जाते हैं; मगर उनके उस कष्ट-सहन से न उनका बोझा हलका होता है न और किसी का। जब मनुष्य के सामने ऐश-आराम और त्याग, इन दो के बीच चुनाव करने का मौका आए, और वह विचारपूर्वक एक को छोड़कर दूसरा स्वीकार करे, तो कहा जाएगा कि उसने बलिदान दिया

या तप किया। समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए इससे ज्यादा ताकतवर कोई और हथियार नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २६६

कांग्रेस

आपको समझ लेना चाहिए कि जिस दिन कांग्रेस में मुख्य आदमी नालायक होंगे, उस दिन भारत के भाग्य सो जाएंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३३६

काम

अब जमाना बदल गया है। अब हमें इंसाफ से और वफादारी से काम करना है। जितना पैसा हम लेते हैं, उसको हराम नहीं करना है। हमें पूरा काम करना है। न हो सके तो हट जाएं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५०

काम करने में तो मजा ही तब आता है, जब उसमें मुसीबत होती है। मुसीबत में काम करना बहादुरों का काम है, मर्दों का काम है। कायर तो मुसीबतों से डरते हैं। लेकिन हम कायर नहीं हैं, हमें मुसीबतों से डरना नहीं चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १३८

जब खूब जोश के साथ लड़ना होता है, तब आदमी मिल जाते हैं। नशे की खुमारी में भी आदमी मिल जाते हैं। परन्तु संयम रखकर, नीरस लगनेवाला काम करने के लिए तो थोड़े से ही बहादुर मिलते हैं। बाकी सब भाग जाते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०२

जो काम कल करने का है, उसकी बातों में ही आज का काम बिगड़ जाएगा। और आज के काम के बिना कल का

काम नहीं होगा। हम अपने फर्ज से चूकेंगे। आज का काम कीजिए, तो कल का काम अपने आप हो जाएगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३१६

कानून

कानून का केवल शब्दार्थ करके माने जानेवाले अपराधों के लिए गैरमामूली, सख्त, शेखी-भरी घोषणाओं की गर्जना, और सरकार के खांड़े की खड़बड़ाहट से लोगों में उपहास के सिवाय और कुछ उत्पन्न नहीं होता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ७२

कायरता

आपकी कायरता का बोझा दूसरे पड़ोसियों पर पड़ता है, और उसका असर दूसरों पर भी होता है। इसलिए आपको मजबूत बनना चाहिए। और ऐसा हो तो पड़ोसियों का काम सरल बन जाएगा। यह समझ लेना चाहिए कि अब कायरता से काम नहीं चलेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३८२

जब जानवर भी तंग आकर सींग उठाता है, तब मनुष्य अपनी बहन-बेटी पर खतरा आने से भाग जाए, तो वह जानवर से भी बदतर कहलाएगा। इसलिए हमें अपने में से कायरता निकाल देनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५६७

बहुत से यह कहते है कि गांधीजी ने हिन्दू-मुसलमानों की एकता की बात कहकर फंसा दिया। मैं कहता हूं कि जो मुसलमानों के हाथों मार खाते हैं, वे अपनी कायरता छिपाने का बहाना ढूंढ़ने के लिए गांधीजी का नाम लेते हैं। गांधीजी ने किसी को भगाने की या कायरता की सलाह नहीं दी। उन्होंने तो सीना तानकर मर जाने की या दुश्मन का मुकाबला करके

उसे मारने की बात कही है। आपमें ताकत हो, तो लड़कर निपट लीजिए। हां पीठ पीछे से किसी को मारना तो बहादुरी का काम नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १६६

मैं कायरता का कट्टर शत्रु हूं। कायर मनुष्यों का साथ करने के लिए मैं कभी तैयार नहीं हो सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१७

मैं मानता हूं कि जो प्रजा थप्पड़ खाकर बैठी रहती है, वह हिन्दुस्तान के लिए एक बोझा है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३८२

काल का चक्र

काल का चक्र एक क्षण के लिए भी रुकता नहीं; वह नियमित रूप से चला ही करता है। इस प्रकार वह करोड़ों वर्षों से चलता आया है, और आगे भी इसी तरह चलता रहेगा। इस बात का विचार करने पर हमें अपनी अल्पता का ख्याल होता है। फिर भी वह कैसी विचित्र माया है, कि दुनिया के बड़े-बड़े आदमी रात-दिन झूठे अभिमान में फंसकर—"सब कुछ हम ही करते हैं" ऐसा मानते हैं, और भयंकर संहार के में रचे-पचे रहते हैं।

—*सरदार की अनुभव-वाणी*, पृ० ११७

किसान

अगर हम अपने गरीब गुलामों जैसे किसानों को मनुष्य बनाना चाहते हों, तो उनमें स्वेच्छा से आत्मत्याग और कष्ट सहन करने की आदत डालनी चाहिए। उनके साथ जीता-जागता सम्पर्क साधे बिना आप ऐसा नहीं कर सकते।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १९५

आप तो जगत के अन्नदाता हैं। आप जैसा पवित्र दुनिया में और कौन है ? मैं यह नहीं कहता कि आप निर्दोष हैं, मगर यदि कोई संसार में कम से कम पापी मनुष्य है, जो अपने पसीने की कमाई खाता हो, तो वह आप हैं। और आप तो अपने पसीने की कमाई भी पूरी खाए बिना, औरों के पेट भरते हैं। आप न हों, तो दुनिया का घड़ीभर भी काम नहीं चल सकता। और दुनिया का न चले, तो जमींदार का तो चल ही कैसे सकता है ? —सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१०

इस धरती पर अगर किसी को सीना तानकर चलने का अधिकार हो, तो वह धरती से धन-धान्य पैदा करने वाले किसान को ही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४७

कष्ट तो आप कहां नहीं उठाते ? किसान के बराबर सरदी, गरमी, मेह और मच्छर-पिस्सू वगैरा का उपद्रव कौन सहन करता है ? सरकार इससे ज्यादा दुःख और क्या दे सकती है ? मगर मैं चाहता हूं कि आप समझकर दुःख सहें। अर्थात् जुल्म का विरोध करना सीखें। डरकर उससे स्वीकार न करें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४५

किसान डरकर दुःख उठाए और जालिम की लातें खाए, इससे मुझे शर्म आती है। और मैं सोचता हूं कि किसानों को गरीब और कमजोर न रहने देकर सीधे खड़े करूं, और ऊंचा सिर करके चलनेवाले बना दूं। इतना करके मरूंगा, तो अपना जीवन सफल मानूंगा। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४७

किसान भिखारी बनना नहीं चाहता। अगर उसे मजदूरी मिलेगी, तो वह भिक्षुक की तरह रोटी लेने से इन्कार कर देगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १२३

किसान ही राज्य के पालनकर्ता हैं। ऐसे किसानों की बरबादी करनेवाला राज्य, अनजाने राज्य की इमारत की जड़ें खोदता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७४

किसानों को मैंने एक ही पाठ पढ़ाया है कि हम संसार के अन्नदाता है। हमें किसी से डरने को जरूरत नहीं। डर रखो तो एक ईश्वर का रखो। ईश्वर के सामने सबको जवाब देना पड़ेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४४७

किसानों में गांव-गांव लड़ाई-झगड़े और फूट है। इसे किसान खुद न समझेंगे तो और कौन समझाएगा? हमारा काम यह है कि हम अपने मतभेदों को इतना बड़ा रूप न दें, जिससे लड़के आपस में लड़ मरें। एक-दूसरे की चुगली व शिकायत नहीं करनी चाहिए। मेल रखनेवाले किसानों को कोई नहीं सता सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०५

किसानों में स्वाभिमान की भावना जाग्रत हुए बिना, उनका कभी कल्याण नहीं होगा। किसानों में इस मान्यता ने घर कर लिया है कि दूसरे लोग उनसे ज्यादा भाग्यशाली और बड़े हैं, और वे खुद कमनसीब और दुर्बल हैं। जो किसान कम से कम पाप करता है, पसीना बहाकर अपना पेट भरता है, जिसे दूसरे पर निर्भर रहने की जरा भी जरूरत नही, उल्टे जिस पर सबका आधार है, वह अपने को निराधार और हल्का मानने लग गया है। इसलिए उसकी शक्ति दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३१३

जगत को पालनेवाले किसानों को तो जगत का अन्नदाता मानना चाहिए। उनका स्थान सबसे पहला समझना चाहिए। इसके बजाय दूसरों का पोषण करनेवाले इस किसान को अपना पेट भरने के लिए तरसना पड़ता है। इस राज्य में उसे सभी

बेचारा, गरीब, कंगाल और मूर्ख कहकर ठुकराते हैं। इस राज्य में उसकी गिनती मनुष्यों में नहीं होती है। उसके दुःखों की फरियाद भी कोई नहीं सुनता, और न उसकी बात ही कोई सच मानता है। हमारे किसानों को जब स्वाभिमान का खयाल होगा और राजतंत्र में उचित स्थान मिलेगा, तभी उनके इन दुःखों का अन्त होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३०८

जहां किसान सुखी नहीं हैं, वहां राज्य भी सुखी नहीं है, और साहूकार भी सुखी नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४८

जितना कष्ट किसान सहता है, उतना कोई नहीं सहता। मगर उसका सहन किया हुआ सब कुछ मिट्टी में मिल जाता है। ऊपर से उसके भाग्य को दोष दिया जाता है, और वह दया, तिरस्कार और मजाक का पात्र माना जाता है। जितना दुःख वह बिना समझे उठाता है, उससे आधा भी अपने हकों की रक्षा के लिए या न्याय की प्राप्ति की इच्छा से बुद्धिपूर्वक उठाए, तो उसके उठाए हुए दुःख तपस्या के रूप में फलदायक साबित हों और उसमें रही हुई इन्सानियत को जगाकर उसे स्वाभिमान का भान कराएं। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३१३

जिस किसान की छाया में सब रहते हों, समा जाते हों, वह सच्चा किसान है। अठारहों वर्ण किसान के पीछे रहते थे, इसका कारण था उसका प्रेम। अठारहों जातियां एक कुटुम्ब, एक शरीर बनकर रहतीं थीं। उस तरह की व्यवस्था के लिए हमें अपने हृदयों में परिवर्तन करना चाहिए।' प्रेम रखना चाहिए। हम सबका न्याय करनेवाला एक ईश्वर है। इसलिए किसान यदि यह बात समझ लें, तो ही सुखी होंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०५

जिस दिन सरकारी दफ्तर में किसान इज्जत और आबरू-वाला माना जाएगा, उसी दिन उसकी तकदीर पलटेगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४५

जो किसान अपने बैलों और मवेशियों को सुखी रखता है, वह अपने नौकरों को दुःख दे, तो वह मूर्ख है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३५४

जो किसान मूसलाधार बरसात में काम करता है, कीचड़ में खेती करता है, मारकने बैलों से काम लेता है और सर्दी-गरमी सहता है, उसे डर किसका?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४७

दरिद्रनारायण के दर्शन करने हों, तो किसानों के झोंपड़ों में जाओ।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १६१

धर्म पालन करने वाला किसान धीरज से प्रतिज्ञा का पालन करता है, और शान्ति के दुःख सहन करता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५

मैं किसानों को भिखारी बनते नहीं देखना चाहता। दूसरों की मेहरबानी से जो कुछ मिल जाए, उसे लेकर जीने की इच्छा की अपेक्षा अपने हक के लिए मर मिटना मैं ज्यादा पसन्द करता हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३१४

मैं तुम्हें कुदरत का कानून बताना चाहता हूं। किसान होने के कारण तुम सब जानते हो, कि जब थोड़े से किसी जमीन में सड़कर और गल कर नष्ट होते हैं, तब खेत में ढेरों अनाज पैदा होता है। आप मरे बिना स्वर्ग मिल सकता हो, तो ही धारासभा में प्रस्ताव पास करने से हमें मुक्ति मिल सकती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २८

संसार का अन्नदाता किसान है। वह पैदा न करे, तो हम शहरों में रहने वाले भूखों मर जाएं। जो दुनिया का पालन करता है, वही कायर गिना जाता है। उसे अपनी शक्ति का भान कराना चाहिए। इसी प्रकार मजदूरों को भी स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाना चाहिए।

— सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३६७

किसान और मजदूर

किसान और मजदूर में वैरभाव बढ़ने से, इस जमीन की पैदावार बढ़ने के बजाय घट जाएगी। किसान और मजदूर के बीच मीठा सम्बन्ध होना चाहिए। मजदूर को जानवर नहीं समझना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०५

सारी दुनिया किसान के आधार पर टिकी हुई है। दुनिया का आधार किसान और मजदूर पर है। फिर भी सबसे ज्यादा जुल्म कोई सहता है, तो ये दोनों ही सहते हैं। क्योंकि ये दोनों बेजुबान होकर अत्याचार सहन करते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४७

किसान और हलपति की जोड़ी

जैसे एक गाड़ी में दो बैल जुते हुए रहते हैं, वैसे किसान और हलपति दोनों की जोड़ी है। ये दोनों जिस दिन लड़ने लगेंगे, उस दिन खेती नष्ट हो जाएगी, और दोनों के भूखों मरने की नौबत आ जाएगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३५३

किसान की जमीन

किसान की जमीन तो कच्चा पारा है। जो इसे इस हालत में लेगा, उसके बदन से वह फूट निकलेगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४४

कुर्बानी का घमंड न करें

आज यदि हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हुआ है, तो हमारी कुर्बानी से हुआ है, ऐसा कोई गर्व न करे। हममें से बहुत से लोग ऐसे हैं, जो समझते हैं कि हमने बहुत कुर्बानी की। की होगी, ठीक है। लेकिन जो नई कुर्बानी करनी चाहिए, वह कुर्बानी न करो, तो पिछली की गई कुर्बानी भी व्यर्थ हो जाती है। जेल जाने से कुर्बानी नहीं होती। या हमारी कोई मिल्कियत छिन गई, उससे कुर्बानी नहीं होती। कुर्बानी होती है, कड़वा घूंट पीने से। हम मान-अपमान भी सहन कर जाएं, और सच्चे दिल से गरीबों की सेवा करते जाएं, तो कुर्बानी उसी में है। उसी रास्ते पर चलने से हमारी असली इज्जत होगी।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५४-५५

कुलीन

जो सेवा करता है और जो चरित्रवान है, वही सच्चा कुलीन है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० १२३

कुलीनता

कुलीनता बाप-दादों के देने से नहीं मिलती। जो चरित्र-वान, सज्जन और नीतिवान है, वह चाहे जैसे कुलीन को भी वश में कर सकता है। नीचा खानदान या छोटा खानदान, ऊंचा खानदान या बड़ा खानदान, ये सब बातें भूल जाइए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०१

खादी

अगर हिन्दुस्तान में रहने वाले करोड़ों लोगों के प्रतिनिधि बनना हो, तो खादी के बिना काम नहीं चलेगा। अगर उनके

प्रतिनिधि बनना हो, स्वराज्य लेना हो, तो हाथ का बुना और हाथ का कता कपड़ा पहनना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४५६

हिन्दुस्तान की आजादी इस खादी में ही है। हिन्दुस्तान की सभ्यता खादी में ही है। हिन्दुस्तान में जिसे हम परमधर्म मानते हैं, वह अहिंसा खादी में ही है और हिन्दुस्तान के किसानों का, जिनके लिए आप इतनी भावना दिखाते है, कल्याण भी खादी में ही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २४३

खुशामद

अगर राज्य की प्रजा को दुःखी बनाने वाले कोई हैं, तो वे खुशामदी लोग ही हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३८४

इस दुनिया में पछाड़े बगैर कोई नहीं मानता। जिसके पास सत्ता है, वह उसे प्रार्थना करने पर नहीं छोड़ता। उससे तो कान पकड़कर ले लेनी चाहिए, क्योंकि वह हमारी सम्पत्ति है। आप खुशामद छोड़ दीजिए। उसके बराबर कोई जहरीला रोग नहीं है। खुशामद राजद्रोह है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३८४

इस दुनिया में सत्ता के पीछे लगा हुआ सबसे बड़ा रोग कोई हो सकता है, तो वह खुशामद है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७३

जिन्हें खुशामद प्रिय होती है, उन्हें सच्ची बात मीठी भाषा में कही जाय तो भी कड़वी लगती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४६

सभ्यता-शिष्टाचार और खुशामद में फर्क करने की आदत डालिए। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८१

गंतव्य

हमें ऊपर की मंजिल पर जाना है, मगर आज चढ़ने का प्रयत्न करने के बजाय इस बात की तकरार क्यों करते हैं कि आधी दूर तक सीढ़ियां चढ़ना है या ठेठ तक चढ़ना है ? आधी दूर तक तो चढ़िए, फिर जिसे आगे जाना हो उसे जाने दीजिए। हमारे अधीर नौजवानों की अधीरता मुझे अच्छी लगती है। मगर क्या ही अच्छा हो, यदि वे यही अधीरता काम में भी दिखलाएं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १६७

गति

हम चीटी की चाल से सब काम करें, तो काम नहीं चल सकता। अगर हमें घोड़े की रफ्तार से काम करना हो, तो चरित्रवाले आदमी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०८

गम

हमें गम खाना सीखना चाहिए। मान-अपमान सहन करने की आदत डालनी चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११०

गरीब

जो गरीब लोग आज हमारे सामने झुक जाते हैं, उनको सिखाना है कि इन्सान को इन्सान के सामने नहीं झुकना, खुदा के सामने, सिर्फ ईश्वर के सामने झुकना है। हमें उनको अपना भाई, अपना सहोदर बनाना है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५४

गरीबी

गरीबी से मनुष्य जितना बनता है, उतना अमीरी में नहीं बनता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५६७

गलती न करें

अपने जीवन में हम जो कुछ कर पाते हैं, वह कोई बड़ी बात नहीं, जिसके लिए हम मगरूरी ले सकें। क्योंकि जो कुछ हम करते हैं, उसमें हमारा क्या भाग है? असल में करानेवाला तो खुदा है। इंसान तो खाली एक हथियार बनता है। इंसान यदि जागता हो—तो उसका यह धर्म हो जाता है कि हमेशा प्रार्थना करे, और उससे कोई गलती न हो।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८२

गांधीजी

ब्रिटिश सिंह को आज तक हिन्दुस्तान ने अनेक शिकार भेंट किए है, किन्तु ऐसा पवित्र शिकार मिलने का सौभाग्य तो उसे यह पहला ही है। इसे पचाना कोई आसान बात नहीं है। अप्रैल, सन् १९१९ में पहली बार उसने इस शिकार के लिए अपना पंजा फैलाया था—परन्तु जैसा फैलाया, वैसा ही छोड़ देना पड़ा था। इस बार तो सिंह को हमने अच्छी तरह छेड़ा है। उसकी आंखें गुस्से से विकराल हैं। कुछ दिन से वह अपने अयाल को फड़फड़ा रहा है। परन्तु हिन्दुस्तान के ऋषि-मुनियों ने अपने तपोबल से सैकड़ों विकराल सिंहों को भेड़ों से हीन बना दिया है। इसी तरह यह सिंह जल्दी या देर से—इस महापुरुष के तपोबल के सामने बकरी बनकर रहेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४६

गुजरात

गुजरात के पास पैसा है, व्यवस्था-शक्ति है और विवेक है। मगर गुजरात के पास काम करने वालों यानि स्वयंसेवकों की कमी है। जिन्हें देश की लगन हो, उन तमाम गुजरातियों को अपना एक-एक लड़का देशसेवा के काम में दे देना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ८६

गुजरात को अहिंसात्मक असहयोग पर अकालियों से कम श्रद्धा तो हरगिज नहीं होगी। गुजरात इस सिद्धान्त को जन्म देने वाला है। 'अहिंसा परमो धर्मः' जैन धर्म की जड़ है। गुजरात जैन धर्म का मुख्य केन्द्र है। वहां अहिंसा के बारे में भारी श्रद्धा होना स्वाभाविक है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५६

गुजराती

गांधीजी के पीछे पागल होने वाले, उनकी मौजूदगी में उनकी जय बोलने वाले गुजरातियो, तुम जाग्रत हो जाओ! गुजरात की लाज रखनी हो तो आलस्य छोड़ दो। नहीं तो समय चला जाएगा और बात रह जाएगी—कि जिसे दुनिया ने पहचाना, उस महात्मा गांधी को एक गुजरात ने नहीं पहचाना।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५६

मैं गुजरात के लोगों को तेजस्वी देखना चाहता हूं। कोई यह न कह सके कि कंगाल या बुरी वणिक् वृत्ति का गुजराती क्या कर सकता है? गुजराती भी उतना ही बहादुर बन सकता है, जितना देश का और कोई आदमी बन सकता है। उसे सिर्फ अपने सम्मान की खातिर मरना सीखना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४६

मैं गुजरातियों से कहता हूं कि शरीर से भले ही आप दुर्बल हों, मगर दिल शेर का-सा रखिए, स्वाभिमान की खातिर मरने की ताकत हृदय में रखिए। कोई आपको आपस में लड़ा न सके इतनी समझ रखिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४६

गुरूभक्ति

महाभारत में द्रोणाचार्य का एक भील शिष्य था, जिसने द्रोणाचार्य के मुंह से एक भी उपदेश नहीं सुना था। परन्तु वह गुरु का मिट्टी का पुतला बनाकर उसका पूजन करता था—और उसके पैरों पड़कर द्रोणाचार्य की विद्या सीख गया। जितनी विद्या उसने प्राप्त की थी, उतनी द्रोणाचार्य के और किसी शिष्य ने प्राप्त नहीं की थी। इसका क्या कारण है? कारण यह है कि उसमें गुरु के प्रति भक्ति थी, श्रद्धा थी, उसका दिल साफ था, और उसमें योग्यता थी। आप मुझे जिनका शिष्य कहते हैं, वे गुरु तो हमेशा मेरे पास मोजूद हैं। इसमें मुझे कोई शंका नहीं कि उनका पट्ट शिष्य तो क्या, बहुत से शिष्यों में से एक शिष्य होने लायक योग्यता भी मुझमें नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५६

गुलाम/गुलामी

अगर देश से गुलामी मिटानी है, तो जो सबसे ज्यादा गुलाम हैं, उन्हीं को पहले सुखी करना पड़ेगा। शरीर में फोड़ा हो जाए, तो पहले उसे काटकर निकाल दिया जाय, तभी शरीर सुखी हो सकता है। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४४

आप जमींदार के गुलाम किसलिए बनते हैं? उसके अधीन क्यों होते हैं? वह आपका गुलाम बने, आपके अधीन रहे। आप सुख से खाना सीखिए, अपना अन्न पैदा कीजिए। पहले चांदी जैसी कपास पैदा करते थे, अब भी संन्यासी को शोभा देनेवाले रंग की कोकट कपास पैदा करते हो। वह कपास पैदा करके अपने कपड़े बनाइए। यह अन्न और वस्त्र पैदा करके, अपना पेट भर के और अपनी लाज ढककर, बाद में जमींदार को देने की बात कीजिए। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१२

ऐक आदमी दूसरे को गुलाम रखे, यह एक अपराध है। रखने वाला तो अपराधी है ही, रहनेवाला भी अपराधी है। जो लोग गुलामी को पसन्द करने लगे हैं, उनसे गुलामी छुड़ाना कठिन है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४१

गुलाम आदमी को पता नहीं चलता कि स्वतंत्र रूप में कैसे काम किया जाता है। गुलामी का भान हो जाय, तो वह सत्ता से इन्कार कर देगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५२४

गुलामी और अराजकता—दोनों में से अराजकता को चुनना अच्छा है। अराजकता के बाद भी स्वतंत्र हिन्दुस्तान खड़ा हो जाएगा। मगर हमेशा के लिए गुलामी को स्वीकार करनेवाला हिन्दुस्तान कभी खड़ा नहीं होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५२६

गुलामी ऐसी चीज है, जो लम्बे अरसे के बाद मीठी लगने लगती है। गुलाम को छूटना अच्छा नहीं लगता। पिंजड़े के पक्षी की तरह, उसमें से स्वतंत्रता की भावना चली जाती है। परन्तु गुलामी में रखनेवाले को इसका कलंक और दोष लगता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०४

दुबले गुलाम की प्रथा हमारे लिए लज्जाजनक है, क्योंकि हम इंसानियत का हक खो बैठे है, और जानवरों की सी हालत में जी रहे हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४१

पुरुष का स्वामी कैसा ? उसका तो एक ही स्वामी हो सकता है और वह है परमेश्वर जो जगत को पैदा करने वाला है। इस स्थिति से निकलना हो तो पहले ज्ञान चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४३

पेट ही बेगार कराता है, और पेट ही बाजे बजवाता है। इसलिए हमारा पेट न भरे, तो गुलामी करनी पड़ती है। पेट भरने का इन्तजाम कर लें तो गुलामी मिट जाए। वह चोरी करने से नहीं होगा, मेहनत-मजदूरी से होगा। मेहनत में गर्व माना गया है और मानना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०४

मनुष्यों का मालिक तो एक ईश्वर ही है, जिसने उन्हें जन्म देकर इस जगत में पैदा किया है। जिसने ऐसा सुन्दर शरीर दिया है और उसमें जीव डाला है, वही हमारा सच्चा मालिक हो सकता है। जानवरों के मालिक आदमी होते हैं, परन्तु जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के नाथ डालता है और उसका मालिक बन बैठता है, तो यह भयंकर चीज हो जाती है। उस समय मालिक बननेवाला और उसे मालिक मान लेने वाला—दोनों पाप में पड़ते हैं और दोनों की दुर्दशा होती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३५१

हम गुलाम इसलिए बने थे कि हम आपस में एक-दूसरे के साथ लड़े, खतरे के समय हम लोगों ने एक-दूसरे का साथ नहीं दिया। हम छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर बैठ गए और अपने-अपने संकुचित क्षेत्रों में, अपने स्वार्थों में पड़ गए। अपने संकुचित क्षेत्र में भले ही हमने कुछ सेवा भी की हो, लेकिन उससे हमको नुकसान ही हुआ और जब समय आया तो हम एक साथ खड़े न रह सके।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५२

हमें गुलामी का मोह हो गया, और हम उसे ही अच्छी समझने लगे। हमें ऐसा लगा कि रामराज्य आ गया है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१९

गृह उद्योग

किसान का गुजर सिर्फ खेती पर हरगिज नहीं चल सकता। जिसके पास लम्बी-चौड़ी जमीन होगी, जो विशेष बुद्धि रखता होगा और जो विशेष मेहनत करता होगा—वही गुजर चला सकेगा। आजकल जमीन के टुकड़े होते जा रहे हैं। ऐसी हालत में खेती के साथ, फुरसत में घर बैठे करने का उद्योग हो, तो ही किसान का काम चल सकता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०४

गृहस्थ

सच्चा गृहस्थ वह कहलाता है जो एक विषय में पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त कर ले। हर एक विद्यार्थी को भी किसी एक विषय में संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। बाकी के विषयों में अपूर्ण हो तो भी काम चल सकता है। परन्तु सभी विषयों में अपूर्ण रह जाए, तो उसका इस दुनिया में काम नहीं चल सकता। हाथ-पैरों का उपयोग ज्यादा होना चाहिए। मस्तिष्क और हाथ-पैरों के बीच कोई अंतर नहीं होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०२

ग्रामसेवक

ग्रामसेवक को दो बातें जान लेनी चाहिए। पहली यह कि वह बिना कारण न बोले। दूसरी बात यह है कि वह कभी यह इच्छा न रखे कि उसके काम की प्रसिद्धि हो। प्रसिद्धि अक्सर कठिनाई पैदा करती है, जबकि कोने में छिपे रहने वाले का काम शोभायमान और प्रसिद्ध हो जाता है।

— सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३०१

ग्रामसेवा का काम

आपके काम में अटूट धीरज और श्रद्धा की जरूरत है। वह काम एक-सा नहीं है, जिसका हिसाब जल्दी से लगाया जा सके।

वह ऐसा नहीं है, जो एकदम आंखों को दिखाई दे जाए। जिसे तुरन्त फल चाहिए, उससे ग्रामसेवा का काम नहीं हो सकता। फल मिले या न मिले, परन्तु धर्मबुद्धि से जो इस काम में लगा रहता है, उसका काम समय आने पर जरूर बोलेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३०१

घमण्ड

उन्हें घमण्ड होगा कि हमारे पास रावण से भी ज्यादा बल है, मगर रावण बारह महीने तक बगीचे में बन्द रखी हुई एक अबला को वश में नहीं कर सका था—और उसका राज्य नष्ट हो गया था। यहां तो अस्सी हजार सत्याग्रही हैं। उनकी टेक छुड़वा सकने वाला कौन है?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५७

चरखा

जिस झोंपड़ी में चरखा घुस जाता है, वहां से शराब और ताड़ी का नाश हो जाता है। चरखा रखने वाले भयमुक्त हो गए हैं, और अपनी पैदा की हुई कपास खुद ही लोढ़ने, पींजने, कातने और बुनने लग जाने के कारण वे उद्यमी बन गए हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७७-७८

चरित्र

तुम एक भी पुस्तक न पढ़ो तो काम चल सकता है। चरित्र का विकास होगा, तो बुद्धि का विकास तो हो ही जाएगा। पुस्तकें पढ़ने वाले हमेशा सच्चरित्र ही होते हैं, सो बात भी नहीं है। विद्याविलासियों में चरित्रवान भी होते हैं और भोग विलासी भी होते हैं, ऐसा मेरा अनुभव है। चरित्र-शुद्धि कठिन काम है। मगर उद्यमी जीवन बिताने वाले को चरित्र-भंग के अवसर कम आते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१४

यह ध्यान रखना कि तुम्हारी इज्जत पर कोई हाथ न डालने पाए—एकता पैदा करो और चरित्र का विकास करो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१६

लोगों पर छाप तो हमारे चरित्र की ही पड़ेगी। गांववालों पर इस बात की छाप पड़ती है कि सेवक कितना त्यागी, संयमी सेवाभावी और धीरजवाला है। अनेक उतार-चढाव आ जाएं, तो भी ग्रामसेवक इन गुणों से उन लोगों के हृदयों में स्थान प्राप्त कर सकेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३०२

चर्चिल

मिस्टर चर्चिल सारी जिन्दगी साम्राज्यवाद के अंध भक्त रहे—और जबकि साम्राज्यवाद अपनी आखिरी सांसे गिन रहा है, तब वे उसके साथ सती होने को तैयार हैं। बुद्धि और समझ से उनका कोई वास्ता नहीं। उन्हीं की अकड़ और जिद्द के कारण, भारत और ब्रिटेन के बीच मित्रता स्थापित करने के प्रयत्न बार-बार विफल हुए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १६१

यदि चर्चिल का यह ख्याल है कि हिन्दुस्तान को बचानेवाला वही है, तो मेरा कहना यह है कि उसको भी यह फैसला कर लेना चाहिए कि अपने इंग्लैण्ड को बचाएं। क्योंकि वे दिन अब दूर चले गए। वह खुमारी और वह मगरूरी के दिन अब चले गए। आज दुनिया दूसरी तरह से चल रही है। अगर सारी दुनिया एक-दूसरे के साथ मिलकर मुहब्बत, सच्चाई, और इंसाफ से नहीं चली—और दुनिया के देश गांधीजी के बताए रास्ते पर चले तो, दो लड़ाई तो यह दुनिया जिस किसी तरह बर्दाश्त कर सकी, पर तीसरी बर्दाश्त न कर सकेगी। दुनिया खत्म हो

जाएगी। दुनिया का नाश हो जाएगा। इस तरह से किसी का काम नहीं चलेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ३५

चिन्ता

हमें चिन्ता कभी नहीं करनी चाहिए। जितना दु.ख भोगना नसीब में लिखा होगा, उतना भोगना ही पड़ेगा।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११०

छात्राएं

पाठशालाओं या कॉलेजों में पढ़नेवाली छात्राओं को ऐश-आराम की नहीं, वल्कि मेहनत करने की आदत डालनी चाहिए। छात्रों में यह बुराई आ गई है। वे यह मानते हैं कि परिश्रम करना नौकर-चाकरों का, गंवारों का काम है। यह वहुत बुरी बात है। हाथ-पैर चलाने में ही सच्ची शोभा है। हम मजदूर की तरह नहीं, वल्कि ज्ञानपूर्वक मेहनत करें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५८६

छिपाओ नहीं

आपको जो कुछ करना है, खुल्लमखुल्ला करो। जितना काम छिपाकर करोगे, आपमें उतनी ही एक प्रकार की भीरुता पैदा हो जाएगी। कायरों को छिपाकर काम करने की जरूरत होती है, वहादुर मर्दों को नहीं। सो आपको जो काम करना है, खुला करो!

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० २००

जगत

यह जगत झूठा है। शरीर क्षणभर में नष्ट हो जाने वाला है। लक्ष्मी झूठी है—माया है। दुनिया का व्यवहार

भरा हुआ है। इसमें से तैरकर पार हो जाने में ईश्वर हमारी सहायता करे, तो अहोभाग्य समझना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ८०

जनता

स्वराज्य चाहनेवाली जनता, लोकमत के किसी भी पक्ष का अनादर नहीं कर सकती।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ११

जमींदार

आजकल के जमींदार और जागीरदार हमारे देश की संस्कृति की विशेषता के प्रतिनिधि नहीं हैं। इस पुण्यभूमि में धनवानों और जागीरदारों या सत्ताधारियों की पूजा कभी नहीं हुई। त्यागियों और तपस्वियों के चरणों में धनवान जागीरदार और सत्ताधारी सिर झुकाते रहे है। त्यागियों और तपस्वियों के नाम अमर हो गए हैं, और गांव-गांव व घर-घर उनके गुणगान हो रहे हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३०७

जाति-भेद

मनुष्य का शरीर मिट्टी का है। उसके लिए जाति-भेद नहीं है। उसमें से आत्मा निकल गई—तो फिर वह ब्राह्मण का शरीर हो या भंगी का, अछूत बन जाता है। वह मुर्दा हो जाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२०

जिम्मेदारी

जिम्मेदारी से आदमी के कन्धे खुद-ब-खुद मजबूत हो जाते हैं, और हम भी मजबूत हो गए हैं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १४६

जेलखाना

इस सरकार की जेल भी कोई जेल है ? असली जेलखाना तो माया का बंधन है। हमारी आत्मा के ये जो मोह, माया, काम और क्रोध के बंधन तोड़ दिए है, उस आदमी को इस दुनिया का बलवान-से-बलवान साम्राज्य भी बन्धन में नहीं रख सकता। इसीलिए मैं कहता हूं कि जेल तो मेरे लिए किसी गिनती में ही नहीं है, और इस जिंदगी में तो उसकी मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२५

झगड़ा

व्यर्थ झगड़ा खड़ा मत कीजिए। अब यह स्थिति बहुत दिन नहीं रहेगी। जिस तेजी से विनाश हो रहा है उसी तरह होता रहा, तो थोड़े ही समय में हल निकल आएगा। इसमें तो बहुत-सी पापी शक्तियां भस्म हो जाएंगी। यह तो दुनिया का भार उतारने के लिए कुदरत का कोप हुआ है। हमारा काम तो ऐसा उपाय करना है, जिससे दुबारा संकट ही न आए।

— सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४७८

टीका-टिप्पणी

आज भारत में कुछ इस प्रकार का वायुमण्डल प्रचलित है, कि जिसमें दूसरों की व्यर्थ टीका—और दूसरों के उद्देश्यों और नीयत पर आक्षेप लगाने में ही देशभक्ति और देशसेवा समझी जाती है। पिछले रचनात्मक कामों के खण्डहर के बल पर एक नया मकान बनाने की चेष्टा की जाती है। देश के जीवन को नींव से ही इस प्रकार उखाड़ने का जो प्रयत्न करते है, उनका भविष्य क्या होगा—उसमें न तो मुझे कोई शंका है, और न कोई शंका की गुंजाइश है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० २१५

तलवार

आज हमें यह समझ लेना है—कि तलवार का अधिकार, किसी एक गिरोह का अधिकार नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५३

त्याग

जिसे अपनी कोई कीमती चीज छोड़नी पड़ती है, वही इस तरह के काम की कदर कर सकता है। जिसने कभी कोई त्याग नहीं किया, वह उसकी पूरी कदर नहीं कर सकता।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ४३

सच्चे त्याग और आत्मशुद्धि के बिना स्वराज्य नहीं आएगा। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० २०३

दण्ड

भगवान किसी को दूसरे के दोषों के लिए सजा नहीं देता। हर एक आदमी अपने ही दोषों से दु:खी होता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २०६

दगाबाज

जो आपको दगा दे, उसे बिलकुल मत छोड़िए। उसे कह दीजिए कि हमने एक नाव में बैठकर यह साहस किया है; इसमें तुझे छेद करना हो, तो तू नाव में से उतर जा! हमारा-तेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५४

जो कोई छोटी-छोटी चीज के लिए अपने मित्रों के साथ दगाबाजी करता है, वह कभी कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६८

दब्बू न बनिए

आप जानते हैं कि एक कुम्हार भी गधे पर पहले एक मन बोझा रखता है, उसे वह ले आए तो फिर आधा मन बोझा बढ़ा देता है, और इस तरह करते-करते उससे दो मन बोझा खिंचवाता है। किसी तरह आप जैसे-जैसे बोझा सहन करते जाते है, वैसे-वैसे सरकार भी आप पर ज्यादा बोझा डालती जाती है। आपने अब तक जो बोझा सहन किया है, उसे फेंक दीजिए और निर्भय होकर बैठ जाइए। जो सत्य है उसका अनुसरण कीजिए फिर सरकार भी कहेगी कि जनता नामर्द नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४

दया

जिसने गांवों का दुख न देखा हो, उसे असली दुख की कल्पना होना मुश्किल है, और इसलिए झूठे दुख के भुलावे में आकर उनके हाथों दयावृत्ति का दुरुपयोग होना सम्भव है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १२७

धर्म का मूल तो दया है, परन्तु जो लोग ऐसे हैं कि उनके दिल में गुमान है कि उन्हें शहीद बनना है, उनको हम कैसे रोकेंगे ? जो खुदा के दरबार में शहीद बनकर जाना चाहते हैं, उनके काम में हम रुकावट डालें, ऐसे पापी हम क्यों बनें ? जाने दो उसको, जाए वह, यही हमारी ख्वाहिश है। आप यह समझ लीजिए कि कोई काम कानून से चलता हो—तो उसे कानून से चलने दो। कानून के मुआफिक काम करने में थोड़ा खर्चा तो होगा, लेकिन वह लाचारी है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६०

दुःख

अपने दुःखों के लिए हमारे पाप जिम्मेदार हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४७५

जीवन में सब दिन एक से नहीं जाते।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११५

दुःख उठाने के कारण अक्सर हममें कटुता आ जाती है, हमारी दृष्टि संकुचित हो जाती है, और हम स्वार्थी और दूसरों की कमियों के प्रति असहिष्णु बन जाते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २७०

दुःख सहन किए बिना सुख नहीं मिलता, और मिल जाए तो वह लम्बे समय तक टिकता नहीं। मजबूत और दृढ़ विचारों की जनता हो, इसी में राज्य की शोभा है। नालायक और डरपोक प्रजा की वफादारी में सार नहीं। डर और स्वाभिमान की रक्षा करनेवाली वफादार प्रजा ही सरकार को शोभा देती है।

—सरदार पटेल के भाषण पृ० ३४

दुःख ही सुख का मूल है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१४

पिछला दुखड़ा रोना कायरों का काम है। हिसाब लगाकर मुकाबले की तैयारी करना बहादुरों का काम है। दुःख के समय हम प्रजा के पास दौड़कर जाएं यह ठीक है। परन्तु काम ऐसा करना चाहिए कि जिससे आइन्दा ऐसा दुःख पैदा ही न हो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४७४

शरीर के दुःख से मन का दुःख ज्यादा बुरा होता है। शरीर को सुधारने के लिए तो कुछ दवा भी की जा सकती है, लेकिन मन का रोग दवा से नहीं मिटता।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११४

हमारी ताकत तो सभ्यता के साथ दुःख सहन करने में है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४६

दूरदर्शिता

बुद्धिमान मनुष्यों को दूरदर्शिता रखनी चाहिए। तात्कालिक स्वार्थ न साध कर, भविष्य का विचार करना ही कर्तव्य है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४८७

देवता

देवता और राजा दोनों एक-से ही हैं। ये जब तक मन्दिर के बाहर न निकलें, तभी तक पूजा करने लायक हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७४

देशभक्त

सत्ताधीशों की सत्ता उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाती है, जबकि महान् देशभक्तों की सत्ता उनके मरने के बाद ही सचमुच काम करती है। लोग उनके जीवन का अनुकरण करने की कोशिश करते है, उनके गुण गाते हैं और दिन-रात उन्हें याद करते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०

देश-सेवा

देश की सेवा करने में जो मिठास है, वह और किसी चीज में नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २५६

देशी राजा

नाट्यशाला में तलवारें लटकाकर चलनेवाले गवैयों के छोकरों को जितनी स्वतंत्रता होती है, उतनी भी आजकल देशी राजाओं को नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३२

देहाती

देहात में रहनेवाले लोग एक प्रकार से भोले और अज्ञानी होते हैं। उनकी भाषा में फर्क हो सकता है, भेष में फर्क हो सकता है, परन्तु उनके हृदय में प्रेम भरा होता है। उनके पेट में खड्डे पड़ गए हैं, परन्तु आंखों में तेज है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१८

दोष

अपने मित्रों की त्रुटियों की तरफ उंगली उठाने का काम बड़ा मुश्किल होता है, और उसकी कदर होने की बहुत कम सम्भावना होती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २६२

एक-दूसरे के खिलाफ बक-झक करने और संघर्ष करने से फायदा नहीं है। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४६८

जो आदमी अपना दोष जानता है और उसे स्वीकार करता है, वह ऊंचा उठता है। जो अपने दोष को समझता नहीं, अथवा समझकर भी उसे छिपाता है, वह नीचे गिरता है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ७४

हममें जितने दोष हों, उन सबको हमें छोड़ना चाहिए।

— सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३०

दोस्ती-दुश्मनी

जो लोग हत्यारों को मदद देते हों, आश्रय देते हों और उनके प्रति सहानुभूति रखते हों, वे भी उनके बराबर ही भयंकर हैं। ऐसे लोगों की जिम्मेदारी भी उतनी ही है। उनके साथ दोस्ती कब तक रखी जा सकती है, यह हमें सोच लेना है। सांप के बिल में कब तक सिर रखा जाए, इसके जोखिम पर विचार कर लेना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१७

धन

जो खुद धन पैदा न करके दूसरों का धन लेने की तरकीबें करता है, उसे मैं बुद्धि का व्यभिचार कहता हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१४

धन कमाना नसीब की बात है। और सन्तोष के अभाव में मनुष्य चाहे जितना धन कमाए, तो भी सन्तुष्ट या सुखी नहीं होता। इसलिए ईश्वर ने सुख से जो रोटी खाने को दी है, उससे सन्तुष्ट रहकर हमें ईश्वर का आभार मानना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११६

धन से एक प्रकार का नशा चढ़ता है। हमें यह सीखना है कि गरीब आदमी भी कैसे रह सकता है, सुखी जीवन बिता सकता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५८७

मनुष्य रुपये से कुछ नहीं कर सकता।

— सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०१

धनीवर्ग

लोग मानते हैं, कि धनी वर्ग को सुख है, और बाकी सब दुखी हैं। मैं यह नहीं मानता कि जिसमें खाने को ज्यादा हो और इज्जत न हो—वह सुखी जीवन है। क्योंकि खाली पेट भरने से तो कोई काम नहीं होता है। यह तो जानवर भी करता है।

— भारत की एकता का निर्माण, पृ० १३२

धर्म

अन्त तक जिसे अपना धर्म माना है, उसका पालन करते-करते ही यह शरीर छूट जाए, तो इससे सुन्दर और क्या हो

सकता है? ईश्वर को जो पसंद होगा—वही होगा। उसकी इच्छा के वश होना—यही हमारा धर्म है।

—सरदार पटेल की अनुभव-वाणी, पृ० ११०

अपना धर्म पालन करते हुए जैसी भी स्थिति आ पड़े, उसमें हमें सुख मानना सीखना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११६

धर्म सिर्फ मन्दिर जाने में और कबूतरों को अनाज डालने मे तथा चीटियों को आटा खिलाने में ही नहीं है। लाखों आदमी कपड़े के बिना दुःख पा रहे है। इसलिए हमारा पहला धर्म तो यह है कि घर-घर चरखे चालू कराएं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २६

मजहब व्यक्ति की अपनी चीज है। मजहब के लिए सबको पूरी आजादी होनी चाहिए। उसमें दूसरे के साथ झगड़ा नहीं करना चाहिए। —भारत की एकता का निर्माण, पृ० १६६

हम अपने धर्म का पालन करें, तो दुःख से भरे इस संसार में सुखी हो होंगे। ईश्वर पर भरोसा रखकर अपने कर्तव्य का पालन करते हुए हमें आनन्द में अपने दिन बिताने चाहिए। सबसे सुन्दर मार्ग यह है कि हम किसी भी बात की चिन्ता न करें। —सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११३

मेरा धर्म खुद जाग्रत रहकर, आपको निरन्तर जाग्रत रखना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५३

धैर्य

धैर्य और विश्वास ने पहाड़ों से भी टक्कर ली है, और पत्थरों को भी पिघला दिया है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ७६

निर्भय

आप ईश्वर का डर रखिए। पहले आप डर निकाल दीजिए और स्वतंत्र हो जाइए, तो धर्म की रक्षा हो जाएगी। जिनके पैरों में जंजीर है, उनके अपने धर्म की रक्षा कैसे हो सकती है?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३१

एक ही बात ध्यान में रखनी है, कि मरना एक ही बार है। हर एक के लिए रस्सी और बांस के सिवाय और कुछ है ही नहीं। आपके पास ऐसी कोई चीज है, जिसे आप साथ ले जाते हैं? आप क्यों डरते हैं? आप वह बात भूल जाते हैं कि मुझे और आपको पैदा करनेवाला एक ही है। आप पवित्र बनिए, अपने ऐब निकाल डालिए, तो फिर किसी का डर नहीं। जिस क्षण आप निडर हो जाएंगे, उसी क्षण आप स्वतंत्र हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३०-३१

कल हमें कोई मदद देने वाला है, इसलिए आज बैठे रहें, तो आज भी बिगड़ जायगा, और कल तो बिगड़ेगा ही। आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३६५

किसी भी हालत में तुम्हारे दिल में डर न घुसना चाहिए। जब मनुष्य भयभीत हो जाता है, तब वह मनुष्य न रहकर पशु की हालत में आ जाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२४

जब तक दूसरों का सहारा लेने की जरूरत न पड़े, तब तक चिन्ता की कोई बात नही है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० १११

जिनमें अपनी जान जोखिम में डालकर ताड़ जैसे ऊंचे पेड़ पर चढ़कर—जिसमें पकड़ने के लिए डाली तक नही होती—

तांड़ी निकालने की हिम्मत है, ऐसे तुम लोग उन लोगों से क्यों डरते हो, जिनमें ताड़ पर चढ़ने की भी हिम्मत नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १३८

जिसकी मौत आ गई है उसकी कोई दवा नहीं, और जिसकी मौत नहीं आई उसे कोई मार नहीं सकता; तो फिर हम गांव के लोग, जो रात-दिन मेहनत करते हैं, मौत से क्यों डरें ? आपका पेट इतना ताकतवर है कि सूखी रोटियां भी उसमें लकड़ी की तरह भकभक जल जाती हैं और मिठाई खानेवाले धनवानों को उन्हें पचाने के लिए पेट की मालिश करानी पड़ती है। वे मौत से डरते हैं। तगड़े को तो मौत आने पर खुशी होती है कि चलो छुट्टी मिली।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२१

जिसने पाप या चोरी न की हो, उसे डरने का क्या कारण ? मौत किसी को नहीं छोड़ती। एक समय ऐसा आता है कि हम बैठे रह जाते हैं, और हमारा नौजवान लड़का चल बसता है। यह भगवान की माया है। जो चीज तकदीर में लिखी है और जन्म से साथ है, उसका डर या भय क्या ? यह तो खुशी का दिन है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२०-४२१

बन्दूकवाला तो बन्दूक ताकता है। इसमें उसे निशाने की चिन्ता होती है। हमें किस बात की चिन्ता ? अगर हम अहिंसात्मक हों, तो हम पर निशाना लगाने की जिम्मेदारी दूसरे पर आ जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१२

भगवान के आगे झुकना चाहिए, दूसरों के आगे नहीं झुकना चाहिए। हमारा सिर कभी न झुकने वाला होना चाहिए। देहात



में रहनेवाले लोग निर्भय होने चाहिए, इसके बजाय उनमें हमेशा डर होता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२०

मौत से भी क्यों डरते हैं ? जो पैदा हुए हैं, उन सभी को मरना होगा। तो फिर होला पक्षी की तरह तड़प-तड़पकर क्यों मरें ? मर्दों की तरह क्यों न मरें ? मरना-जीना ईश्वर के हाथ की बात है। तो फिर व्यर्थ वाद-विवाद क्यों करें ? अच्छा काम क्यों न करें ? पड़ोसी से ईर्ष्या क्यों रखें ? पड़ोसी से या सम्बन्धियों से बदला लेने के लिए दिन को या रात को डाका डलवाने या हमला करवाने से बराबर बुरा काम कोई नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०१-५०२

यह शरीर पंचमहाभूत का बना हुआ है। इसके भीतर जो शक्ति निवास करती है, उससे परिचय करना चाहिए। जब से दुनिया पैदा हुई, तब से कोई अमर नहीं हुआ। गरीब किसान और बादशाह की आखिर में तो एक ही हालत होगी। वहां बड़े-बड़े तीसमारखाओं की तोप-बन्दूकें भी काम नहीं आतीं। कौन जाने यमराज कहां से घुस आता है। इस प्रकार अगर एक बार मरना ही है, तो फिर कुत्ते की मौत क्यों मरा जाय ? जब तक यह बात नहीं जान ली जाती, तब तक डर रहता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३५७

राक्षसी सत्ता का प्रतिनिधि कितना ही बड़ा या छोटा हो, तोप-बन्दूक का प्रतिनिधि हो, उसमें जान लेने की ताकत हो और जागीर देने की उदारता भी हो—पर जो उसके सामने झुकता है वह मर्द नहीं नामर्द है। अब तक हम तो नामर्द रहे, मगर अब हमारी औलाद तो नामर्द न बने।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२८

लाठियां खाकर बहादुरी से मरना न आए, तो भी कायर बनकर भागना नहीं चाहिए। अहिंसा से या हिंसा से दुश्मन का सामना करना सीखना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४६९

निहत्थे स्त्री-पुरुषों और बच्चों पर जुल्म करना वीरों को शोभा नहीं देता। इसमें न तो कोई गर्व की बात है और न किसी प्रकार की वीरता। यदि दूसरे लोग इन्सानियत को छोड़ दें, तो हमें अपने को गिरा लेना उचित नहीं। यदि लड़ना हो तो मैदान में ललकारकर लड़ना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६१

नेक बनें

मैं हिन्दुस्तान के एक वफादार सिपाही की जगह खड़ा रहना चाहता हूं, और यदि वफादारी के इस मार्ग में एक कदम भी चूक जाऊं—मैं खुदा से प्रार्थना करूंगा कि मेरा जीवन उसी समय खत्म हो जाए। क्योंकि इन्सान की असली कदर तो उसके जीवन के बाद होती है। मरने तक जो गलती नहीं करता, तभी उसका जीवन ठीक होता है। लेकिन ऐसे लोग कितने हैं, जिन्हें यकीन हो कि वे गलती नहीं करेंगे? ऐसा दावा कौन कर सकता है? तो हमारी प्रार्थना होनी चाहिए कि जब तक खुदा हमें जिन्दगी दे, तब तक हम सही रास्ते पर चलें और कोई गलती न करें। बड़ी नम्रता से हमें खुदा से यही प्रार्थना करनी चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८१

नेता

जो आदमी सीधा नेता बन जाता है, वह किसी-न-किसी दिन लुढ़क जाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२४

जो नेता बन जाता है, उसे नीचे गिरने का डर रहता है। मगर मैं तो सिपाही हूं। हमारे देश में एक नेता है। मैं उसका सिपाही हूं। उसकी सेवा करता हूं और उसका हुक्म मानने की भरसक कोशिश करता हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४४७

थोड़ा भाषण देना आ जाने से, और अखबारों में लिखना सीख जाने से ही नेता बन जाने की नौजवानों में कल्पना हो—तो वह गलत है। सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३५०

नेताओं के गिरफ्तार हो जाने के बाद लोगों में से नेता निकलेंगे। समय और वस्तुस्थिति नेताओं को पैदा करती है। स्वतंत्रता की लड़ाइयां किसी भी मुल्क में, किसी भी समय नेताओं के बिना रुकी नहीं हैं। हिन्दुस्तान में भी नहीं रुकेगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५२१

नेतापन सेवा में है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४३

पहले पहल कुरसी पर जाकर बैठे और मालाएं पहनाई कि गुप्त अभिमान पैदा हो जाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०६

बदकिस्मती से एक वर्ग आजकल यह मानने लगा है कि अखबारों में लेख लिखने से शीघ्र नेता बन सकते हैं, और पब्लिसिटी करने से आगे बढ़ सकते हैं, प्लेटफार्म पर चढ़कर भाषण देने से महान् नेता बन सकते हैं, और कोई भी संस्था खोलकर उसके मंत्री या अध्यक्ष बन जाने से बड़ी कुरसी पर बैठ सकते हैं। मगर ये सब पतन के मार्ग हैं। जो आदमी सिपाहीगिरी करना नहीं जानता, वह सेनापति नहीं बन सकता। जो आदमी हवा में उड़ता है, उसे गिरने का भी डर रहता है।

परन्तु जो जमीन पर चलता है, उसे गिरने का डर नहीं होता। तात्कालिक नेता बन जाने के लिए कोई स्थान नहीं है। परन्तु सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ने वाले के लिए बड़ी गुंजाइश है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०८-४०९

नैतिकता

आज असली जरूरत जनता की नीति को ऊंचा उठाना है। दुनिया में आजकल सब जगह रिश्वत और पाखण्ड बढ़ गया है। जहां लोगों का चरित्र ऊंचा है, नैतिक बल ऊंचा है, वहां ये बातें कम हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५९०

मैं किसानों से और आपसे कहता हूं कि कानून से तो बंधन है ही नहीं। आप स्वतंत्र ही हैं। मगर हम नैतिक बंधनों से नहीं छूट सकते। किसी के पसीने की कमाई खराब करेंगे, तो ईश्वर हमारा बुरा करेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०५

हमारे पास नैतिक बल है। एक-एक कदम हिसाब लगाकर उठाया जाता है। हमें ईश्वर का और जगत का साथ है। हमें तैयारी करनी है। हमें तो शराफत से स्वतंत्रता लेकर दुनिया को बताना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४३२

हर कौम या हर राष्ट्र खाली तलवार से वीर नहीं बनता। तलवार तो अपनी रक्षा के लिए जरूरी बात है लेकिन राष्ट्र की प्रगति का माप उसकी नैतिक प्रगति से ही किया जा सकता है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १९५

न्याय

अगर आपको अच्छी तरह ख्याल हो कि आपकी बात सच्ची है—यह अन्याय है और उसका सामना करना आपका धर्म है,

यह बात आपके दिल में पैदा हो गई हो, तो आपके खिलाफ सरकार की पूरी शक्ति कुछ नहीं कर सकेगी।

—सरकार पटेल के भाषण, पृ० १३८

पंजाब

पंजाब हिन्दुस्तान का दिल है। इसे जख्म लगा है, और जब तक यह ठीक नहीं होगा, तब तक हिन्दुस्तान बेचैन रहेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८३

आप इस बात का भी ध्यान रखें कि आप किस जगह रहते हैं। हमारे हिन्दुस्तान की पुरानी सरहद आज चली गई है। आज हमारी नई सरहद बनी है। उस सरहद पर एक बहुत स्ट्रेटेजिक पोजीशन (महत्त्वपूर्ण स्थिति) में आप रहते हैं। यहां रहते हुए आपकी क्या जिम्मेदारी है? यदि आपमें अपने पड़ोसी के साथ मुहब्बत और मित्राचार होता, और उसके दिल में विश्वास होता, तब भी और बात थी। आज तो अविश्वास भरा है। यदि दोनों पड़ोसियों में परस्पर मुहब्बत न हुई, एक-दूसरे का विश्वास न हुआ, तो हमारा क्या कर्तव्य है? क्या इन हालतों में हम आपस में लड सकते है? तो मैं आपसे यह कहना चाहता हू कि इस जगह पर आप लोग बैठे है, इसलिए आपकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। क्योंकि यहा रहकर आप हिन्दुस्तान की सरहद पर बैठे है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १६

पंचायतें

पचायतें तो ऐसी होनी चाहिए जो गरीबों की रक्षा करती हों, और जिनके जरिये सारी जाति का पुनरुद्धार होने लगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १२६

पड़ोसी

अगर बदकिस्मती से हमारा झगड़ा अपने पड़ोसी से चलता है, तो उससे हमें नुकसान होता है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १३५

जब तक हमारा पड़ोसी भूखा है, तब तक हमें ख्याल करना चाहिए कि हमारे पास अपनी जरूरत से जितना ज्यादा है, उतना तो हम उसे दे दें। यह भाव जब तक हिन्दुस्तान में पैदा नहीं होगा, तब तक हमारी प्रजा शक्तिशाली नहीं होगी, प्रभावशाली नहीं बनेगी।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १२३

संकट में पड़े लोगों के पास जाकर बैठने, और उनकी तरफ प्रेमभरी नजर से देखने और मीठी बातें करने से वे दुःख भूल जाते हैं। यह तो सभी पड़ोसियों का कर्तव्य है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ६७४

हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम भी सुखी हों, और हमारा पड़ोसी भी सुखी हो। हमारी नीयत यह न होनी चाहिए कि हमारे पड़ोसी को दुःख हो। लेकिन जब तक हमारे पड़ोसी का बर्ताव हमारे साथ इस प्रकार का न हो कि वह भी हमारे दुःख में दुखी है, तो हमें दूर से उसे नमस्कार कर अपना इन्तजाम पूरा कर लेना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १३७

पद

पदवी का दान पदवी के योग्य पुरुष को दिया जाता है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १९९

परतंत्रता

आपके घर का इन्तजाम दूसरों को सौंपा हो, तो वह कैसा चलता है—यह आपको सोचना है। जब तक इंतजाम दूसरों के हाथ में है, तब तक सुख नहीं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०६

जैसे बैल की गर्दन पर जुआ रखने में वह अपमान-दुःख नहीं समझता, वैसे ही अगर आप भी न समझते हों, तो आपको भी दुःख नहीं है। परन्तु अगर आपकी आत्मा जाग्रत हो, तो आपको विदेशी हुकूमत चुभनी चाहिए। जैसे काबिल आदमी शेर को पाल सकता है, वैसे ही काबिल इन्सान, इन्सान को भी पालता है—मगर वह गुलाम है। इस समय हमारी यही दशा है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०३

पराधीन मनुष्यों को अपने सम्मान की रक्षा करके, गुलामी में भी आजादी का उपभोग करना सीख लेना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११३

परनिंदक

जिसे रात-दिन परनिन्दा करने की आदत होती है, उसकी स्थिति दयाजनक हो जाती है। उसे सुननेवाले की स्थिति भी दयाजनक हो जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८०

परोपकार

किसी का भला हो तो उससे हमें खुश होना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११६

परिश्रम

मुफ्त चीज मिलती है, तो उसकी कीमत कम हो जाती है। परिश्रम से पाई हुई चीज की कीमत ही ठीक-ठीक लगाई जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०२-४०३

परिस्थिति

अगर घर का वायुमंडल अनुकूल नहीं होगा, तो स्कूल में जितना पढ़ेगा उतना घर जाकर रात को भूल जाएगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४८३

पलायन

जिस आदमी ने जनता की रक्षा करने की प्रतिज्ञा ली है, वह जब तक शहर में दूसरे लोग मौजूद हों, तब तक नहीं भाग सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५१२

पश्चिमी सभ्यता

पश्चिमी सभ्यता दुनिया की अशांति की जड़ है। राजा-प्रजा के बीच झगड़ा करानेवाली, बड़ी-बड़ी सल्तनतों को नष्ट करनेवाली महान् राज्यों को ग्रहों की तरह टकराकर पृथ्वी पर प्रलय लानेवाली, मालिकों और मजदूरों के बीच गृह-युद्ध मचाने वाली पाश्चात्य सभ्यता शैतानी शस्त्रों और सामग्री पर निर्मित हुई है।—आत्मबल का पुजारी हिन्दुस्तान इस शैतान के तेज से कभी प्रभावित नहीं होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७

पाकिस्तान

कभी-कभी कोई कहता है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान आखिर एक हो जाएंगे। मैं यह नहीं कहता हूं। मैं कहता हूं कि अब अलग ही रहो। आपको बहुत नमस्कार है। आप वहीं बैठे रहो। हमें आना नहीं है, क्योंकि हमने बहुत अनुभव कर लिया है। आप अपनी जगह बैठकर सैर कीजिए। आप [illegible] जाएंगे, हम खुश रहेंगे। लेकिन [illegible]

[illegible]

काम करने दीजिए। पाकिस्तान कभी सिक्खों पर कसूर का बोझ डालता है, कभी हमारे पर कसूर का बोझ डालता है, और कभी गवर्नमेंट पर; लेकिन अपनी गलती कभी महसूस नहीं करता है। जो आदमी अपनी गलती महसूस नहीं करता, उसका भला कभी नहीं हो सकता। पाकिस्तान गिरेगा, तो वह अपने पाप से ही गिरनेवाला है, हमारे गिराने से कोई नहीं गिरेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६७

यदि हमें पाकिस्तान के साथ हिसाब करना है, तो वह इधर के मुसलमानों के साथ नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर हम ठीक रास्ते पर चलें और अपने दिमाग पर काबू रखें, तो हमारे पास इतना सामान है कि पाकिस्तान की लड़ने की ख्वाहिश भी हो—तो भी वह हमारा कुछ न बिगाड़ सकेगा। वह तो अभी बच्चा है। कल ही तो उसका जन्म हुआ है? वह क्या करेगा?

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ७२

सच्चाई को छिपाना, झूठे आरोप लगाना, तथ्यों को तोड़ना-मरोड़ना पाकिस्तान सरकार की रोज की आदत बन गई है। सारा संसार झूठे प्रचार के उस ढंग से, और इसके उस्ताद जर्मनी के डॉक्टर गोएबल्स से परिचित है। वही हथकंडे और झूठा प्रचार अब फिर से काम में लाया जा रहा है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६५

पाप

संसार विनाश के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। क्योंकि पाप का भार बढ़ गया है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४७५

पारसी जाति

जिस जाति में दादाभाई नौरोजी जैसे महर्षि पैदा हों, और जिस जाति में उस पुरुष की पोतियां इतना अच्छा काम कर रही हों, वह जाति क्या नहीं कर सकती ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २३६

पुण्य

जो पुण्य और दान हम करेंगे, वही हमारी सच्ची कमाई कहलाएगी। वरना दुनिया से चले जाने के बाद हमारे पीछे कुछ रहने वाला नहीं है।

—सरदार की अनुभव वाणी, पृ० १०६

पुलिस

पुलिस जनता की रक्षा के लिए होनी चाहिए। मगर मौजूदा पुलिस से जनता की कितनी रक्षा होती है, यह हम देख सकते हैं।—पुलिस उनकी रक्षा नहीं कर सकती। यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें पुलिस का दोष है। पुलिस के सिपाही ज्यादातर अपढ़ लोगों से मिल सकते हैं। उन्हें इस समय जो वेतन मिलता है, उससे वे ईमानदारी के साथ गुजर नहीं कर सकते। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वे लोगों की रक्षा करने के बजाय चोरी या डाकों में हिस्सेदार बन जाएं, या दूसरी तरह जनता पर जुल्म करके अपना निर्वाह करें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ७१

मिजाज बिगाड़ने का कारण भी हो तो भी मिजाज ठंडा रखना चाहिए। यह पुलिस का प्रथम कर्तव्य है। जो पुलिस अपना मिजाज गुमा देती है, वह पुलिस की जगह के लायक नहीं है। अपना मिजाज शान्त रखना चाहिए, अपनी जबान भी मीठी रखनी चाहिए।

हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि मुझे पुलिस की मदद मांगनी ही नहीं है। भले ही वह अपना फर्ज अदा करे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०६

प्रजा

जब तक असली सत्ता प्रजा के हाथ में नहीं आएगी, तब तक प्रजा को संतोष नहीं होगा—यह जानते हुए भी, इस निश्चित वस्तु को किसी भी तरह टालने का व्यर्थ प्रयत्न किया जाता है। आखिर तो इस तरह बालू में से तेल निकालना छोड़कर, प्रजा को खुश करके ही काम करना पड़ेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१४

जिन्हें प्रजा की शक्ति और साधनों के बारे में पूर्ण विश्वास है, उनके लिए निराश होने का कोई कारण नहीं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१३

जो प्रजा जुल्म सह लेती है, वह राज्य को जालिम बनाने में सहायक होती है। जुल्म का विरोध करना प्रजा का धर्म है। जो प्रजा अपना धर्म भूल जाती है, उसे राज्य के दोष देखने का अधिकार कम है। अत्याचारी राजा को गद्दी से उतार देने का प्रजा को हक है। सर्वसमर्थ राजाओं के विरुद्ध भी सबल प्रजा के इस हक का उपयोग करने की बात इतिहास बताता है। बलवान प्रजा के सामने राज्य से कुछ नहीं हो सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७६

प्रजा को जगानेवाला हो तो उसे जाग्रत होने में देर नहीं लगती, और जाग्रत प्रजा को राजा पहचाने बिना नहीं रहेंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७६

प्रतिज्ञा

इस देश में प्रतिज्ञा की महिमा अनादि काल से चली आई है। वचन की खातिर ही रामचंद्रजी राजपाट छोड़कर निकले

थे।—ऐसे आदमी जहां रहते हैं, वहां भगवान का निवास होता है। ऐसे कठोर प्रतिज्ञा का पालन करनेवाले मनुष्य ही हमें स्वराज्य दिलवाएंगे। ऐसे लोगों की तपश्चर्या से ही हमारी शक्ति बढ़ी है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०६

आकाश-पाताल एक हो जायं, तो भी आप अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४

प्रतिज्ञा का पालन करने से ही आपकी भावी सन्तानों की उन्नति होगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४

प्रयत्न

कोशिश करना हमारा फर्ज है, धर्म है। अगर हम अपने फर्ज को पूरा न करें तो हम ईश्वर के गुनहगार बनते हैं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६८

प्रेम

कठोर-से-कठोर हृदय को भी प्रेम से वश में किया जा सकता है, और विरोधी की कठोरता के प्रमाण में हमारा प्रेम भी उतना ही प्रबल होगा—तो हम जरूर जीत सकते है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ७

माता को जैसे अपना काना-कुबड़ा बच्चा भी सुन्दर लगता है, वैसे ही मेरे प्रति आपका प्रेम है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५००

मुहब्बत से इन्सान का दिल पिघल जाता है। हम जितना उन्हें दूर रखेंगे, उतना वह दूर भागते जाएंगे।

—भारत की एकता का निर्माण पृ० १२६

प्रेरणा

इस मौके पर जो अपना मुह छिपाएंगे, इस लड़ाई में जो अपना योग्य स्थान नहीं लेंगे, उनका नाम इतिहास में काले अक्षरों मे लिखा जायगा। इसलिए आप सब अपना-अपना धर्म समझ लीजिए, हिम्मत और दृढता से लड़ाई को आगे बढ़ाते रहिए, और अन्त मे विजय प्राप्त कीजिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२६

फौजी शक्ति

जब तक हमको पाकिस्तान का भरोसा न हो, तब तक हमें हिंदुस्तान को सभालने के लिए लश्कर रखना ही पड़ेगा। उसके लिए करोड़ो रुपया खर्च करना हो पड़ेगा। हम वैसा न करें, तो हम भी गुनहगार बन जाएगे, क्योकि यह सारे हिन्दुस्तान की सलामती की जिम्मेदारी का सवाल है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८८

बंदूक

बदूक का रास्ता गलत है। जो मौत से डरता है, उसके लिए ही बन्दूक है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ८०-८१

बड़प्पन

किसी को गाली देने या मारने मे बड़प्पन नही, बड़प्पन है धर्म की खातिर कष्ट सहन करने मे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ६१

बराबर हक और अवसर

मैं बड़े अदब से कहूंगा, और मुसलमानो से उनके खुद के इन्ट्रेस्ट के लिए, उनके खुद के हित के लिए कहूगा—कि वे अपने को पूरी तरह हिन्दुस्तानी समझें। क्योंकि हमारा तात्पर्य यह है कि हिन्दू और मुसलमानों को हर तरह से, एक ही प्रकार के

हक और एक ही प्रकार की जिम्मेवारी होनी चाहिए। बराबर हक और बराबर अवसर उन्हें मिलना चाहिए, और उसमें कोई फर्क नहीं होना चाहिए। लेकिन इसके लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों को हिन्दुस्तानी बनना पड़ेगा। उसके लिए जितना जल्दी तैयार हों, उतना अच्छा है। हो सकता है कि कई आदमियों के दिल में यह हो—कि पाकिस्तान उनके लिए ठीक स्थान है। उनसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि हमारी तरफ से कोई रुकावट नहीं होगी। जितनी जल्दी चले जाओ, उतना ही अच्छा है। इधर मुसलमानों के लिए भी यही अच्छा है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८६

बल-प्रयोग

बल-प्रयोग से कुछ समय के लिए तो शासन-सुधार की मांग को दबाया जा सकता है, परन्तु हमेशा के लिए उसे दबाए रखना असम्भव है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १४

बलहीनता

आपमें जो कमजोरी होगी, उसका असर बच्चों पर पड़े बिना नहीं रहेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४८४

बलिदान

क्या दुनिया में हम ही इतने गए-बीते हैं कि अपने देश की आजादी के लिए कुरबानी नहीं करना चाहते, जबकि दूसरे देश पराए मुल्कों के लिए भी लड़ रहे हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४५१

सच्चा बलिदान हमेशा पारमार्थिक होता है। उसमें नफा-नुकसान का हिसाब नहीं होता। [illegible]

[illegible]

अपेक्षा नहीं होती, और उसमें किसी तरह की निराशा या पछतावे के लिए भी स्थान नहीं होता। अब अपनी जमीन और घर-बार की कुरबानी करने के बाद आप भीतर-ही-भीतर उसका चिन्ता करते रहेंगे, तो आपका त्याग बेकार हो जाएगा और उसकी सारी शक्ति नष्ट हो जाएगी और किसी मनुष्य के उपचार करने पर भी उसका मन अच्छा-अच्छा पाने का ही विचार करता रहता हो, तब जैसा होता है—वैसे ही दुनिया आप पर दया करेगी और आपको धिक्कारेगी। ऐसा मनुष्य घृणा का पात्र और दंभी माना जाता है, और उसकी कोई गिनती नहीं होती। मगर यदि आपके किए हुए सांसारिक वस्तुओं के *त्याग के साथ-साथ—अन्दर भी त्याग को भावना* पैदा हुई होगी, तो दुनियावी चीजों की आपकी हानि, आपको निराश करने या आपकी आत्मा को कुंठित करने के बजाय आपकी आत्म-शुद्धि का साधन बन जाएगी—और दूसरों की सेवा के लिए आपको अधिक योग्य और अधिक अच्छा बनाएगी।

— सरदार पटेल के भाषण, पृ० २६६-२७०

बहनों से

अगर आपको बहादुरों की माता बनना हो, तो घर के नौजवानों को बाहर निकालिए। जो जेल से डरते हों, उनसे कहिए कि मौत किसीको छोड़नेवाली नहीं। तिजोरी में घुस जाओगे, तो भी वह तुम्हें पकड़ लेगी। तो फिर उससे क्यों भागें?—इस देह की ममता झूठी है। उसका मोह क्या रखा जाए? जो मर्द का नाम धारण करता है, ऐसे एक को भी घर में मत रहने दीजिए। आपके घरों में जो भी जवान हों—चाहे वे आपके पति हों, भाई हों या लड़के हों—वे घर में नहीं रखने चाहिए। उनसे कहो कि जाओ युद्ध में, जब तक लड़ाई जारी

है तब तक घर में मत रहो। कोई भय मत रखो। भय रखोगी तो नरक में वास होगा।...जिन्हें डर लगता हो, उनसे आप तलाक ले लीजिए। जो गोलियों से, सिर फूटने से या जेल से डरते हों, उन नामर्दों के साथ शादी नही करनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण पृ०, २३७

वहादुर

जो जन्म लेता है वह मरता है, सो जानते है ? मृत्यु विना किसी का छुटकारा नहीं। नामर्दों की तरह मरने के वजाय; वहादुरों और इज्जतवालों की मौत मरना सीखिए। तोपों के धड़ाके होते हों, हवाई जहाजों से वम गिरते हों, और टपाटप मनुष्य मरते हों, तब भी इतिहास में नाम तो होता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२०

वहादुर आदमी मुसीबतों से घवराते नही हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ६०४

वहिष्कार

वहिष्कार करने का हमें हक है, मगर वह अपने ही आदमियों का। हमारी बड़ी जातियों में से जो दीमक पैदा हो जाए, उसके खिलाफ वहिष्कार कीजिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५५

वहिष्कार का वल आत्मरक्षा के लिए है। जैसे उगते हुए छोटे-से पौधे को वाड़ की जरूरत है, दीमक न लगने के लिए गेरू या डामर की जरूरत है, वैसे ही स्वतन्त्रता का स्वाद चख-कर, स्वतन्त्र रूप में अभी अभी पैरों पर खड़ा रहना सीखे हुए समाज को समाजद्रोहियों से वचने के लिए वहिष्कार की जरूरत है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५५

विलायती कपड़े के बहिष्कार की बुनियाद चरखा और खादी है। जब तक उसकी पक्की व्यवस्था नहीं करेंगे, तब तक सब काम कच्चा है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २४२

हमें बहिष्कार करके मनुष्यत्व नहीं खोना है, विरोधी को मनुष्य बनाना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५५

बहुमत का आदर

जनसेवा का काम करनेवाली संस्थाओं में मतभेद या विचार-भेद हो सकता है। फिर भी जहां महान् सिद्धांत का प्रश्न न हो और अन्तरात्मा को दबाने का प्रश्न न हो, वहां एक-दूसरे के विचारों या मतों में चाहे जैसा तीखा भेद हो, तो भी बहुमत का आदर करके उसके अनुकूल हमें बन जाना चाहिए। हम सब लोग हमेशा एकमत नहीं हो सकते। इसी प्रकार हर समय हम जैसा सोचें, वैसा भी हरगिज नहीं हो सकता।

—सरदार की अनुभव-वाणी पृ० १०८

वाचालता

बहुत बोलने से कोई लाभ नहीं, बल्कि हानि होती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८०

बाल-विवाह

अगर मेरी सत्ता हो, तो जो बारह-तेरह वर्ष की लड़कियों की शादी कर देते हैं, उन्हें बन्दूक से मारने या फांसी के तख्ते पर लटकाने का कानून पास कराऊं। चौदह-पन्द्रह वर्ष की लड़कियां मां बन जाएं, बहुत-सी बाल-विधवाएं हो जाएं, तो फिर अकाल नहीं पड़ेगा तो क्या होगा?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०६

क्या छोटे-छोटे वच्चों की शादी कर देने से कभी किसी जाति का कल्याण हो सकता है? जो लोग सीने पर गोलियां झेलने के लिए तैयार होने का दावा करते हों, वे कभी अपने छोटे-छोटे वालकों का विवाह कर सकते हैं? क्या उनके लिए सरकार को एक खास उम्र से पहले वच्चों की शादी वन्द करने का कानून वनाना पड़ता है? अगर हमारे सुधार के लिए सरकार को कानून वनाने पड़ते हों, तो हम उसके साथ कैसे लड़ सकेंगे?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १५६

छोटी-छोटी लड़कियों पर स्त्री का सारा वोझा लादकर उन्हें कुचल न डालें। वे एक कोमल पुष्प हैं, खिलती हुई कली हैं, उन्हें असमय ही क्यों मारते हैं? अगर पहले की स्थिति लानी हो, धर्मराज्य, रामराज्य लाना हो, और आपमें वाप-दादों का दिल हो, तो हिम्मत रखें और अच्छी वातों पर अमल करें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०७

जो ब्राह्मण गुड्डे-गुड़ियों का विवाह करने के लिए स्मृतियां उद्धृत करते हैं, वे ब्राह्मण नहीं राक्षस हैं, और जो मां-वाप इन ब्राह्मणों की वात मानकर, वच्चों के विवाह की काली माता को भेंट चढ़ाते हैं, वे स्वयं पशु हैं। मेरे हाथ में कानून हो तो मैं ऐसे लोगों को गोली से उड़ा देने की सजा निश्चित करूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१२

वचपन में वच्चों की शादी करके, कच्ची उम्र में उन पर गृहस्थी का वोझा लाद देना—इसके वच्चों की हत्या करने के वरावर है।

बाह्य आक्रमण

हमारे मुल्क के ऊपर कोई बाहर से हमला करे, ऐसी नौबत हम कभी न आने देंगे। दुश्मन को हमारा दरवाजा कभी खुला नहीं मिलेगा। हम उसका बराबर बन्दोबस्त करेंगे।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १७८

बुद्धि

आज के जमाने में कोई कौम यह दावा नहीं कर सकती कि वही मार्शल है। वे दिन चले गए, जब इस तरह की बातें सोची जाती थीं · तो यह किसी कौम का दावा नहीं कि तलवार सिर्फ उसी के हाथ में है। आजकल एटम बम का जमाना है, अक्ल का जमाना है। अब अकेली जिस्मानी ताकत काम नहीं कर सकती। आज अक्ल वाले के हाथ में ही सबकी बागडोर है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८४-८५

ईश्वर ने नख-सिख तक सुन्दर शरीर तो दे दिया, मगर हम उसकी दी हुई बुद्धि का उपयोग न करें, तो दोष ईश्वर का नहीं, बल्कि हमारा अपना है। मनुष्य बुद्धि का उपयोग नहीं करते, आंखें होते भी नहीं देखते, इसीलिए दुःखी होते है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४२

हमारी बुद्धि धोखा देने के लिए नहीं है। वह हमें भगवान ने सदुपयोग करके औरों को सुख पहुंचाने के लिए दी है। हमें गरीब और दुःखियों की सहायता करनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १०५

बुरा न चाहो

तोप-बन्दूक से मारना आसान है। परन्तु हम कोई भूल तो नहीं कर रहे हैं, किसी का बुरा तो नहीं चाहते हैं—रोज यह विचार करते रहना और सावधान रहना ज्यादा मुश्किल है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४४७

बूढ़ों का अनुभव

मुझे जवानों के उत्साह से जितनी प्रेरणा मिलती है, उतना ही बूढ़ों का अनुभव भी साथ जोड़ना चाहता हूं। बूढ़ों की हंसी उड़ाने वाला, बाप की विरासत खो देता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८१

बेकार

बेकार मत बैठिए। बेकार बैठने वाला सत्यानाश कर डालता है। इसलिए आलस्य छोड़िए। रात-दिन काम करनेवाला इन्द्रियों को आसानी से वश में कर लेता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२१

भंगी

बचपन में हम जितनी गंदगी करते हैं, वह माता साफ करती है। इसी तरह से भंगी हमारी माता का काम करते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४३६

भगतसिंह

भगतसिंह और उसके साथियों की देशभक्ति, हिम्मत और कुरबानी के सामने मेरा सिर झुक जाता है। इन युवकों को दी गई फांसी की सजा को देश-निकाले में बदल देने की लगभग सारे देश की मांग होते हुए भी सरकार ने उन्हें फांसी दे दी है। इससे प्रकट होता है कि मौजूदा शासनतंत्र कितना हृदयहीन है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २४५

भगवान

भगवान सबसे दुःखी मनुष्यों में रहता है। वह महलों में नहीं जाता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२०

भय

क्या किसी ने खतरे के डर से भी जनता की उन्नति के महान् प्रयोग छोड़े हैं ? इतना बड़ा साम्राज्य बनाने वालों ने खतरे का डर रखा होता, तो आज उसका अस्तित्व कहां होता ? रेलवे और जहाज दोनों के सफर में दुर्घटनाओं का डर तो रहता ही है। तो क्या इससे कोई यह सफर न करने की सलाह देगा ? समझदार आदमी का कर्त्तव्य है कि वह खतरे से बचने के लिए यथाशक्ति सावधानी रखे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १६

जो हिंसा के बल पर सारी तैयारी करते हैं, उनके दिल में डर के सिवाय और कोई चीज नहीं होती।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४४१

डर सबको चाहिए, मगर वह डर ईश्वर का होना चाहिए—किसी मनुष्य या सत्ता का डर नहीं होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८७

मिट्टी के घड़े से असख्य ठीकरियां बनती हैं, फिर भी उनमें से एक ही ठीकरी मिट्टी के सारे घड़े को फोड़ने के लिए काफी होती है। घड़े से ठीकरी डरे ? वह घड़े को अपने जैसी ठीकरियां बना सकती है। फूटने का डर किसी को रखना चाहिए तो उस घड़े को रखना है, ठीकरियों को क्या डर हो सकता है ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४५

हम डर मिटाकर दूसरे को डराएं, तो इसके जैसा दूसरा कोई पाप नहीं ! —सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३१

भवितव्य

कौन आदमी किस समय खतरे में पड़ जाएगा—यह कौन जानता है ? यह सब ईश्वर की माया है, इसलिए उसके भरोसे रहना ही उत्तम मार्ग है। —सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११४

जिस समय जो होने वाला है, वह होकर ही रहता है। और वह भी हमारा सोचा या हमारा किया हुआ नहीं होता। ईश्वर की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता। फिर भी झूठा अभिमान करने वाला मनुष्य, मैं स्वयं करता हूं ऐसा मानकर, व्यर्थ ही सारे जगत का भार अपने सिर पर लेकर घूमता है और दुःख भोगता है। अतः हमारे लिए उत्तम मार्ग यही है कि जिस समय जो स्थिति आ पड़े, उस स्थिति में हम आनन्द में रहें। —सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११४-११५

भगवान पर भरोसा रखकर हर एक दुःख का दोष केवल भाग्य पर ही डालने का आदी होने के कारण उसमें आत्म-विश्वास का अभाव पैदा हो गया है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१४

भारत

जब संसार के लोग नंगे फिरते थे, तब हिन्दुस्तान के वैभव से तमाम दुनिया चकित थी। मगर आजकल दलाली के सिवाय और कोई काम नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २३४

यह हिन्दुस्तान—प्राचीन हिन्दुस्तान—अहिंसा और प्रेम का सन्देश दुनिया को दे तो उसका कर्त्तव्य पूरा हो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५८२

हमारी भारत-भूमि की एक बड़ी विशेषता है। चाहे जितने उतार-चढ़ाव आएं, तो भी पुण्यशाली आत्माएं यहां जन्म लेती ही हैं।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० १०९

भारतवासी

आपका भविष्य आपके भूत की तरह शानदार है। आप दुनिया में सबसे बड़ी पदवी हासिल कर सकते हैं। हमारे मुल्क

में गांधीजी जैसी हस्ती पैदा हुई। दुनिया-भर के लोग उनके रास्ते पर चल रहे हैं। और वही रास्ता सही है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८६

भारतीय मुसलमान

कुछ लोग कहते है कि भई, हमारे यहां सेक्यूलर स्टेट (धर्म-निरपेक्ष सरकार) चाहिए। यहां हिन्दुओं का साम्प्रदायिक राज नहीं होना चाहिए। कौन कहता है कि यहां साम्प्रदायिक राज बनाओ? हिन्दुस्तान में तो आज भी तीन-चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं। यहां साम्प्रदायिक राज कैसे हो सकता है? लेकिन एक बात यह है कि हिन्दुस्तान में जो मुसलमान पड़े हैं, उनमें क़ाफ़ी लोगों ने—शायद ज्यादातर लोगों ने पाकिस्तान बनाने में साथ दिया था। ठीक है, अब एक रोज में, एक रात में उनका दिल बदल गया, वह मेरी समझ में नहीं आता। अब वे सब कहते हैं कि हम वफ़ादार हैं, और हमारी वफ़ादारी में शंका क्यों करते हो? अपने दिल से पूछो। यह बात हमसे क्यों पूछते हो? यह हमसे पूछने की बात नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १७५

हिन्दुस्तान के मुसलमानों से मैं पूछता हूं कि आपकी क्या राय है? जब तक आप अपना दिल नहीं बदलेंगे, तब तक मुहब्बत कैसे होगी? तो आप लोगों को भी पाकिस्तानियों से कहना चाहिए कि इस तरह से लड़ने से फ़ायदा क्या? दो-ढाई साल तो हो गए। शेख अब्दुल्ला को समझाओ, कश्मीर के मुसलमानों को समझाओ। यदि वे पाकिस्तान में जाना चाहते है तो हम जबरदस्ती थोड़े ही रखने वाले हैं। लेकिन वे चाहते हैं कि हमें इधर ही रहना है, क्योंकि हमारा तो सैक्यूलर (धर्म निरपेक्ष) स्टेट है। और हमने कश्मीर के चन्द मुसलमानों के

लिए ही इसे सेक्यूलर स्टेट थोड़े ही बनाया है। तीन करोड़ मुसलमान पहले ही हमारे यहां पड़े हैं। जितने आपके यहां मुसलमान हैं, करीब उतने ही हमारे यहां भी हैं। उनका बोझ हम किस तरह से उठाएंगे, अगर रात-दिन लड़ते रहेंगे?

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८६

भाषण

मनुष्यों के दिल सुन्दर व्याख्यानों से नहीं हिलाए जा सकते, और हिलाए जा सकते हों तो भी क्षणभर के लिए ही। यदि हमें कोई बड़ा काम करना हो, तो करके ही दिखाया जा सकता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २१६

भिक्षा

भिखारीपन को प्रोत्साहन देना तो मैं अधर्म समझता हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १२३

भूख

कोई नंगे-भूखे हों तो उनका इंतजाम कीजिए। पेट का जला—गांव को जला देता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०४

शहरों में कोई भूखे और बेकार लोग हों, तो वे उपद्रव की जड़ है। उन्हें बचाना चाहिए। ऐसे लोगों की मदद के लिए उचित हिस्सा दीजिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०६

भोजन

बहुत गरम भोजन नहीं खाना चाहिए। बासी और ठंडा भोजन भी नहीं खाना चाहिए। चाय और आइसक्रीम का त्याग करना चाहिए। दांतों की अच्छी तरह सभाल रखनी चाहिए।

दांत अच्छी तरह साफ करने चाहिए। भोजन के बाद मुंह को अच्छी तरह साफ करके दांत साफ करने चाहिए। रात में सोने से पहले दांतों की सफाई करनी चाहिए। कपड़े अच्छी तरह साफ-सुथरे रखने चाहिए। शरीर को स्वच्छ रखना चाहिए। ये सब आदतें हमारे लिए स्वाभाविक बन जानी चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११४

मंदिर-प्रवेश

अपने मंदिरों को अछूतों के लिए खोलकर सच्चे देव-मन्दिर बनाइए। आपके ब्राह्मण-ब्राह्मणेतर के झगड़ों की दुर्गंध भी कंपकंपी लाने वाली है। जब तक आप इस दुर्गंध को नहीं मिटाएंगे, तब तक कोई काम नहीं होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २०२

मजदूर

मजदूर को राहत मिलनी चाहिए और उसको प्रोत्साहन मिलना चाहिए, ताकि वह ज्यादा-से-ज्यादा काम करे।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ४६

मेरा ऐसा निश्चित मत है कि मजदूर वर्ग का कल्याण इसी में है—कि उनकी समस्याओं को अराजनीतिक दृष्टि से देखा जाए और हल करने का प्रयत्न किया जाए। अर्थात् मजदूर वर्गों के हितों की दृष्टि से ही देखकर उन्हें हल किया जाए। कम्युनिस्टों की फिलॉसफी इससे भिन्न है। कुछ दूसरे लोग, कम्युनिस्टों ने मजदूरों की समस्या को जिस तरीके से हल करने का प्रयत्न किया है, उसके साथ सहानुभूति रखते हैं, यद्यपि उस तरीके ने मजदूर वर्गों को नुकसान ही पहुंचाया है।

—सरदार का पत्र आ० एम० सईकर को १३-१०-१९४७

यह मजदूरों का, श्रमजीवियों का जमाना है। उनका उदय हो रहा है। रूस में धनिकों को खत्म कर दिया गया है। गांधी-

वाद और उसमें इतना ही फर्क है कि एक प्रेम से काम लेता है, तो दूसरा तलवार से।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४४६

मजदूर आन्दोलनकारी

मजदूर आन्दोलनकारियों से निपटने के लिए और उनमें अनुशासन रखने के लिए निस्सदेह सख्ती करना जरूरी है। यदि हम सख्ती नहीं कर सकते, तो हम हुकूमत भी नहीं कर सकते। सरकार धमकी देनेवालों को नहीं बख्शेगी। बहुत से मामलों में तीनों पक्षों—अर्थात् मजदूरों, पूंजीपतियों और सरकार का हित समान होता है। हमें आपस के सलाह-मशविरे से काम करना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १०१

मजदूर-नेताओं से

आपने एक दिन की हड़ताल करवाई, तो आप कहते हैं कि आपकी लीडरशिप कायम हो गई। एक दिन की हड़ताल से कभी मजदूरों की लीडरशिप सिद्ध नहीं होती। आपकी लीडरशिप तो तब सिद्ध होगी, जब आप मजदूरों के पास से ऐसा काम कराएंगे, जो मजदूरों को पसन्द नहो, लेकिन काम है। अगर हम इस तरह से काम कर सकेंगे, तो हम अपने मजदूरों को स्वराज्य में सही तालीम भी दे सकेंगे। दूसरी तरह से काम नहीं चलेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १८१-८२

मजदूर-संगठन

अगर हम 'दुनिया के मजदूरो एक हो जाओ' के सूत्र पर बैठे रहे तो वह मृगतृष्णा के समान है। रंग, प्रान्त और देश का भेद भुला देने पर ऐसा हो सकता है। आज अगर कोई यह

कहता हो कि जर्मनी के मजदूर हिन्दुस्तान के मजदूरों के लिए लड़ेंगे, तो मुझे उसका मुंह देखना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३६७

दुनिया के मजदूर एक हों—यह एक सुन्दर आदर्श है। मुझे अच्छा तो जरूर लगता है, मगर सपने मुझे कुछ अच्छे नहीं लगते। जब जाग्रत अवस्था में आते हैं, तब सपने झूठे मालूम होते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३६५

मन

शरीर की रक्षा का आधार बहुत-कुछ हमारे मन पर रहता है। सुख-दुःख को समान मानने की आदत हमें डालनी चाहिए, और अस्वाद व्रत का स्मरण करना चाहिए। इससे जीभ मान जाती है, और शरीर भी समझ जाता है।

—सरदार की अनुभव-वाणी पृ० ११३

मनुष्य

प्रकृति ने हरएक मनुष्य में चेतना का अंश रख दिया है। उसका विकास करके मनुष्य उन्नति कर सकता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०२

मनुष्य-स्वभाव का जितना मुझे ज्ञान है, उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि आदमी कभी भी बदल सकता है। यहां तक कि मृत्यु-शय्या पर भी जो पश्चात्ताप किया जाता है, उसे बड़ा धार्मिक महत्त्व दिया जाता है। इसलिए पिछली भूल को भविष्य के लिए अविश्वास का आधार बनाना—मनुष्य-स्वभाव की मौलिक अच्छाई में शंका प्रकट करना है। मनुष्य स्वभाव से अच्छा होता है यह हमारे दर्शन का एक तत्त्व है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६३

मनुष्य में अनेक इन्द्रियों का ज्ञान है। जानवरों में एक ही इन्द्रिय का ज्ञान है। जो अपनी आंख में मैल नहीं रखता, कुदृष्टि नहीं डालता, और जिसने संयम रखा है, उसकी आत्मा अन्त में ईश्वर में मिल जाती है। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७०

मर्यादा

आप अपनी शक्ति के अनुसार ही अपनी मर्यादा निश्चित करें। सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ८७

बोलने में मर्यादा मत छोड़ना। गालियां देना तो कायरों का काम है। —सरदार पटेल के भाषण, पृ० २३२

मित्रता

मेल का वातावरण पैदा कीजिए। कोर्ट-कचहरियां छोड़ दीजिए। गांव को सीधे रास्ते लगाने की कोशिश कीजिए। गांव में पंचायत हो, तो उस पर गांव का प्रेम बरसना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०१

मित्रता और एकता

आज की हालत में यदि हुकूमत रखनी है, तो सबको आपस में झगड़ा नहीं करना चाहिए। यह लोकराज है, सबको एक रहना है। हमें एकदिल होकर काम करना चाहिए।···तुम आपस में झगड़कर हमारे मुल्क की तरक्की रोक रहे हो। तुममें इत्तफाक होना चाहिए। एक-दूसरे को मैल धो देना चाहिए, एक ही आवाज से काम करना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ८६

मिलकर काम करें

अगर हम गरीबों और अछूतों से सहानुभूति जताकर उनका साथ दें, और उनके साथ कपड़ा बुनने का काम भी कर सकें,

तो उससे देश का कल्याण ही होगा। इस प्रकार के रचनात्मक काम में न लगकर अगर हम सब लोग सिर्फ गवर्नमेंट से ही उम्मीद करेंगे, और गवर्नमेंट को शिकायत करते रहेंगे कि उसने यह नहीं किया, वह नहीं किया—तो उससे काम नहीं चलेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ११८

मुक्ति के लिए दुःख

जब बच्चे का जन्म होता है, तब माता को बहुत दुःख होता है। परन्तु जब बालक पैदा हो जाता है, तब माता के हृदय से प्रेम का झरना फूटता है। उसी तरह जब एक कौम मुक्त होने की कोशिश करती है, तब उस पर अत्यन्त दुःख आ पड़ता है। परन्तु जब वह मुक्त हो जाती है, तब उसे शान्ति मिल जाती है। जब बरसात आने को होती है, तब बहुत गरमी पड़ती है, बादल गरजते हैं और बिजली कड़कती है। परन्तु जब बरसात हो जाती है तब ठंडक हो जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३५२

मुसलमान

यदि एक भी मुसलमान को, जो हिन्दुस्तान के प्रति वफादार है और जिसने आजादी की लड़ाई में हमारा साथ दिया है और हमारे साथ मुहब्बत से रहा है, यहां से जाना पड़ेगा—तो उससे बड़ी शर्म की बात और कोई नहीं होगी।

—भारत की एकता का निर्माण पृ० ७१

मैं आज बड़े अदब से कहना चाहता हूं कि मैं मुसलमानों का दोस्त हूं और दोस्त का काम है कि सच्ची बात कह दे और धोखेबाजी न करे तो मैं कभी मुसलमानों के साथ गलत बात नहीं करूंगा। मैं साफ-साफ कहना चाहता हूं कि अब हिन्दुस्तान के मुसलमानों को वफादारी का वक्त आया है। उनमें से प्रत्येक

के दिल में हिन्दुस्तान के लिए पूरी-पूरी मुहब्बत हो, और वह समझे, उसे हिन्दुस्तान में ही रहना है। उन्हें समझ लेना चाहिए कि पाकिस्तान से उनका कल्याण नहीं होने वाला है। पाकिस्तान उनकी रक्षा नहीं कर सकता। तब उनका कर्तव्य हो जाता है कि जिस नाव में बैठे हैं, उसी नाव का हित सोचे, क्योंकि उन्हें भी उसी नाव से चलना पड़ेगा। नाव चलाने में उन्हें साथ भी देना पड़ेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ७०

मूर्ख

आंखें होते हुए अन्धा बननेवाले को कोई रास्ते नही लगा सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३१२

मृत्यु

प्राण लेना इस दुनिया में और किसी के हाथ में नही है। जाने का वक्त आया, तब बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी पलभर में चले गए और उन्हें कोई रोक नहीं सका। बड़ी सल्तनत भी इसी तरह अपने पापों के भार से चली जाएगी, तब उसे कोई रोकनेवाला नहीं है। कोई सत्ता यह घमण्ड रखती हो कि वह लाठियों, गोलियों या बमों से अपनी हुकूमत चला सकेगी, तो यह मिथ्याभिमान है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २४१

प्राण लेने का अधिकार तो ईश्वर को है। सरदार की तोप-बन्दूकें हमारा कुछ नहीं कर सकतीं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२६

मृत्यु ईश्वर-निर्मित है। कोई किसी के प्राण न ले सकता है, न दे सकता है। जनता की रक्षा के लिए हम अपने प्राण हथेली

पर रखकर चलें, तो ही यह कहा जाएगा कि हमने स्वतन्त्रता का पहला पाठ पढ़ लिया।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५११

मृत्यु निश्चित है। पुण्यात्मा मनुष्य कभी नहीं मरता। राम और कृष्ण के नाम उनके कृत्यों से ही अब तक अमर है। मौत तो जन्म से ही साथ है, और मरने के बाद दु:ख भी क्या होगा? दु:ख तो यहां भी है। शायद वहां इससे भी कुछ ज्यादा अच्छा हो। इसलिए मौत का भय तो छोड़ ही दीजिए। हिम्मत होगी तो भगवान भी मदद करेगा!

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५३५

मौत का डर दिल से निकाले बिना बहादुरी नहीं आएगी। किसी भी हुकूमत के पास ऐसी बन्दूक या तोप का गोला नहीं है, जो जिसकी मौत न आई हो उसे मार सके। और जिसकी मौत आ गई हो, उसमें प्राण डालने की ताकत भी किसी में नहीं है। ऐसी चीज न किसी को मिली, न कभी मिलेगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५०३

मौत तो एक ही बार आती है, दो मर्तबा नहीं—और वह करोड़पति या गरीब, किसीको भी नहीं छोड़ती। तो फिर उसका क्या डर? हम मौत का डर छोड़कर निर्भय बन जायें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २२६

यम के दूत से कोई छिपा नहीं रह सकता। वह तो दुनिया के परदे पर किसी भी जगह से ढूंढ़ लेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ९७

मेहनत

मेहनत करके रोटी पैदा करनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४०५

याद रखो कि मेहनत मनुष्य को ईश्वर की दी हुई सबसे बड़ी शक्ति है। मेहनत मनुष्य की शोभा है। जो मेहनत करता है, वह उत्तम मनुष्य है। जो परिश्रम नहीं करता है, और सिर्फ जबान हिलाकर खाता है, वह ईश्वर का चोर है। ईश्वर ने तुम्हें मेहनत करने की शक्ति दी है। उसका सच्चा उपयोग करोगे, तो जितने सुखी तुम हो सकते हो उतना और कोई नहीं हो सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३४५

म्युनिसिपैलिटी के अधिकारी

म्युनिसिपैलिटी का काम बहुत ही अच्छा, बल्कि सबसे अच्छा काम है। इसलिए म्युनिसिपैलिटी के प्रमुख को भंगी कहते हैं। वह भंगी की प्रतिमा है। वह झाड़ू का काम करनेवाला है। इसका मतलब यह है कि शहर को साफ रखना और शहर को सुखी रखना, यह म्युनिसिपैलिटी के अधिकारियों का कर्तव्य है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ११६

यंत्र

मशीन पश्चिम की यांत्रिक संस्कृति की उपज है। उसके प्रवाह में आज सारी दुनिया बह रही है। हमारा भारत और चीन, ये दो देश पुरानी और उससे भिन्न संस्कृति के उपासक थे। लेकिन वे भी आज यांत्रिक संस्कृति के प्रवाह में बह रहे हैं। इसलिए समूची दुनिया विनाश के मार्ग की ओर तेजी से बढ़ रही है। लेकिन हमारे सोचने से क्या होता है? ईश्वर का सोचा ही होगा। हमें ऐसा मान लेना चाहिए कि उसने जो सोचा होगा, वह ठीक ही होगा।

—सरदार की अनुभव-वाणी पृ० ११८

युवकों से

आप नौजवान लोग जो 'क्रान्ति की जय' और 'साम्राज्यवाद का क्षय' आदि नारे लगाते हैं, उनसे मैं पूछता हूं कि क्या आप इनका अर्थ भी समझते हैं ? या जैसे तोता राम-राम रटता है, वैसे ही नारे लगाते है ? क्रांन्ति (रिवोल्यूशन) कहां है, यह मुझे बताएंगे ?···आप 'क्रान्ति-क्रान्ति' क्या करते हैं ? आपने अपने जीवन में तो क्रान्ति की नहीं। पुराने वहम और रीति-रिवाजों से आप चिपटे हुए हैं, परदा तोड़ने की आपमें हिम्मत नहीं। मौजूदा पाठशालाओं और विद्यालयों में जाकर आपको क्रान्ति करना है, सो कैसे होगी ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २०६

ऊटपटांग भाषण या ऊटपटांग कार्य, सहनशक्ति या स्वार्थ-त्याग की शक्ति के द्योतक नहीं हैं। कुरबानी के क्षणिक आवेश में अपने आपको खुशी-खुशी होम देने में बहादुरी भले ही हो, परन्तु किसी भी प्रकार की दलबन्दी में पड़े बिना, केवल अज्ञात रहकर—अखण्ड श्रम और अनुशासन वाला सेवामय जीवन बिताने में ज्यादा बहादुरी है। क्षणिक आवेश में आकर किए हुए बलिदान हमें नहीं चाहिए, परन्तु सतत कष्ट उठाकर त्याग-पूर्वक किए गए कामों की हमें जरूरत है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १६५-६६

जवानी को जाते देर नहीं लगती। और गई हुई जवानी फिर वापस नहीं आती। जो मनुष्य जवानी के एक-एक पल का उपयोग करता है, वह कभी बूढ़ा नही होता। सदा जवान बना रहने की इच्छा वाला मनुष्य मरते दम तक अपने कर्तव्य-पालन में जुटा रहता है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ६०

देश का कल्याण न मेरे हाथ में हैं और न गांधीजी के हाथ में; वह तो तुम युवकों के हाथ में है। हर एक देश में युवकों ने ही स्वतन्त्रता ली है, हजम की है, और भावी नौजवानों को दी है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २६१

हर एक युवक और युवती को स्वयं इतनी तालीम लेनी चाहिए कि वह राष्ट्र की रचना में—राष्ट्र-जीवन में अपना हिस्सा दे सके।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४२४

राजपूताना

राजपूताना का एक-एक पत्थर वीरता के इतिहास से भरा हुआ है, बलिदान के सुनहले कारनामों से भरा हुआ है, आपके राजपूताना की पुरानी कीर्ति आज भी हमारे दिल को अभिमान, हर्ष और उत्साह से भर देती है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५२

राणा प्रताप

राणा प्रताप ने राजपूताना को एक बनाने के लिए जिन्दगी-भर कोशिश की। राजपूताना का एकीकरण करने के लिए जितना कार्य और जितनी कोशिश राणा प्रताप ने की, उतनी और किसी ने नहीं की।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५१

राजा

असल में तो राजा ट्रस्टी है। चूंकि वह बाप-दादाओं का हक भोगता है। इसलिए जब राजा नालायक हो जाए, तब उसे गद्दी से उतार देने का हरएक देश में प्रजा को हक होता है। परन्तु हमारे देश में तो हमारे बाप-दादाओं ने हमें बहुत ज्यादा

वफादार बना दिया है, इसलिए हम अभी तक पिसे जा रहे हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७३

जालिम राजा को पदच्युत करने का प्रजा का अधिकार अनादि काल से माना गया है। इतिहास इस बात का साक्षी है। इसलिए राजा-प्रजा की योग्यता की बहस में पड़े बिना, आधुनिक युग को पहचानकर उसके अनुकूल बनने में ही दोनों का हित है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४१३

नाच-गान और वेश्याओं के नखरे पर राजा अगर पानी की तरह पैसा खर्च करे—और किसान भूखों मरें, तो वह राज्य जिन्दा नहीं रह सकता। इसलिए प्रजा जिम्मेदार हुकूमत की मांग करे, तो इसमें आश्चर्य नहीं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७२

मेरा सदा से यह विश्वास रहा है कि राजाओं का भविष्य अपनी जनता और अपने देश की सेवा में है, न कि निरंकुशता को बनाए रखने में। इसी विश्वास के अनुरूप मैंने एक अनुभव किया—कि राजाओं की और राज-परिवारों की स्थिति को पूर्णतः सुरक्षित करने के साथ-साथ, यदि उन्हें उत्तरोत्तर बढ़ने वाली कठिन और भारी जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया जाए; तो उन्हें सेवा का एक ऐसा मौका मिलेगा जो अब तक उन्हें नहीं मिल सका था—और जिसकी बहुत-से राजा दिल से और उत्सुकतापूर्वक प्रतिक्षा कर रहे थे। इससे वे निरन्तर तीखे आक्षेपों और दुर्भावना से भी बचेंगे।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १५

राजाओं के पास तो बगैर मेहनत की दौलत होती है। इसलिए वे जल्दी ही बिगड़ जाते है। ऐसा आदमी दया का पात्र है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७३

राजा की नालायकी हमारी अपनी नालायकी है। इसलिए प्रजा को तो राजा का पहरेदार बन जाना चाहिए। जब तक हम पहरा देते रहेंगे, तब तक राजा अच्छा ही रहेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७६

हमारे हिन्दुस्तान की संस्कृति के अनुसार—राजा राज्य का प्रधान तो जरूर होता है, लेकिन उससे भी ज्यादा वह प्रजा का सेवक है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ५१

राष्ट्रकार्य में भाग लो

राष्ट्र के कार्यों में सहानुभूति दिखलाना ही काफी नहीं है, उनमें बुद्धिपूर्वक भाग लेना चाहिए। हमारी भाषा कुछ भी हो, मगर जिस प्रान्त में रहें, वहां की भाषा हमें सीख लेनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३७०

राष्ट्रीय एकता

जो राष्ट्रीय एकता हमने इतनी कठिनाई से प्राप्त की है, पहले उसे हम संगठित और एकरूप तो कर लें, इसके बाद हम और विभिन्नताओं की बात करें। हम उन्हीं बातों पर ध्यान दें, जिनसे कि एकता पैदा होती है, न कि उन पर जो हमें अलग-अलग करती हैं।

— भारत की एकता का निर्माण, पृ० ११५

रियासती शासन

रियासती शासन का कोई भी दुश्मन नहीं है। बौद्धिक लोग तो यह चाहते हैं कि रियासतों के शासक और उनकी जनता सब तरह से समृद्धिशाली, संतुष्ट और खुशहाल रहें—और न ही मेरी नीति ऐसी होगी कि किसी भी प्रकार रियासतों के साथ इस नये विभाग के सम्बन्ध इस तरह के हों—कि एक-दूसरे के

आधिपत्य को बल मिले। अगर आधिपत्य का कोई भाव होगा तो वह केवल हमारे पारस्परिक हितों और कल्याण का भाव होगा। इसके अलावा हमारी और कोई भी नीयत नहीं है, और न ही हमारा अपना कोई स्वार्थ है।

भारत की एकता का निर्माण, पृ० १२

रुपया

मनुष्य रुपया कमाना जानता है, परन्तु सभी को यह मालूम नहीं होता कि कमाई का सदुपयोग कैसे किया जाय।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५७३

रोग का निदान

हिन्दुस्तान सैकड़ों वर्ष से असाध्य रोग से पीड़ित है। इस रोग की चिकित्सा करने वाला अभी तक कोई भी वैद्य नहीं मिला, और जो मिले है वे मीठी दवाई देने वाले हैं। मीठी दवाई से असाध्य रोग नहीं मिटता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ८

लगान

किसान की लगान देने की शक्ति को ध्यान में रखकर लगान जरूर लिया जा सकता है, मगर उसका उपयोग किसान की भलाई के लिए ही होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १७४

लड़ने का समय

निहत्थे स्त्री-पुरुषों, और बच्चों को निर्दयता से मारना बहादुरों को शोभा नहीं देता, यह तो पशुता और जंगलीपन है। आप सब लोगों को लड़ाई में अपनी वीरता दिखाने के अवसर मिलेंगे, लेकिन हरेक को समय और परिस्थिति देखकर लड़ने की सोचना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ६०

लड़ाई

मुझे तो प्रत्यक्ष लड़ाई में मजा आता है। पराई शतरंज जैसी चालाकी के खेलों में, जिसमें प्यादे उनके मालिक की मरजी के अनुसार चलाने पड़ते हैं, पासे फेंकना मुझे अगम्य लगता है। जो लड़ाई हम लड़ रहे हैं, वह दूसरों को कठिन वस्तु लगती होगी, मगर मुझे नहीं लगती।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १४८

लाज

जिसको कोई लाज नहीं, उसकी लाज क्या जाएगी ? जो अपनी लाज नहीं बचाता, उसकी लाज और कौन बचा सकता है ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३२०

लापरवाही

बेपरवाही में न कोई बहादुरी है, न कोई शराफत।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २६८

लॉर्ड माउंटबेटन के सम्बन्ध में

जब वायसराय के रूप में आपके छ माह के कार्यकाल का इतिहास लिखा जाएगा, तो जिस ढंग से विविध प्रकार के कठिन कार्य इन दिनों सिद्ध किए गए हैं, तथा इन निर्णायक महीनों में भारत-ब्रिटेन के सम्बन्धों में जो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, उनका बहुत बड़ा श्रेय इतिहास आपको प्रदान किए बिना नहीं रह सकता। भारत और भारत के निवासी, भावनात्मक [illegible] तथा सहानुभूति का त्वरित उपयुक्त उत्तर देने में सदा ही तत्पर रहे हैं। ब्रिटेन और भारत दोनों को परस्पर अभिमान होना चाहिए कि अंत में उन्हें आपके रूप में एक ऐसा पुरुष मिला, जो इन गुणों का भंडार है, जिसका मुख्य लक्षण शांति और

क्रियाशीलता है, जो स्पष्टवादी और उद्यमशील है, तथा सच्चे अर्थ में प्रामाणिक और कार्य-सिद्धि के लिए आतुर है।

—सरदार का पत्र लॉर्ड माउंटबेटन को, (१६-८-१९४७)

लाला लाजपतराय

लालाजी की तरह वीर, प्रभावशाली, निडर और प्रेरणादायी नेता, देशभक्त इतिहास में कम मिलेंगे। जब वह जीवित थे, उनको पंजाब का शेर कहकर आम जनता पुकारती थी, उनमें शेर की तरह शान और शराफत, तेज और बहादुरी, जोश और ताकत सभी बातें थीं। उसके साथ-साथ उनमें हृदय की कोमलता, प्रेम और भक्ति, उदारता और सत्य कूट-कूटकर भरे हुए थे।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ २१५

लोकतन्त्र की आवश्यकता

लोकतन्त्र और लोकतन्त्री संस्थाएं कुशलतापूर्वक काम तभी कर सकती हैं, जबकि जिस प्रदेश में इनका प्रयोग किया जाए, वह काफी हद तक आत्मनिर्भर हो। जब राज्य छोटे होने के कारण, अलग-अलग जगह में स्थित होने के कारण, या दैनिक जीवन में सभी आर्थिक मामलों में पड़ोसी स्वायत्त प्रदेश चाहे वह प्रान्त हो या बड़ी रियासत—पर निर्भर रहने के कारण, या बड़े कारखाने खोलने के लिए साधनों की कमी के कारण, या अपनी जनता के पिछड़ेपन के कारण, या स्वायत्त प्रशासन का भार उठाने में असमर्थता के कारण आधुनिक प्रणाली की सरकार कायम नहीं कर सकते, तब लोकतन्त्रीकरण और एकीकरण दोनों की आवश्यकता असंदिग्ध हो जाती है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० १४

हम जो कुछ बोलें, उसमें बल होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८२

वाद

जिस वाद से नैतिक पतन होता है, उसका मैं विरोधी हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ५८६

वाद-विवाद

हम समाजवाद, साम्यवाद और टीका-टिप्पणीवाद, इन सब वादों को छोड़ दें। वाद का समय जब आएगा, तब हम भी उन पर बातें कर सकते हैं। परन्तु आज हमारे पास उनके लिए समय नहीं है।

— भारत की एकता का निर्माण, पृ० १६६

विजय

जीत के समय हमें ज्यादा नम्र बनना चाहिए। हार-जीत दिलाने वाला ईश्वर है। जीतने के बाद घमण्ड करने वाला वहीं का वहीं हार जाता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ७७

विदेशी नीति

कोई भी विदेशी नीति, चाहे वह कितनी भी अच्छी तरह सोची हुई क्यों न हो, विदेशों में हमारी कोई संस्था, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, कोई विशेष असर नहीं डाल सकती, जब तक कि उसके पीछे एक ठोस शक्ति न हो। आज की अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं में किसी मामले की विजय केवल इसी कारण नहीं होती है कि वह सच्चा है और उसमें नैतिक बल है। किसी सच्चे और बलवान मामले को भी, उसे प्रस्तुत करने वाले देश की शक्ति और साख का समर्थन प्राप्त होना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण पृ० ११५

विदेशी भाषा

देशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने का अर्थ यह नहीं होता—कि विदेशी भाषाएं हमें सीखनी नहीं है या सिखानी नहीं हैं। आधुनिक संसार में कोई भी मुल्क अपनी चारदीवारी में बन्द रहकर, अकेला अपनी तमाम जरूरतें पूरी करने में समर्थ नहीं होता। दूसरे देशों के साथ सम्पर्क रखे बिना उसका काम नहीं चल सकता। ऐसे सम्पर्क के लिए विदेशी भाषाएं जानना जरूरी है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ४६२

यदि देश की असल संस्कृति का विकास करना हो, तो परदेशी भाषा और संस्कृति की जरूरत नहीं है। हमारे मुल्क में जो आर्यसंस्कृति वेद का ज्ञान था, उसको सीखने के लिए किसी विदेशी भाषा की जरूरत नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० २१४

हमारे स्वराज्य में थोड़े-से विदेशियों की सुविधा के लिए विदेशी भाषा में राजकाज नहीं होगा। हमारे विचार और शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं होगी। हमारे विद्यालयों में आचार्य विदेशी नहीं होंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० ३२

विदेशी मुद्रा

संसार की वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में, हमें विदेशी मुद्रा को किफायत से काम में लाना चाहिए। हमें विदेशों से आये हुए माल पर बहुत कम निर्भर रहना चाहिए, और अपनी जरूरी चीजें, जहां तक सम्भव हो, खुद पैदा कर लेनी चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० ११६

विद्यार्थियों से

आप ऊंची शिक्षा पा रहे हैं, इसलिए अपने गरीब भाइयों को मत भूलिए। उनकी पसीने की कमाई से ही आपको शिक्षा मिल रही है। आप कैसी भी शिक्षा लीजिए, मगर ऐसे मत बन जाइए कि जब आप गरीब किसानों में जाएं, तो जैसे मोटर को देखकर किसानों के बैल बिदकते हैं, वैसे किसान आप को देखकर बिदक जाएं। आप विज्ञान की इतनी पढ़ाई कर रहे हैं, तो आपके विज्ञान के अध्ययन का परिणाम यह आना चाहिए—कि किसान एक बाल के बदले दो बाल पैदा करने लगें, अर्थात् पैदावार दुगुनी हो जाए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० २०७

विद्रोही

चिल्लाहट मचानेवाले विद्रोह नहीं कर सकते। बगावत करनेवाले तो मूक होते हैं। वे अपना जोश अपने में भर रखते हैं, और समय आने पर उसे बाहर निकालते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृ० १८१

विद्वान्

विद्वान् तो बहुत होते हैं, लेकिन विद्या के साथ जीवन का आचरण करनेवाले कम ही हैं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृ० २१३

विधवा

इस दुनिया में हिन्दू विधवा की जैसी करुण दशा होती है, वैसी दूसरे किसी की नहीं होती। विधवा के लिए लगाए हुए समाज के बंधन, और विधवा के साथ समाज का व्यवहार इतना क्रूर और कठोर होता है, कि उसका जीवन कड़ी तपस्या ही बन जाता है। —सरदार की अनुभव-वाणी, पृ० ११६

विनय

सेवा करने वाले मनुष्य को विनय खूब सीखना चाहिए। वरदी पहनकर अभिमान नहीं, वल्कि खूब नम्रता आनी चाहिए। हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिए, जिससे हमारे लिए लोगों में आदर पैदा हो। सबको ऐसा लगे कि ये सेवा करने वाले हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६०६

हम विनय छोड़ेंगे, तो नौजवान उससे आगे बढ़कर उद्धत बनेंगे। यदि ऐसा हुआ तो हमारी लड़ाई का नतीजा उल्टा ही होगा, और हम जीतने के बजाय जरूर हार जाएंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ७

विरोधी दल

जो डेमोक्रेटिक (लोकतन्त्र) संस्था होती है, उसमें विरोधी दल का स्थान होता है। वह टीका-टिप्पणी करता ही रहता है। यह उसका धर्म है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५०६

विरोधी विचारवाला दल जितना छोटा हो, उतने ही ज्यादा विनय से उसकी बात सुनने, और उस पर अधिक शान्ति से विचार करने की जरूरत है। विरोधी पक्ष न हो, तो वाद-विवाद या चर्चा की गुंजाइश ही नहीं रहती है। केवल बहुमत के बल के घमंड में विरोधी पक्ष की अवहेलना करनेवाले, या उसका तिरस्कार करनेवाले का अपना मत बलवान सरकार से स्वीकार कराने का दावा करने का क्या अधिकार है?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ११-१२

विलम्ब

विलम्ब निश्चित रूप से असन्तोष को जन्म देता है, और उससे उपद्रव शुरू होता है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १४

विविधता में एकता

हमारा पहला काम अपने इखलाक को मजबूत बनाना है। हिन्दुस्तान में जितने मजहब हैं, अलग-अलग कौमें हैं, अलहदा-अलहदा रंग हैं, अलग-अलग कपड़े हैं, यहां तक कि बाल बनाने के ढंग भी अलहदा-अलहदा हैं। इस मुल्क में सब चीजें अलहदा-अलहदा हैं।—दुनिया की हालत देखकर हमें सोच-समझकर काम करना चाहिए। खाली तलवार से या धमकी से काम नहीं चलेगा। इनसे तो काम बिगड़ेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ८५

विश्वास

विश्वास रखकर आलस्य छोड़ दीजिए, वहम मिटा दीजिए, डर छोड़िए, फूट का त्याग कीजिए, कायरता निकाल डालिए, हिम्मत रखिए, बहादुर बन जाइए और आत्मविश्वास रखना सीखिए। इतना कर लेंगे तो आप जो चाहेंगे, अपने आप आ मिलेगा। दुनिया में जो जिसके योग्य है, वह उसे मिलता ही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३१६

वीर पुरुषों को मदद

मातृभूमि की पुकार का जिन लोगों ने सुन्दर तरीके से जवाब दिया है, और जो इस वक्त अपने परिवारों सहित बेहद कष्ट उठा रहे हैं, उन वीर पुरुषों को मदद देना—खास तौर पर उन लोगों को जिन्होंने लड़ाई में भाग नहीं लिया—पवित्र कर्त्तव्य है। इसमें चूके तो हमारी नालायकी जाहिर होगी। क्योंकि जो जाति वीर पुरुषों की कदर करना नहीं जानती, वह ऐसा कोई काम नहीं कर सकती जिसे वीरतापूर्ण कहा जा सके।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २६७

वैर

अपने दिल में कभी वैर नहीं रखना चाहिए। वैर रखना नामर्दों का काम है। एक आदमी बुरा है, इसलिए उसके ऊपर थप्पड़ लगाना बेवकूफों का काम है। उसका हाथ पकड़कर उसे मुहब्बत से उठाना चाहिए। क्योंकि वह हमारा भाई है। और मुसलमान कहां से हुए? इतने मुसलमान कहां से आए? वे परदेश से आए थे क्या? वे हमारी बेवकूफी ही से तो मुसलमान हुए थे। तो इस बारे में हमारा दोष तो है ही! वे मुसलमान इसलिए हुए कि हमने उनसे इस प्रकार का बर्ताव किया। आज भी क्या हम इस बात को समझे हैं?

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ८६

हम अपने आपसी वैरभाव मिटा दें, तो हमारा भविष्य उज्ज्वल है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६०४

हमें किसीसे द्वेष नहीं रखना चाहिए। और पिछली बातों को माफ करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। परन्तु यदि कोई मार्टर (शहीद) बनना चाहे, और खुदा के दफ्तर में इस प्रकार का नाम लिखाना चाहे कि वही कौम का खैरख्वाह है, तो उसके लिए हमारे दिल में कोई रहम-रियायत हो नहीं सकती।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ८७

व्यक्तिगत स्वार्थ

व्यक्तिगत स्वार्थ को भूलकर अच्छा काम होता है, तो उसमें भरसक मदद करने की वृत्ति रखनी चाहिए। बालिश्त-भर

जमीन दबती हो, तो उसके लिए गांव में फूट नहीं फैलानी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५०१

व्यापारियों से

अगर व्यापारी भी अपना पैसा नहीं निकालेंगे, और नोटों के गट्ठे छिपे रहेंगे, उधर गवर्नमेंट को पैसा नहीं मिलेगा और इधर कमीशन का खर्चा बढ़ता रहेगा। इससे न कोई काम होगा और न कोई फायदा होगा।—जो धन पैदा करते हैं उनमें वृद्धि होनी चाहिए, और जो व्यापारी लोग हैं, उन्हें समझना चाहिए कि इस तरह से देश डूब जाएगा—और उनका पैसा भी खत्म हो जाएगा। आपस में विश्वास और सहयोग किए बिना—इस तरह से काम नहीं चलेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ३७-३८

आपने जो रुपया ब्लैक-मार्केट में कमाया है, वह किस तरह से कमाया है, यह याद करो। अब या तो देश का काम कर लो, या पैसा बना लो। अगर आप स्वार्थ को ही देखते रहेंगे, तो यह चीज आखिर सबको डुबाएगी। आज हमारा सबसे बड़ा काम यह है कि हम दाम गिराएं। अगर दाम एक दफा गिर जाएं, तो मजदूरों को भी यह समझ आएगी कि अब खाने-पीने का दाम गिरा—तो हमारा खर्च भी कम हो गया है, अब हमें ज्यादा मांगने की जरूरत नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ३७

हमें व्यापार नफे का न करके इज्जत का करना है। हमें पराधीन रहकर, गुलामी की बेड़ियों के बन्धन में रहकर व्यापार नहीं करना है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २३५

व्यावहारिक ज्ञान

डिग्री पाए हुए मेरे पास बहुत-से लोग आते हैं। मुझे उन पर दया आती है। डिग्री और बिना डिग्रीवाले दोनों भटकते हैं, क्योंकि दुनिया की डिग्री के बगैर सब बेकार है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४०३

शक्ति

आज तो सरकार जंगल में घूमने वाले हाथी की तरह मदोन्मत्त हो गई है, जो अपनी चपेट में आने वाले हर किसी को कुचल डालता है। पागल हाथी मद में यह मानता है कि जब मैंने शेर-चीतों को मारा है, तो मेरे सामने मच्छर की क्या गिनती! लेकिन मैं मच्छर को समझाता हूं, कि इस हाथी को जितना घूमना हो उतना घूमने दे, और बाद में मौका देखकर उसके कान में घुस जा। क्योंकि इतनी शक्ति वाला हाथी भी, कान में मच्छर के घुस जाने पर तड़प-तड़पकर, सूंड पछाड़ते हुए जमीन पर लोटने लगता है। मच्छर क्षुद्र है, इसलिए उसे हाथी से डरना चाहिए, ऐसी बात नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १४५

आपमें जो जोश हो, उसे न्याय के मार्ग पर लड़ने में काम में लीजिए। अपनी शक्ति का बुरा उपयोग न कीजिए। मारने के लिए हंसिया उठाना छोड़ दीजिए। आपस में भाईचारा रखिए। विनय और विवेक से चलिए। हमारे जो हक हों, वे दृढ़ता से मांगें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३

जब तक हिम्मत है, तब तक सब ठीक है, जब हिम्मत गुम जाती है, तब मनुष्य नीति से भ्रष्ट हो जाता है—और नीति गई तो आत्मा भी गई। सब खत्म हो गया।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १२१

ताकत के बिना बोलने से फायदा नहीं है। गोला-बारूद के बिना बत्ती लगाने से धड़ाका नहीं होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २३२

हमें अपनी शक्ति को किफायत से बरतना चाहिए। हमें अपने सीमित बल का संचय करना चाहिए, जिससे कि हम उन संकटों का मुकाबला कर सकें, जिनसे हमारे कौमी अस्तित्व को भी खतरा है। अपने राष्ट्र को सच्चे और स्वस्थ ढंग पर बढ़ाना हमारा कर्त्तव्य है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ११५

हर एक मुल्क की आजादी का आधार उसकी शक्ति है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४३७

शराब-बन्दी

इस पवित्र देश में रहनेवाली हिन्दू और मुसलमान दोनों जातियों के धर्म में शराब पीने की मनाही की गई है। ऐसी हालत में राज्य की आमदनी बढ़ाने के लिए, विदेशी हुकूमत के आबकारी विभाग की नकल करके शराब का व्यापार और प्रचार करना महापाप है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १७५

जिस सुन्दर मुख मधुर से वचन और राम का नाम बोलना चाहिए, उसमें शराब या ताड़ी डालना पाप है। तुम्हारा सबसे अधिक नुकसान अगर किसी चीज ने किया है, तो इसीने किया है। तुम्हारा ख्याल है कि उससे थकान दूर होती है, मगर यह गलत है। यह तो शक्ति और धन दोनों हर लेती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४३

जो प्रजा अज्ञानी और गरीब है, जो निर्धन प्रजा राज्य के आश्रय और उच्च वर्ग की दया पर ही निर्भर रही है, उसमें

शराब का व्यापार करना—और उस प्रजा को शराबवालों के जुल्मों और तरह-तरह की मक्कारियों का शिकार होने देना सचमुच ही अत्याचार है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २०३

हिन्दुस्तान के भूखों मरनेवाले गरीबों के लिए जैसे विदेशी कपड़े का बहिष्कार आर्थिक दृष्टि से अनिवार्य है, उसी तरह शराब और नशीली चीजों का बहिष्कार भी जनता के नैतिक हित के ख्याल से उतना ही जरूरी है। सारे देश में शराब बंद करने की कल्पना, उसके राजनैतिक असर के ध्यान में आने से पहले की है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २५४-५५

शल्य चिकित्सा

मौजूदा हालत में हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहने में जनता के आत्मघात के सिवाय और क्या है? नश्तर लगाए बिना जान बचना संभव न हो, तो अच्छा डाक्टर थोड़ा-बहुत खतरा उठाकर भी नश्तर लगाने की सलाह देगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १८

शस्त्रबल

शस्त्रबल का उपयोग कायरों पर ही काम दे सकता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५५

शान्ति

आपस में झगड़ने से शक्ति नष्ट होती है। हमारी संस्कृति भी समझ-बूझकर शान्ति पर रची गई है, मरना होगा तो वे अपने पापों से मरेंगे। जो काम प्रेम से होता है, वह वैरभाव से नहीं होता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २५६

सरकार कहती है कि तुम्हें शान्ति दी। यह शान्ति किस काम की? पेट में तो चूहे कूदते हैं, खाने को अन्न नहीं, नसों में खून नहीं और आंखों में तेज नहीं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २२२

शादी

जो आदमी विवाह करता है, उसमें घर बसाने और चलाने की शक्ति होनी चाहिए। जो गृहस्थी बसाता है, उसके सिर पर जिम्मेदारी आ जाती है। अपने स्त्री और कुटुम्ब की रक्षा और भरण-पोषण करने की जिसमें शक्ति हो, उसीको इस दुनिया में शादी करने का हक है। जिसमें शक्ति न हो, उसे कुंवारा रहना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३५१

शारीरिक श्रम

तुम्हें जगत में तैरना हो तो हाथ-पैरों पर भरोसा रखो, मेहनत से मुहब्बत करो। जिसके शरीर को तालीम मिलती है, उसके दिमाग का भी साथ-साथ विकास होता है। केवल बुद्धि का विकास निकम्मा है। उससे संसार को फायदा नहीं है। बुद्धि के साथ शारीरिक श्रम के प्रेम का विकास करना चाहिए। उद्योग और विद्या का सामंजस्य होने से अद्भुत शक्ति उत्पन्न होती है। जन्म से हर एक को कुदरती शक्ति मिली होती है। उसके विकास से वह तैर या डूब सकता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४०२

शासन

स्वेच्छाचारी शासन में सयानापन नहीं होता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४७-४८

शिक्षक

बच्चों को सफाई की तालीम दीजिए, उनके घरों में प्रवेश करके उनके मां-बाप को शिक्षा दीजिए। अच्छे शिक्षक को लोग सिर पर रखकर नाचेंगे। अच्छा शिक्षक गांव का इतना प्रेम-संपादन कर ले, कि वह जाए, तब गांव रोने लगे।

सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२३

शिक्षक भले ही थोड़ी शिक्षा दे सके, परन्तु उसके चरित्र का प्रभाव पड़ता हो, तो वह बहुत कुछ कर सकता है।—इसलिए शिक्षक को जहां तक हो सके, अपना जीवन निर्मल बनाना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५७०

शिक्षकों को किसी भी तरह का व्यसन नहीं रखना चाहिए। बहुत-से शिक्षक आधी बीड़ी पीकर आधा टुकड़ा कान पर टांग लेते हैं। व्यसन धनवानों का पाखण्ड है, दुर्बल मनुष्यों का लक्षण है। जिन्हें घड़े तैयार नहीं करने—बल्कि मनुष्य तैयार करने हैं, उन्हें किसी भी तरह का व्यसन नहीं होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२३

शिक्षा का उद्देश्य

आजकल जो शिक्षा दी जाती है, वह तोतारटन्त है। उसमें विद्यार्थियों के दिल और शरीर एकरस नहीं होते, और न उनका मानसिक और शारीरिक विकास ही होता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी के मन का विकास हो, उसके शरीर का विकास हो, और आत्मा का विकास हो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८३

तालीम का अर्थ ही यह है कि कड़े-से-कड़ा हुक्म, अपमान

मालूम होने पर भी माना जाए, और बाद में विनयपूर्वक जो कहना हो सो कहा जाए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२५

राष्ट्रीय शिक्षा का उद्देश्य यह है कि किसानों के लड़के बाप-दादा की विद्या न भूल जाएं—और वापस देहात में जाकर रहें। मुझे तो गाड़ी चलाने वाले, खुरपी पकड़ने वाले, चरस खींचने वाले और हल लेकर खेती करने वाले चाहिए। आजकल तो सब को हाथ मिलाकर या जबान हिलाकर काम करना है। इस विद्यापीठ का उद्देश्य यह है, कि इसके विद्यार्थी किसानों के जीवन में परिवर्तन करने वाले बनें। यदि कोई हल पकड़कर चार-पांच बीघे जमीन जोत डाले, तब मैं कहूंगा कि वह सच्चा स्नातक है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २१३

विद्यालय से ऐसी शिक्षा लेकर बाहर निकलना चाहिए, कि कोई भी पहचान सके कि यह विद्यालय की लड़की है। उसकी बोली में मिठास है, उसके आचार-विचार में विनय और विवेक है, उसमें ऊंचे दर्जे की सभ्यता है. वह हिन्दू समाज में शोभा देने वाली चरित्रवान लड़की है—एकरस छाप उसकी लोगों पर पड़नी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५८७

शारीरिक और मानसिक शिक्षा साथ-साथ दी जाए, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। आजकल गांव इस प्रकार के हैं वैसे ही रहें, तो न बच्चे को शिक्षा दी जा सकती है, और न गांव के लोगों को ही।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८३

शिक्षा का उद्देश्य पाठशाला और गांव को एक-दूसरे का

पूरक बनाने वाला और दोनों को एकरस करने वाला होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८३

शिक्षा दो तरह की होती है। एक शिक्षा मनुष्य को मानवता का ज्ञान कराती है, और दूसरी मनुष्य से मानवता छीन लेती है; एक मनुष्य को घमंड में चूर कर देती है, और दूसरी मनुष्य को—पुरुष और स्त्री दोनों को—उसके धर्म के प्रति जाग्रत करती है। यह दूसरी ही सच्ची शिक्षा है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६२

शिक्षा का माध्यम

विदेशी भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा देने के तरीके से, हमारे युवकों की बुद्धि के विकास में बड़ी कठिनाई पैदा होती है। उनका बहुत-सा समय उस भाषा को सीखने में ही चला जाता है, और इतना समय लगाने के बावजूद यह कहना कठिन होता है कि उन्हें शब्दों का ठीक-ठीक अर्थ कितना आ गया।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५६०

शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है, तब शब्दों को याद रखने का बोझ ही विद्यार्थी के दिमाग पर नहीं पड़ता, बल्कि विषय को समझने में भी उसे बड़ी कठिनाई होती है। यह तो स्पष्ट ही है कि जहां रटने की शक्ति बढ़ती है, वहां समझने की शक्ति मंद पड़ जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५६०

निश्चित धर्म

हर एक प्रजा की उन्नति का आधार ज्यादातर उसके निश्चित धर्म पर है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १३६

श्रद्धा और शक्ति

अकेली श्रद्धा से क्या होता है ? शक्ति के बिना श्रद्धा बेकार है। किसी भी महान् कार्य को पार लगाने में, श्रद्धा और शक्ति दोनों की जरूरत है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५८

श्रमजीवी

यह जमाना श्रमजीवियों का है, बैठे-बैठे खानेवालों का नहीं है। बुद्धिवाद का युग खत्म हो गया है।—जो मेहनत करता है, उसका हक पहला है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४८

संयम

हमें अपने मन पर काबू रखना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २६

संगठन

अपनी रक्षा के लिए संगठन न करना आत्महत्या करने के बराबर है। एक वृक्ष को भी बाड़ लगाकर पशुओं से बचाते हैं, और गेरू लगाकर दीमक से बचाते हैं—तो इतनी जबरदस्त सरकार के खिलाफ जो लड़ाई शुरू की है, उसमें किसान अपनी रक्षा के लिए बाड़ क्यों नहीं लगाएंगे ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १५४

यह जमाना ऐसा है कि कोई संगठन बनाए बिना प्रगति नहीं की जा सकती। समूह में रहकर ही तरक्की की जा सकती है। एक-दूसरे के दु:ख मिटाए न जा सकें, तो भी एक-दूसरे से मिलकर जो हल्का कर सकते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६७

संगठन कीजिए। ईर्ष्या या चुगली का त्याग कीजिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ८३

संगठन के बिना संख्याबल बेकार है। सूत के बारीक तार जब अलग-अलग होते हैं, तो इतने कमजोर होते है कि हवा के झोंके से भी टूट जाते हैं। परन्तु जब अधिक संख्या में इकट्ठे होकर मुहब्बत करते हैं—और ताने-बाने में बुने जाकर कपड़े का रूप लेते हैं, तब उनकी मजबूती, सुन्दरता और उपयोगिता अद्‌भुत बन जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३१२-१३

संगठन में दूसरी चीज यह है कि आपस में आवश्यक भाई-चारा रखा जाए। जैसे बीच समुद्र में, एक नाव में बैठे हुए लोग मुहब्बत रखते हैं, वैसी ही मुहब्बत और प्रेम रखना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६८

संगति

संगति अगर अच्छी हो तो दूसरी सब बातों को आदमी भूल सकता है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११३

संगति ऐसे ही लोगों की करनी चाहिए, जो भले और चरित्रवान हों।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११५

संत

संत को दुःख देनेवाला कभी सुखी नहीं हुआ।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४७४

श्रद्धा और शक्ति

अकेली श्रद्धा से क्या होता है ? शक्ति के बिना श्रद्धा बेकार है। किसी भी महान् कार्य को पार लगाने में, श्रद्धा और शक्ति दोनों की जरूरत है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५८

श्रमजीवी

यह जमाना श्रमजीवियों का है, बैठे-बैठे खानेवालों का नहीं है। बुद्धिवाद का युग खत्म हो गया है।—जो मेहनत करता है, उसका हक पहला है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४८

संयम

हमें अपने मन पर काबू रखना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २६

संगठन

अपनी रक्षा के लिए संगठन न करना आत्महत्या करने के बराबर है। एक वृक्ष को भी बाड़ लगाकर पशुओं से बचाते हैं, और गेरू लगाकर दीमक से बचाते हैं—तो इतनी जबरदस्त सरकार के खिलाफ जो लड़ाई शुरू की है, उसमें किसान अपनी रक्षा के लिए बाड़ क्यों नहीं लगाएंगे ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १५४

यह जमाना ऐसा है कि कोई संगठन बनाए बिना प्रगति नहीं की जा सकती। समूह में रहकर ही तरक्की की जा सकती है। एक-दूसरे के दुःख मिटाए न जा सकें, तो भी एक-दूसरे से मिलकर जो हलका कर सकते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६७

संगठन कीजिए। ईर्ष्या या चुगली का त्याग कीजिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ८३

संगठन के बिना संख्याबल बेकार है। सूत के बारीक तार जब अलग-अलग होते हैं, तो इतने कमजोर होते है कि हवा के झोंके से भी टूट जाते हैं। परन्तु जब अधिक संख्या में इकट्ठे होकर मुहब्बत करते हैं—और ताने-बाने में बुने जाकर कपड़े का रूप लेते हैं, तब उनकी मजबूती, सुन्दरता और उपयोगिता अद्‌भुत बन जाती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३१२-१३

संगठन में दूसरी चीज यह है कि आपस में आवश्यक भाई-चारा रखा जाए। जैसे बीच समुद्र में, एक नाव में बैठे हुए लोग मुहब्बत रखते हैं, वैसी ही मुहब्बत और प्रेम रखना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६८

संगति

संगति अगर अच्छी हो तो दूसरी सब बातों को आदमी भूल सकता है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११३

संगति ऐसे ही लोगों की करनी चाहिए, जो भले और चरित्रवान हों।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११५

संत

संत को दु:ख देनेवाला कभी सुखी नही हुआ।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४७४

संतोष

आज दुनिया में चारों ओर दुःख ही दुःख दिखाई पड़ता है। लेकिन इसमें ईश्वर का जरा भी दोष नहीं है। मनुष्यों को सन्तोष नहीं है। लोग न तो खुद शान्ति से बैठ सकते हैं, और न दूसरों को ही शान्ति से बैठने देते हैं। लेकिन अगर सब लोग शान्ति और सन्तोष से रहें, तो दुनिया में किसीको भी दुःख न भोगना पड़े।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११८

संसार

आज की दुनिया में, जब फासले तेजी से कम होते जा रहे हैं और जनता को उत्तरोत्तर आधुनिक प्रशासन की सुविधाएं मिलती जा रही हैं, तो ऐसी व्यवस्था करने में एक दिन की भी अनावश्यक देर नहीं की जा सकती, जिससे जनता यह अनुभव करने लगे कि वह भी कम-से-कम उसी पथ पर चल रही है, जिस पर उसके पड़ोसी प्रदेश चल रहे हैं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १४

दुनिया जबरदस्त विद्यालय है। इस महाविद्यालय की डिग्रियां जल्दी-जल्दी नहीं मिलतीं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२२

संस्कृति

इस मुल्क में जितने मजहब हैं, जितनी भाषाएं हैं, उतने मजहब और उतनी भाषाएं किसी और मुल्क में नहीं हैं। लेकिन तो भी हमारे सारे मुल्क की संस्कृति एक ही है। यह हिन्दी संस्कृति है। अब हमारे देश में इतने लोग रहते हैं, वे अगर झगड़े में पड़ जाएं, तो इस प्रकार की हालत नहीं होनी चाहिए कि हमें फौज से काम लेना पड़े। यह काम पुलिस का है।

भीतर मल्क में शान्ति रखने के लिए हमें कम-से-कम पुलिस रखनी पड़े, ऐसी हालत होनी चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १९५-९६

सच्चा निश्चय

मैंने ऐसी कोई भी सरकार नहीं देखी, जो तेंतीस करोड़ की एक महान् जाति को उसकी इच्छा के विरुद्ध, तोप या मशीनगन का डर दिखाकर दबा सकें। इसलिए हमारा निश्चय अगर सच्चा ही होगा, तो निश्चित समझिए कि जीत हमारे हाथ की ही बात है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २२६

सच्ची विजय

जब तक हमारा अन्तिम ध्येय प्राप्त न हो जाए, तब तक उत्तरोत्तर अधिक कष्ट सहन करने की शक्ति हममें आए, यही सच्ची विजय है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ७३

सत्ता

निरकुंश सत्ता में नशा रहता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४८

सत्ता का दुरुपयोग न करें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ९८

सत्य

आप बिल्कुल सच्ची बातें कहें और खुशामद छोड़ दें, तो बहुत कुछ काम हो जाए। अगर सामने कुछ कहें और पीछे कुछ और कहें, तो कुछ नहीं हो सकता। इस तरह तो आत्मा को

अधोगति होती है, और यह बहुत बुरी बात है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३८३

याद रखिए कि जो सत्य की खातिर बरबाद होने को तैयार बैठे हैं, वे ही अन्त में जीतेंगे, और जिन्होंने अधिकारियों के साथ घपला किया होगा, उनके मुंह काले ही होंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १५३

सच बोलने का सदा आग्रह रखना चाहिए। गुरुजनों से कोई बात छिपानी नहीं चाहिए। हर बात उन्हें बता दी जाय, तो गलत काम करने से वे हमें रोक सकते हैं।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११५

सत्य के मार्ग पर चलना हो, तो बुरे का त्याग करना चाहिए, चरित्र सुधारना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६२

हम सबमें सच्चाई का सामना करने और व्यावहारिक रास्ता निकालने का साहस होना चाहिए। हिचक या डर को कोई स्थान नहीं, हमें साहस से काम लेना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १०१-२

हमारे पास कौनसी ताकत है, यह समझ लेना चाहिए। सत्य और अहिंसा हमारी ताकत है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३५६

सत्याग्रह

लाठी मारनेवालों को कोई सामने से पत्थर मारे, लाठी मारे और गाली दे, तब उनके भीतर का राक्षस उत्तेजित होता है। लेकिन सामना किए बिना मार खाते रहें, तो उनमें ईश्वरी भाव पैदा होता है। यही सत्याग्रह का रहस्य है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३६२

सत्याग्रह की लड़ाई में कभी हार तो होती ही नहीं। हमारे स्वार्थ-त्याग के अनुसार ही हमें फल मिलता है। राष्ट्र में जो जागृति और आत्मश्रद्धा प्रगट हुई, वह इस अवसर का सबसे बड़ा परिणाम है। इस पूंजी के जोर से हम आगे व्यापार कर सकते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३१०-३११

सत्याग्रह की लड़ाई हमेशा दो प्रकार की होती है : एक जुल्मों के विरुद्ध, और दूसरी दुर्बलता के विरुद्ध।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३११

सफाई

जैसे हम अपना शरीर और कपड़े साफ रखते है, वैसे ही अपना गांव साफ रखना हमारा काम है। यह क्या राज्य का काम है? घर साफ रखना चाहिए, गांव साफ रखना चाहिए। गन्दगी में ईश्वर नहीं आता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२०

सभ्यता

जिसे स्वतन्त्रता का उपयोग करना है, उसका चाल-चलन कैसा हो? उसके मुंह से गाली और भद्दी भाषा नहीं निकलनी चाहिए। सभ्य वचन ही निकलने चाहिए। वह किसीका अपमान न करे, किसीके साथ तू-तड़ाक न करे, और किसी को गालियां न दे। पहली पढ़ाई यही है कि सभ्यता से बोलना सीखें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४३

समझ की कमी

कोई आदमी पत्थर को हीरा मानकर उसे लम्बे समय तक बचाकर रखे, और संकट के वक्त पर उसे भुनाने जाए और

पछताए, तो इसमें पत्थर का क्या दोष ?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १४

समझौते का समय

जल्दी करने से आम नहीं पकते। अगर आम पर से कच्ची कैरी तोड़कर खाएंगे, तो दांत खट्टे होकर टूट जाएंगे, और कैरी को तोड़ने में भी कष्ट होगा। फल को पकने दें, तो वह अपने आप गिर पड़ेगा और उसके अमृतरूपी रस का लाभ भी मिलेगा। इसी तरह जब समझौते का समय आएगा, तब सच्चा लाभ मिलेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २३७-३८

समय के साथ

हमें आज का जमाना पहचान लेना चाहिए। और जमाने को पहचान कर उसी रास्ते पर हमें चलना चाहिए। जो समय को नहीं पहचानता, उसको पछताना पड़ता है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ५३

समय पर काम

आम का फल बेवक्त तोड़ोगे, तो वह खट्टा लगेगा। दांत खट्टे हो जाएंगे। मगर उसे पकने देंगे तो वह अपने आप टूट पड़ेगा, और अमृत के समान लगेगा। अभी समझौते का समय नहीं आया है। समझौता कब हो सकता है? जब सरकार की मनोदशा बदले और जब उसका हृदय-परिवर्तन हो, तब समझौता हो सकता है। तब हमें लगेगा कि उसमें कुछ मिठास है। अभी तो सरकार वैरभाव से तिलमिला रही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १५६

समाजवादी

जितने लोग सोशलिस्ट का लेबल लगाते हैं, वे सब सोशलिस्ट है, ऐसा न मानिए। जितने लोग कैपिटलिस्टों के दोस्त हैं, उनके साथ घूमते हैं, उन सबको कैपिटलिस्टों का एजेण्ट कह दिया जाता है, परन्तु उससे काम खत्म नहीं होता। लेकिन मैंने कलकत्ता में भी कहा था कि मैं सोशलिस्ट का लेबल तो नहीं लगाता, लेकिन मैं अपनी कोई प्रॉपर्टी (जायदाद) नही रखता। जब से गांधीजी का साथ हुआ, तभी से। और मैं भी आपके साथ सोशलिस्टों में था। उससे भी आगे जाना हो तो उसमें मुकाबला करने को तैयार हूं। लेकिन हिन्दुस्तान की बरबादी होने के काम में मैं कभी साथ नहीं दूगा। उसमें आप कहें कि मैं सोशलिस्टों का ऐजेण्ट हू, जो चाहें सो नाम लगाइए, लेकिन मैं इस रास्ते पर हिन्दुस्तान को नहीं चलने दूंगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ११०

समानता

जहां ईश्वर ने सबको बराबर बनाया है, वहां गुलाम और मालिक कैसे हो सकते हैं? दुनिया में किसी की तीन आंखें और चार हाथ नहीं होते। सबको दो आंखें और दो हाथ दिए गए है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४२

सरकार

गन्दी एवं अशुद्ध राजनीति चलानेवाली सरकार को ऊंचे चरित्रवाले पुरुषों का हमेशा डर रहता है, मगर शुद्ध राजनीति वाले राज्यों के तो ऐसे पुरुष आधार-स्तम्भ होते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १८

सलाह

रुचिकर सलाह तो सभी मानते हैं, परन्तु अरुचिकर सलाह भी आप मानने लगेंगे, तब ही स्वराज्य की स्थापना करना संभव है। अगर आप सिर्फ अपने को पसन्द आए, उतना ही हमारा कहना मानेंगे, तब तो हमारा पतन ही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६७

सहायता

सुखी होना तुम्हारे ही हाथ में है। जिसे सुखी होना है, उसे ईश्वर सहायता देता है और दूसरे लोग भी मदद देते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४५

सहिष्णुता

समय पर अपने काम का विचार कर लेना ज्यादा अच्छा रहता है। इसके बाद तो ईश्वर की जैसी इच्छा होती है वैसा हुआ करता है। इसलिए जो हो जाए सो सही। अन्त में उत्तम मार्ग तो यही है कि जिस समय जो हो जाए, उसे खुशी से सहन करने के लिए हम सदा तैयार रहें। फिर भी अच्छा यही होगा कि हम सब प्रकार की परिस्थिति का विचार करके, उसका सामना करने के लिए तैयार रहें।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११७

सहिष्णुता अहिंसा का प्राण है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४४

सही विचार

दो घोड़ों पर सवारी करने लगेंगे तो हम जरूर गिरेंगे। युद्ध के लिए रवाना होने से पहले ही—दोनों में से एक घोड़ा चुन लें। मैदान में जाने के बाद जो योद्धा घोड़े के चुनाव करने

का विचार करने बैठता है, वह जरूर हारता है। इसलिए पहले यह जांच कर लीजिए कि कौन-सा घोड़ा स्वराज्य तक पहुंचाएगा। अपनी ताकत वहां तक पहुंचाएगी या दूसरे की आशा, यह निर्णय करके एक घोड़े पर सवार होकर मैदान के लिए रवाना हों।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ८४

साम्प्रदायिकता का भाव

हम सब अपने-अपने धर्म या सम्प्रदाय पर कायम रहकर, भेदभाव छोड़कर और कौमी झगड़े मिटाकर, एक साथ आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति के काम में लग जाएंगे, तभी हमारा उद्धार होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३१७-१८

हिन्दुस्तान में कम-से-कम इतनी आबोहवा जरूर पैदा कर लेनी चाहिए कि यहां दो कौमों के बीच जो जहर भरा है, वह निकल जाए। हिन्दुस्तान में रहने वाले सिक्ख, हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के बीच, दोनों के हितों में जो अन्तर बन गया है वह टूट जाए, और वे एक-दूसरे के साथ मिलकर रहें, ऐसी आबोहवा हमें पैदा करनी चाहिए। मैं जानता हूं कि यह काम कठिन है, आसान नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १७६

हिन्दुस्तान में रहने वाले हिन्दू, मुसलमान, पारसी, क्रिश्चियन या सिक्ख कोई भी हो, सब हमारे लिए समान हैं। यदि हम इस प्रकार का भाव पैदा न करें, इस प्रकार का वायुमण्डल पैदा न करें, तब हिन्दुस्तान खतरे में रहेगा। यह आपको समझ लेना चाहिए। मुसलमान अपनी जगह पर रहें, हिन्दू अपनी जगह पर रहें। सब कोई अपने मजहब के आप मालिक

सलाह

रुचिकर सलाह तो सभी मानते हैं, परन्तु अरुचिकर सलाह भी आप मानने लगेंगे, तब ही स्वराज्य की स्थापना करना संभव है। अगर आप सिर्फ अपने को पसन्द आए, उतना ही हमारा कहना मानेंगे, तब तो हमारा पतन ही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६७

सहायता

सुखी होना तुम्हारे ही हाथ में है। जिसे सुखी होना है, उसे ईश्वर सहायता देता है और दूसरे लोग भी मदद देते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४५

सहिष्णुता

समय पर अपने काम का विचार कर लेना ज्यादा अच्छा रहता है। इसके बाद तो ईश्वर की जैसी इच्छा होती है वैसा हुआ करता है। इसलिए जो हो जाए सो सही। अन्त में उत्तम मार्ग तो यही है कि जिस समय जो हो जाए, उसे खुशी से सहन करने के लिए हम सदा तैयार रहें। फिर भी अच्छा यही होगा कि हम सब प्रकार की परिस्थिति का विचार करके, उसका सामना करने के लिए तैयार रहें।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११७

सहिष्णुता अहिंसा का प्राण है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४४

सही विचार

दो घोड़ों पर सवारी करने लगेंगे तो हम जरूर गिरेंगे। युद्ध के लिए रवाना होने से पहले ही—दोनों में से एक घोड़ा चुन लें। मैदान में जाने के बाद जो योद्धा घोड़े के चुनाव करने

को विचार करने बैठता है, वह जरूर हारता है। इसलिए पहले यह जांच कर लीजिए कि कौन-सा घोड़ा स्वराज्य तक पहुंचाएगा। अपनी ताकत वहां तक पहुंचाएगी या दूसरे की आशा, यह निर्णय करके एक घोड़े पर सवार होकर मैदान के लिए रवाना हों।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ८४

साम्प्रदायिकता का भाव

हम सब अपने-अपने धर्म या सम्प्रदाय पर कायम रहकर, भेदभाव छोड़कर और कौमी झगड़े मिटाकर, एक साथ आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति के काम में लग जाएंगे, तभी हमारा उद्धार होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३१७-१८

हिन्दुस्तान में कम-से-कम इतनी आबोहवा जरूर पैदा कर लेनी चाहिए कि यहां दो कौमों के बीच जो जहर भरा है, वह निकल जाए। हिन्दुस्तान में रहने वाले सिक्ख, हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के बीच, दोनों के हितों में जो अन्तर बन गया है वह टूट जाए, और वे एक-दूसरे के साथ मिलकर रहें, ऐसी आबोहवा हमें पैदा करनी चाहिए। मैं जानता हूं कि यह काम कठिन है, आसान नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १७६

हिन्दुस्तान में रहने वाले हिन्दू, मुसलमान, पारसी, क्रिश्चियन या सिक्ख कोई भी हो, सब हमारे लिए समान है। यदि हम इस प्रकार का भाव पैदा न करें, इस प्रकार का वायुमण्डल पैदा न करें, तब हिन्दुस्तान खतरे में रहेगा। यह आपको समझ लेना चाहिए। मुसलमान अपनी जगह पर रहें, हिन्दू अपनी जगह पर रहें। सब कोई अपने मजहब के आप मालिक

हैं। जो जैसा चाहे, अपना महजब और खुदा मान ले। उसमें कोई झगड़ा नहीं करना है। हिन्दुस्तान का टुकड़ा होने के बाद, इस मुल्क में रहने वाला हर एक व्यक्ति हिन्दुस्तानी है। यहां कोई गैर नहीं है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ २०१

हिन्दू अगर मुसलमानों की मित्रता चाहते हों, तो उन्हें उनके दुःख में शरीक होना ही चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६

सांस्कृतिक एकता

अपनी संस्थाओं सहित यह देश अपने निवासियों की एक ऐसी विरासत है, जिस पर गर्व किया जा सकता है। लेकिन यहां के सभी लोग एक ही सांस्कृतिक सूत्र में आबद्ध हैं, और हम सब खून की दृष्टि से भी एक हैं। इसलिए कोई भी ताकत हमें टुकड़ों में विभाजित नहीं कर सकती, और न ही हमारे बीच ऐसी खाइयां डाली जा सकती है—जिन्हें लांघा नहीं जा सकता।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १२

यह हमारी संस्कृति का ही परिणाम है कि हम एक-दूसरे के साथ इस तरह रहते हैं, जैसे हम सब एक बाप की प्रजा है। हम अनुभव करते है कि हम सब हिन्दुस्तानी है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १६६

सावधानी

आपको निरन्तर सावधान और जाग्रत रहना चाहिए। मैं चाहता हूं कि आप कायर बनकर नहीं, बल्कि मर्दों को शोभा देनेवाले ढंग से—अपने पर होने वाले वार झेलने के लिए तैयार हों, और जरूरत पड़ने पर शुद्ध बलिदान देने के लिए तैयार हों।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४०८

साम्राज्यवाद का विरोध

हमारा अंग्रजों से विरोध नहीं है। यह किसी जाति या व्यक्ति का सवाल नहीं है। यह तो साम्राज्यवाद के विरोध का प्रस्ताव है। नाज़ीवाद का जन्म होने के पहले से हम साम्राज्य-वाद से लड़ते आ रहे हैं। दो लड़ते हों तो हम क्या करें? देखते रहें? दो बलाएं लड़ती हों तो भले ही लड़ें। मगर एक बला तो घर में घुसी हुई है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६५

साहसी

मैं कायरों को लेकर लड़ने नहीं निकला हूं। मैं तो उन्हीं के साथ खड़ा रहकर लड़ना चाहता हूं, जो सरकार का डर छोड़-कर बहादुर बन गए हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १५०

सिक्खों से

यदि हमें लड़ना ही है तो हम कुछ सभ्यता से लड़ें, ताकि दुनिया के लोग भी देखें कि यह लड़ने वाले बहादुर लोग हैं। आपकी तलवार यदि इस तरह कमजोरों पर चलेगी तो उससे क्या फायदा होगा? तुम बहादुर कौम हो। ऐसे कामों से दुनिया में हमारी इज्जत जाती है। बहादुर सिक्खों को बदनाम करने वाला काम कभी मत करो।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १०५

सिपाही

असल में सुरक्षा सरदारी में नहीं, सिपाहीगीरी में ही है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २१३

सरहद के सिपाही को हुकूमत का ख्याल नहीं होना चाहिए। उसे तो सरहद की रक्षा करने का ख्याल होना चाहिए। जब

लड़ाई होती है, तब सब एक हो जाते हैं। इसी प्रकार आज हमारा कर्त्तव्य है कि हम सब एक बनें।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १६

सिपाही का सबसे पहला कर्त्तव्य देश के लिए मरना और देश के लिए जीना है। यह उसका धर्म है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १४७

सुख-दुःख

संसार में सुख-दुःख तो आते ही रहते हैं। इसलिए समझदार आदमी राग और द्वेष से सदा परे रहता है।

—सरदार की अनुभव-वाणी पृष्ठ ११२

संसार में सुख खोजनेवाले को सुख नहीं मिलता।

—सरदार पटेल की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११८

सुख और दु ख इतने ज्यादा घुले-मिले रहते हैं, कि मनुष्य को सदा ऐसा लगता है कि इस संसार में सुख जैसी कोई चीज वास्तव में है ही नही। सच बात तो यह है कि ईश्वर जिस स्थिति में हमें रखे, उसी में सुख मानना चाहिए और अपना फर्ज अदा करना चाहिए।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११६

सुख और दु ख को पहचानना सीखना चाहिए। सुख और दु.ख जीवन के साथ लगे हुए हैं। गरीबी में एक प्रकार का दु ख है, परन्तु उससे जो सुख है वह अमीरी में नहीं है। गरीबों में भगवान ने एक तरह का सुख दिया है। सूखी रोटी खाने से गरीब को मजा आता है, क्योंकि उसके पेट में आग जलती है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६०५

सुख-और दु ख मन के कारण होते हैं। यदि आदमी अपना दिल मजबूत कर लेता है, तो उसे दु ख महसूस नहीं होता।

वह तप करता है। जब उसका तप सच्चा होता है, तब सच्चा समय आता है—और उस वक्त ईश्वर उसका हाथ पकड़े बिना नहीं रहता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४७२

सुख-दुःख तो कागज के गोले हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६६

सुधार

जिनमें कमजोरी है, वे हमारी भलमनसाहत से सुधरेंगे। उन्हें अच्छे बनना हो तो हमें ज्यादा अच्छा बनना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६८

सेवक

अगर स्थायी सेवक बनना हो तो निर्भय बनना चाहिए। स्वयंसेवकों का प्रथम गुण निर्भयता है। जहां-जहां विपत्ति हो वहीं कानों में आवाज पड़ते ही वे पहुंच जाएं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२४

जनता की सेवा करने वाले सेवकों को ज्यादा सावधान रहना चाहिए। उनसे लोग अधिक शुद्ध जीवन की आशा रखें, यह स्वाभाविक है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ७४

जो आखिरी वक्त तक सेवा न करे, वह सच्चा सेवक नहीं है। सच्चे राजपूतों की कथाएं पढ़ने से मालूम होता है कि वे सिर अलग हो जाने पर भी लड़ते थे। सिपाही का धर्म कठोर धर्म है। जो नौजवानों के लिए कोई प्रेरणा छोड़ जाए, वही सच्चा सेवक है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५००

सेवक को मूक रहकर काम करना चाहिए। बोलना आता हो तो भी वह जबान बन्द रखे। भाषणों को चाट लगाए हुए सेवक गांवों के लिए योग्य माने जाएंगे। जिसका काम ही बोलता है, वही सच्चा सेवक हो सकता है। वह मूक होगा तो भी, उसका काम अन्त में उसे प्रकट कर देता है। सेवक अवसर के बिना बोलने का प्रयत्न न करे। मौके पर बोलना शोभा देता है। परन्तु प्रसंग के बिना बोलना, माघ महीने की बारिश की तरह बेकार होता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३००

सेवा

अपनी निजी सेवा किसी से नहीं करानी चाहिए। जब तक अपने हाथ-पैर चलते हों, तब तक स्वयंसेवक को दूसरे से सेवा नहीं लेनी चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४२५

आपके पास कोई दुःखी आदमी आए, तो उसे अपनी शतरंजी पर बिठाइए और आप जमीन पर बैठिए। बदले में आपको सुख मिलेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५०४

रुपया तो आज है, कल चला जाएगा। सट्टे के बाजार में बहुत-से लोग रुपया खो देते हैं, परन्तु सेवा के बाजार में कभी नुकसान नहीं होता। मुझे आशा है कि मेरे दिल की बातें आप ध्यान रखेंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५०२

सेवा-धर्म कठिन है, कांटों की सेज पर सोना जैसा है। सत्ता में जितना मोह है, गिरने का खतरा है, उतना सेवा की सत्ता में भी मौजूद है। थोड़ा-सा त्याग करने वाले को भी हिन्दुस्तान में

लोग पूजते हैं। इसलिए तो लाखों पाखंडियों की पूजा होती है। भगवा वस्त्र पहन लेने से ही भोला हिन्दू साधु मान लेता है। सभी भगवाधारी साधु नहीं होते। इसी तरह सफेद टोपी और सफेद कुरता पहन लेने-से ही कोई गांधी का आदमी नहीं बन जाता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३५०

सैनिक

जैसे इमारत का आधार उसकी नींव पर है, वैसे ही लड़ाई का दार-मदार सैनिकों के चरित्र पर है। उनकी कुरबानी सच्ची होती है, तो जागृति होगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६६

स्त्री

अगर आप यह समझ लें कि सारी उन्नति की कुंजी ही स्त्री की उन्नति में है, तो हमने पहला अध्याय पूरा कर लिया। इस उन्नति के रास्ते लगाए बिना मैं आपको नहीं छोड़ूंगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६३

आप यह क्यों समझती हैं कि आप अबला हैं? आप तो शक्ति रूप हैं। अपनी माता के बिना कौन पुरुष पृथ्वी पर पैदा हुआ है? आप अपनी दीनता मिटाइए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६४

आप यह समझकर बैठी रहें कि पुरुष रक्षा कर लेंगे, तो पुरुष भागेंगे तब आप क्या करेंगी? परन्तु आपको भी सामना करना चाहिए। आप यह मानती हैं कि स्त्रियों में क्या शक्ति हो सकती है? परन्तु जितनी शक्ति स्त्रियों में है, उतनी पुरुषों में भी नहीं है। स्त्रियों की सहनशक्ति बहुत ज्यादा है। स्त्रियों ने तो पुरुषों में भी शक्ति भरी है। इसलिए आप अपनी रक्षा करना सीखिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५३४-३५

"ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी"—अगर आप आज भी यही मानते हों, तो हम गुलाम हैं और गुलाम ही रहेंगे। यह समझ लीजिए कि स्त्री माता बनने वाली है, और नमस्कार करने लायक है। वह लाठी के योग्य नहीं हो सकती। मैं आपकी स्त्रियों को बहकाकर आपको दुःख नहीं देना चाहता। मैं तो उन्हें देवियां और सतियां बनाना चाहता हूं। अगर वे ऐसी बन जाएंगी, तो आपके घर को शोभायमान करेंगी। फिर आपको उनमें अपने से अधिक योग्यता देखकर जरूर शर्म आएगी। फिर आप उन्हें गाली नहीं दे सकेंगे, और उनके साथ आदर और सभ्यता का बरताव करेंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६६

यह जरूरी है कि स्त्रियों को अपने पर आत्मविश्वास हो, और वे अपना उचित स्थान प्राप्त करें। ऐसे सुधार कानून से न हुए है और न होंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३६०

स्त्री-शिक्षा

हमें नये जमाने के अनुकूल बनना चाहिए। लड़कों को पढ़ाएं और लड़कियों को न पढाएं, तो बेजोड़ हो जाता है और दोनों दुःखी होते है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८४

स्वतन्त्रता

इतिहास हमें सिखाता है कि जब एक बार राष्ट्र के अन्तर में स्वतन्त्रता की अग्नि जल जाती है, तो फिर केवल दमन से वह कभी नही बुझाई जा सकती। इससे दूसरे ढंग पर सोचना—इतिहास को भूलने और अपने आपको धोखा देने के बराबर है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २६५

जिस जनता को स्वतन्त्रता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा हो गई है, उसकी प्रगति को कोई नही रोक सकेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १७१

जो निर्भयता पैदा न करे, और अपना बचाव न करे, वह स्वतन्त्रता हजम करने लायक नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६११

भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद भी अगर गुलामी की बदबू आती रहे, तो स्वतंत्रता की सुगंध नहीं फैल सकती।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ १२२

यदि आज आपको यह यकीन हो कि इस लड़ाई में, आजादी लेने के लिए मरने की नौबत आ सकती है, फना होने का मौका आ सकता है—तो आगे बढिए। और यदि मानते हों कि इससे जो कुछ मिलेगा देश को मिलेगा, हमें कुछ नहीं चाहिए, तो ही इसमें शामिल होइए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५४६

हमें स्वतन्त्रता चाहिए। मगर स्वतन्त्रता किसलिए चाहिए? सूअर की तरह कीचड़ के खड्डे में लोटने के लिए? मैं आपसे कहता हूं कि हमारे देहातियों को हमने अधिक अच्छी सफाई की आदतें न सिखाईं, और उन्होंने मवेशियों के रहने जैसी जगह वाले गन्दे और बेढंगे घरों में अपने ढोरों के साथ रहना चालू रखा, तो स्वराज्य आने से भी उनका दारिद्रच दूर नहीं होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २७१

स्वभाव

नम्रता, श्रद्धा और भक्ति की साधना जरूर करनी चाहिए, क्योंकि उसमें विवेक भी है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४०७

सबके साथ निभ जाने की आदत तो हमें डालनी ही चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ११३

स्वयंकार्य

आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता। आपके सिवाय आपका उद्धार और कोई नहीं करेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३२०

स्वराज्य

आपस का वैरभाव भूल जाना चाहिए। ऊंच-नीच के भेद और छुआछूत वगैरा अनेक प्रकार के भेद छोड़ देने चाहिए। लोगों को अब एक बाप की संतान बनकर रहना चाहिए। हिन्दुस्तान में पहले जैसा स्वराज्य था—तमाम झगड़े गांव की पंचायत से तय कराते, और गांव के बुजुर्ग गांव के लोगों को अपनी छाती से लगाकर बैठते, और उनकी रक्षा करते थे—वही स्वराज्य अब लाना पड़ेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८६

एक ही गांव फूट और ईर्ष्या से मुक्त होकर मेरे पास आए, और किसानों का सच्चा स्वराज्य स्थापित करने के प्रयोग में मेरा साथ दे, तो सारे देश में हम आसानी से स्वराज्य स्थापित कर सकते हैं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६८

आलस्य करने वाले, ऐश-आराम करने वाले के लिए स्वराज्य नहीं है। स्वराज्य वह लाता है, जो अपना पेट भरने में ही संतोष नहीं मानता, बल्कि यह देखता है कि उसके गांव में कोई भूखा नहीं रहता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६५

शराब पीनेवाला न हो, तो शराबखाना नहीं होगा। चोरी करनेवाला न हो, तो पुलिस या जमादार की जरूरत नहीं होगी। झगड़ा न करो और अदालत न जाओ, तो मुंसिफ की, कचहरी की जरूरत नहीं होगी। तुम अपना कपड़ा बना लो, तो तुम्हारे यहां स्वराज्य हो है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८४

सच्चा स्वराज्य ऊपर से नहीं टपकेगा। वह किसान को खुद लेना है। स्वराज्य की इमारत गांव में खड़ी करनी है। किसान इतना समझ लें तो हमें सरकार का मुंह क्यों ताकना पड़े !—आप समझ जाएं तो स्वराज्य लेना उतना ही आसान है। सांप जैसे केंचुली उतारकर फेंक देता है, वैसे ही किसान जब जी में आए, तब इस राज्य का जूआ उतारकर फेंक सकता है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६८

स्वराज्य कब स्थापित हो सकता है ? जब गांवों में जरा भी फूट न हो। गांव के सब हिस्से अपना-अपना फर्ज समझकर उसे पूरा करते हों। इस शरीर में अनेक भिन्न-भिन्न अवयव हैं। परन्तु वे कितनी एकता से अपना-अपना काम करते हैं। जिसने यह स्वरूप बनाया है, उसकी रचना की बलिहारी है। पैर में कांटा चुभते ही सिर तक उसका दर्द पहुंच जाता है। अवयव अलग-अलग बनाए हैं, परन्तु उनमें से एक के बिना भी शरीर का कारबार ठीक नहीं चलता। गांव शरीर की तरह होना चाहिए। गांव में एक भी दुःखी हो, एक भी भूखा हो तो सारे गांव को वह दुःख महसूस होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६७

स्वराज्य का अर्थ यह है कि हम आत्मबल के आधार पर खड़े रहें। किसी पर आधार न रखें। पड़ोसी भूखा मर रहा हो,

तो अपनी रोटी में से आधी रोटी उसे दे दें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५८५

स्वराज्य के गांव में रात को किसानों की स्त्रियों को अंधेरे में टकराना नहीं पड़ेगा। गांव में संगठन करके लालटेनें रखी जाएंगी, गांव के सुखी लोग तेल देंगे, और गांव के नौजवान या स्त्रियां लालटेनें साफ करके नियमित रूप से जलाती रहेंगी। इसमें खर्च का सवाल बाधक नहीं होगा, आलस और अज्ञान ही बाधक है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६७

स्वराज्य देर से *मिलेगा या जल्दी से, इसका दारमदार* जनता के संयम और त्याग पर ही है। जब ऐसी मजबूत एकता का दिन आएगा, तब क्या आप यह मानते हैं कि एक लाख की संख्या वाली विदेशी जाति यहीं रहेगी? यह जाति बड़ी होशि-यार है। वह चेत जाएगी कि अब हिन्दुस्तान को गुलामी में नहीं रखा जा सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४४

स्वराज्य-प्राप्ति की बात छोटी-सी नहीं है। अतः उसके लिए जो त्याग करना पड़ेगा, वह भी छोटा-सा नहीं हो सकता।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४०

स्वराज्य में देश की रक्षा के लिए इतना खर्च नहीं होगा, कि देश को गिरवी रखकर दिवाला निकालने की नौबत आए। स्वराज्य में हमारी फौज भाड़े की टट्टू नहीं होगी। उसका उपयोग हमें गुलाम बनाने और दूसरी जातियों की स्वतन्त्रता नष्ट करने में नहीं होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३३

स्वराज्य होगा, तब स्त्रियों का प्रश्न हल हो जाएगा। असल बात तो यह है कि स्त्रियों को पथभ्रष्ट कर दिया गया है। उन्हें उचित स्थान पर बिठाया जाएगा, तब स्वराज्य मिलेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३६०

हम ऐसा स्वराज्य चाहते हैं, जिसमें सैंकड़ों आदमी सूखी रोटी के अभाव में मरते न हों; जिसमें पसीना बहाकर पैदा किया हुआ अनाज—किसानों के बच्चों के मुंह से छीनकर विदेश न भेज दिया जाता हो, जिसमें लोगों को कपड़े के लिए पराये देश पर आधार न रखना पड़ता हो, जिसमें जनता की इज्जत की रक्षा या उसका लुटना—विदेशियों की मर्जी पर न हो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३२

स्वार्थ

स्वार्थ की खातिर राजद्रोह करनेवालों से नरककुंड भरा है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३८३

स्वावलम्बन

जैसे पड़ोसी के मरने से हम स्वर्ग में नहीं जा सकते, वही बात स्वतन्त्रता की है। अगर हमें आजादी चाहिए, तो हमें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३७१

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य यदि अच्छा न रहे, तो दुनिया में दुःख का पार नहीं रहता। आदमी अकेला हो तो चाहे जैसा दुःख सहन कर सकता है। लेकिन परिवार के साथ रहने के कारण दूसरों को भी उसके दुःख से दुःखी होना पड़ता है।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ ११९

हड़तालें

जहां तक हड़तालों का सवाल है, मैं यह अनुभव करता हूं और इस बात की कड़ी निंदा करता हूं, कि हड़तालें आज इतनी सस्ती कर दी गई है कि अब यह मजदूरों का नेतृत्व हथियाने का साधन बन गई है। मजदूरों की शिकायतें दूर करने का उचित साधन नही रही हैं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १०१

हम ट्रस्टी हैं

भावी संतानों का हम पर कुछ तो हक है। हम उनके ट्रस्टी है! अगर हम उनके लिए अपमान की ही विरासत छोड़ जाएंगे, तो हमारी दौलत और हमारा ठाटबाट उनके लिए किस काम का है? हम इस अपमान को पी जाएं, तो सुधरे हुए राष्ट्र हमारा तिरस्कार करें—इसमें क्या आश्चर्य है?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १६

हस्तक्षेप

अधिकारियों के काम में रोज-रोज दखल नही देना चाहिए। अधिकारी का चुनाव करते समय देख लेना चाहिए, कि वह लायक है या नहीं। परन्तु बाद में रोज हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४३६

चाहे हैदराबाद हो या कश्मीर, जूनागढ़ हो या और कोई—किसी भी हालत में, कोई बाहर की शक्ति हमारी आन्तरिक व्यवस्था में दखल नही दे सकती। चाहे हिन्दुस्तान खत्म हो, या पाकिस्तान खत्म हो, या दुनिया खत्म हो जाए, हम किसीका दखल बरदाश्त नही कर सकते। हमने पाकिस्तान सच्ची नीयत

से कबूल किया है। और आज तक भी हमारी नीयत साफ है और हम उसका भला चाहते हैं, वह अगर खुद अपने हाथों से अपना खड्डा खोदना चाहता हो, तो उसमें वे गिरें—उसमें भी हम अलग रहेंगे, मैं आज भी यही बात कहता हूं।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ३४

हिन्दुस्तानी

यदि आप हिन्दुस्तानी बनना चाहें, तो आपको सारे हिन्दुस्तान को अपना मुल्क समझना होगा, और तब हिन्दुस्तान-भर के आदमी मुल्की होंगे। ज्यादा आदमी तो हम लाएंगे ही नहीं, लेकिन हमें हिन्दुस्तान-भर को एक बनाना है। हिन्दुस्तानी को जहां-जहां जरूरत हो, उसे वहां जाना चाहिए। सारे मुल्क में वह मुल्की है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ६१

हिन्दुस्तान की एकता

हमारी इज्जत छोटी-छोटी रियासतों में राज्य करने से नहीं बनती, लेकिन अगर दुनिया में हिन्दुस्तान की इज्जत बढ़े, तो उसमें हमारी भी इज्जत बढ़ती है और राजाओं की भी इज्जत है। तो हमारा पहला फर्ज है कि हम हिन्दुस्तान को मजबूत कर दें। तब हम इसे दुनिया के बड़े मुल्कों की कतार में खड़ा कर सकते है। इस काम में जितना समय हम बिगाड़ेंगे, वह हमारा ही कसूर है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १६

हिन्दू-मुसलमान

हिन्दु-मुसलमानों की एकता अभी तो एक कोमल पौधा है। उसे कितने ही समय तक अत्यन्त सावधानी से पालना

पड़ेगा। अभी तक हमारे मन, जितने चाहिए उतने साफ नहीं हैं। हर मामले में एक-दूसरे का अविश्वास करने की हमें जो आदत पड़ गई है, वह नहीं जाती। इस एकता को तोड़ डालने के लिए कई तरह के प्रपंच और प्रयत्न होंगे! उसे हमेशा के लिए मजबूत बनाने का सुन्दर अवसर, हिंदुओं के हाथ में सहज ही आ गया है। हिन्दुओं का धर्म तो यह है कि हम इस्लाम की रक्षा करने में इस समय मुसलमानों को पूरी तरह मदद दें, और मुसलमान कौम की शराफत पर विश्वास रखें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ३४

हिंसा

आप दूसरों को मारेंगे, तो उसके साथ विनाश को भी न्यौता देंगे।

—सरदार की अनुभव-वाणी, पृष्ठ १२०

बंदूक से और लाठी से काम लेना हो, तो वह फौज का और पुलिस का काम है, दूसरे का नहीं। जिसे कलम से काम लेना है, उसको बन्दूक दे देने से वह अपनी खुदकुशी करेगा, या दूसरे को मार डालेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ४६

हमें एक ही चीज करनी है, और वह यह कि हिंसा न करें, और ऐसा काम न करें जिससे किसीको कष्ट हो। परन्तु स्वाभिमान की रक्षा के लिए सब तरह के कष्ट सहन करें।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४८१

हिंसा के विरुद्ध अहिंसा का हथियार आजमाकर गांधीजी ने दुनिया की आंखें खोल दी हैं। आजकल दुनिया में संहार-शक्ति का जोर है। इस प्रबल शक्ति के सामने, मुट्ठीभर

हड्डियों वाला एक आदमी खड़ा रहकर सरकार को कंपा रहा है। उसके पास जैन धर्म का 'अहिंसा परमो धर्मः' का शस्त्र है, और उस शस्त्र का वह अद्भुत ढंग से इस्तेमाल कर रहा है। इतनी शक्ति रखनेवाला और कोई आदमी आप मुझे बता दें, तो मैं उस व्यक्ति को तीर्थंकर मानकर नमस्कार करने को तैयार हूं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २३८

हिम्मत

अपना दरवाजा खुला रखो, हिम्मत से काम लो, और साफ काम करो तो सारी रियासत आपके पीछे चलेगी, कोई भी उसमें रुकावट नहीं डाल सकेगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ५०

हैदराबाद की पुलिस-कार्यवाही

हिन्दुस्तान में एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो अपने दिल में यह समझता हो कि हमने हैदराबाद के साथ कोई बुराई या नालायकी की है। जब हमको यह कहा जाता है कि हमने आक्रमण किया है, तो यह समझ में नहीं आता कि हमने किसके ऊपर आक्रमण किया है। हिन्दुस्तान के अपने ही एक हिस्से पर, जो अपना ही हिस्सा है, जो लोग अपने ही हैं, उन पर आक्रमण कैसा? उसका माइना मेरी समझ में नहीं आता। लेकिन कई लोग यह समझना ही नहीं चाहते। ईश्वर की बड़ी दया हुई, जो सारा काम ठीक से पूरा हो गया।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ २८-२९

हैदराबाद रियासत के विषय में

मुझे तो जरा भी उम्मीद नहीं कि किसी दूसरी तरह से हैदराबाद का फैसला हो सकता है। और राज्यों ने जो कुछ

किया है, अगर हैदराबाद भी खुद इसी तरह से करने के लिए तैयार हो, तो हम उसकी इज्जत करेंगे। तब हम उससे मुहब्बत करेंगे। लेकिन अगर वह डण्डे से, धोखे से, या बाहर की मदद की उम्मीद से कोई रास्ता लेना चाहेगा, तो वह नहीं होगा। हिन्दुस्तान इस तरह से कभी बरदाश्त नहीं करेगा। उस तरह से स्वतन्त्र हिन्दुस्तान जिन्दा भी नही रह सकता है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ २१

विविध

अगर भारत के सार्वजनिक जीवन में संप्रदायवाद न हो तो वह एक वरदान होगा; परंतु दुर्भाग्य से हमारे सार्वजनिक जीवन में सांप्रदायिकता का बोलबाला है, और उसने देश के समस्त वातावरण को विषैला बना डाला है। इसलिए हम सबको इसका जड़मूल से नाश करने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिए।

—सरदार का पत्र वी० के० जान को (२८-१२-१९४६)

अगर भेड़ों में से उनकी रक्षा करनेवाली भेड़ न निकले, तो क्या वे विलायत से रक्षा करनेवाला ला सकेंगे? ला सकें तो भी वह उनको पुसाएगा नहीं। वह कोई अढ़ाई आने में नहीं रह सकता। ऐसे छप्परों में नहीं रह सकता। उसे बंगले चाहिए, बगीचे चाहिए, उसकी खुराक दूसरी, उसकी आवश्यकताएं दूसरी। उसे अलग धोबी चाहिए, अलग भंगी चाहिए। इस तरह तो सरकार को सिर से मुंडन महंगा पड़ जाए। हर गांव में दो-दो अंग्रेज रखें, तो इस तालुके के पांच लाख रुपये वसूल करने के लिए कितने गोरे रखने होंगे और उनका कितना खर्च पड़ेगा, इसका हिसाब लगाना कठिन नहीं।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ७४

अपने गांवों की रक्षा खुद कर लीजिए। मौत का भय छोड़ दीजिए। संगठन में शरीक हो जाइए। मन में मेल रखिए। जो दुःखी और भूखें हों, उन्हें काम दीजिए। और कोई अपंग हो, तो उसे खाने को दीजिए। वैरभाव और झगड़े भूलकर कांग्रेस का साथ दीजिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४६६

अब आप जिन आदमियों को अपना नेता मुकर्रर करें, उनका अभी से विश्वास करना सीखिए।

—सरदार पटेल के भाषण पृष्ठ ३२६

अब ऐसा समय आ गया है—कि हिन्दुस्तान आजाद न हुआ, तो समझ लीजिए कि हमेशा के लिए डूब गया। मगर हम डूबनेवाले नहीं हैं। हिन्दुस्तान स्वतन्त्र होकर ही रहेगा। परन्तु उसके लिए हमें मर-मिटने की तैयारी कर लेनी चाहिए। भावी संतानें हमसे हिसाब मांगेंगी कि गुलामी मिटाने के लिए आपने क्या किया था? अगर कुछ नहीं किया होगा तो आपकी बदनामी होगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४५२

आज की दुनिया में कोई भी समझदार आदमी यह नहीं मानता, कि सर्वोपरि सत्ता एक व्यक्ति के हाथ में रहती है—फिर वह व्यक्ति राजा हो, महाराजा हो, जार हो अथवा हिटलर हो।

—सरदार पटेल का चुना हुआ पत्र-व्यवहार (खण्ड—1), पृष्ठ ५५६

आज के नाजुक समय में हम सर्वथा अलग-थलग नहीं रह सकते, हमें अपने सारे ही साधनों को एकत्र करना चाहिए, और साथ मिलकर एक समान नीति अपनानी चाहिए।

—सरदार का पत्र शरच्चंद्र बोस को (२२-५ १९४७)

आज यह सरकार ऐसी मदमत्त हो गई है, जैसे जंगल में

कोई पागल हाथी घूम रहा हो—और उसकी टक्कर में जो कोई आए, उसे वह कुचल डालता हो। पागल हाथी मद में यह मानता है कि मैंने जब बाघों व शेरों को मारा है, तो इस मच्छर की मेरे सामने क्या बिसात है! परन्तु मैं मच्छर को समझाता हूं कि इस हाथी को जितना खेलना हो खेल लेने दो. और फिर मौका देखकर उसके कान में घुस जाओ।

—सरदार पटेल के भषण, पृष्ठ ७३

आप एकता रखेंगे, अहिंसा का पालन करेंगे, शराब छोड़ देंगे, यह सब करेंगे तो आपको सरकार से नहीं लड़ना पड़ेगा। सरकार तो माया है, हवाई किला है, पानी का बुदबुदा है, उसे पहचान लें तो उसी वक्त फूट जाए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६८

इस कलिकाल में ऐसे बहुत मिलेंगे, जो कहेंगे कि उन्होंने मूर्खता की। धर्म को ताक में रखकर, अनेक प्रकार की अनीति से धन इकट्ठा करने के जमाने मे, हक से मिली हुई जायदाद को धर्म को खातिर गंवा देने वाले को मूर्ख कहनेवाले मिलें, तो इसमें क्या आश्चर्य ? परन्तु अब देह और द्रव्य को बचाकर धर्म पालने का युग खतम होने आया है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५४

एक इमारत को चुननेवाला राज, उसका नक्शा बनानेवाले इन्जीनियर के बराबर शक्ति रखने का दावा तो नहीं करता, लेकिन फिर भी उस नक्शे के अनुसार इमारत पूरी करने में कठिनाई नही महसूस करता; वैसे ही गांधीजी के अनुयायी अगर उनकी तैयार की हुई स्वराज्य की इमारत की योजना बराबर समझ गए होंगे, तो उन्हें उसके अनुसार इमारत का काम जारी

रखने में परेशानी नहीं होगी।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ५२

एक घड़े से बहुत-सी ठीकरियां बनती हैं। लेकिन उनमें से एक ठीकरी भी सारे घड़े को फोड़ने के लिए काफी है। घड़े से ठीकरी क्यों डरे? फूटने का डर किसीको रखना हो, तो वह घड़े को रखना चाहिए ठीकरी को क्या डर हो सकता है?

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ७३

एक भी अंग्रेज ईमानदारी से यह नहीं मानता कि हिन्दुस्तान को कुछ देना चाहिए।—उनका तो खयाल यह है कि हिन्दुस्तान मूर्खों का घर है, मीठी-मीठी बातों से धोखे में आ जाएगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २३३

क्रोध और आवेग की मनःस्थिति में तत्काल कुछ कर-गुजरना आसान है, परन्तु एक बार उठाए गए गलत कदम को वापस लेना, या बार किए गए नुकसान की पूर्ति करना कहीं ज्यादा कठिन है।

—सरदार पटेल की अपील, पूर्व बंगाल की समस्याएं

गलती मानव की कमजोरी है, और दिव्य आदेश हमें उसे भूलने और क्षमा करने की शिक्षा देते हैं, फिर भी मानवों का यह कर्तव्य है कि वे सच्चा पश्चात्ताप करके, तथा बचे हुए समय को अपने लोगों तथा अपने भगवान के प्रति कर्तव्य-पालन में लगाकर—इस प्रक्रिया की पूर्ति में अपना योगदान दें।

—सरदार का पत्र निजाम को (४-३-१९४९)

जब आग भड़कती है, तो उसमें जो चिनगारियां उड़ती हैं, उनसे आसपास वालों को भी कुछ-न-कुछ नुकसान पहुंचता ही है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ४४

जब कोई अन्तर्राष्ट्रीय समझौता हो—जिसमें देश ने कोई वचन दिया हो, तब कुछ-न-कुछ मात्रा में संयम और जिम्मेदारी और अन्तर्राष्ट्रीय दायित्व का ख्याल रखने का भार सरकार के आलोचकों पर भी आ जाता है। इस बात को हमारे आलोचकों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ६२

जब तक हिन्दुस्तान के सिपाही मेरे पास हैं, मुझे हिन्दुस्तान कि रक्षा करनी है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ८३-८४

जहां तक अलीगढ़ यूनिवर्सिटी का प्रश्न है, भारत सरकार निश्चित रूप से उचित कदम उठाएगी। यदि पाकिस्तान सरकार उस संस्था की वफादारी को बदलने का प्रयत्न करती रही—हम यूनिवर्सिटी का, पाकिस्तानी सेना के अफसरों के लिए उम्मीदवार भरती करने के आधार-स्थल के रूप में उपयोग नहीं करने दे सकते।

—सरदार का पत्र गोविन्दवल्लभ पंत को (२३-१०-१९४७)

जो काम करें वह साफ तौर से कीजिए, पिछले दरवाजे से मत कीजिए। अपनी कमजोरी छिपाने के लिए अधिक पाप करने के बजाय तो आपको मेरी सलाह है, कि आप जो निश्चय करें उस पर कायम रहिए, पीछे मत हटिए।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २३४-३५

जो चीज आखिर हमको जबरदस्ती करनी पड़े, लाचारी से करनी पड़े, उसे स्वेच्छा से करना और समय देखकर समझपूर्वक करना, उसी में हमारी इज्जत है, उसी में हमारी सभ्यता है।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ५४

थोड़े-से हठी लोगों को—फिर भले ही वे देश के महान् नेता क्यों न हों—अपनी मनमानी करने की सुविधा देकर शांत करने के लिए जो अपना निश्चय छोड़ देते हैं, और दूसरों से छोड़ने का आग्रह करते हैं, उन्हें अपनी करतूत से देश को होनेवाली अपार हानि का खयाल नहीं है।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६६

दुनिया कहेगी कि एक बन्दर के पास एक हीरा हाथ में आया, तो बन्दर ने समझा कि कोई फल है। हीरा पकड़ वह उसे खाने लगा। मगर वह हीरा था, जब वह बन्दर के दांतों से न टूटा, तो उसने यह समझकर उसे फेंक दिया कि वह तो पत्थर है। हीरे का दाम तो जौहरी ही समझ सकता है। इसी प्रकार अब देखना यह है कि हमारे हाथ में आज जो स्वराज्य आया है, उसका व्यवहार हम बन्दर की तरह करेंगे या जौहरी की तरह।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ १७६-७७

दुनिया में जिन्दा रहना है तो दोनों संतों (स्वामी दयानन्द और गांधीजी) के उपदेश का मिश्रण करके हमें दुनिया में खड़े रहना होगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ २१४

दूध और पानी मिलकर एक जीव हो जाते हैं, और कभी अलग नहीं होते। दूध उबलता है, तब पानी दूध को बचाने के लिए नीचे जाकर पहले खुद जल जाता है, और दूध को ऊपर निकालकर उसका बचाव करता है। तब दूध पानी का बचाव करने के लिए खुद उफनकर, आग में पड़कर आग को बुझाने की कोशिश करता है। इसी प्रकार आज किसान और साहूकार एक हो जाओ, एक-दूसरे को मदद करो, और यह निगाह रखो

कि इसमें कोई बाधक न बन सके।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ७४

दो भाई लड़ते हों, और पड़ोसी आकर कहे कि जब तक तुम लड़ते हो तब तक यह घर मेरा है, तो यह बात किसी भी मुल्क मे नहीं मानी जाएगी। समझदार हों तो ऐसे व्यक्ति को कान पकड़ कर बाहर निकाल दें। हम लड़ते ही रहेंगे, तो भी अन्त में हममें से एक आदमी घर का मालिक होगा, मगर पड़ोसी तो मालिक हरगिज नहीं रहने दिया जाएगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४५०

धाक से काम कई हद तक चल सकता है, बन्दूक से, डंडे से कई हद तक हम काम ले सकते है, लेकिन पुलिस का असल काम तब अच्छा होता है कि जब जनता को प्रेम हम सम्प्रदान करें, और जितना ज्यादा प्रेम लोग हमारे साथ रखेंगे, उतना ज्यादा काम हमारा सरल होगा।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ २११

पशुबल का उपयोग कुछ समय के लिए भले ही, सुधार के लिए लोगों के उत्साह को रोक दे, परन्तु वह इस उत्साह को सदा के लिए नष्ट करने में कभी सफल नही हो सकता।

—सरदार पटेल का वक्तव्य २६-१२-१९४७

प्रगति की शीघ्रता से आगे बढ़ती शक्तियों को कोई चीज नहीं रोक सकती, इसलिए समय को पहचानकर उसके साथ चलने में ही बुद्धिमानी होगी।

—सरदार का पत्र एम० शंकर लिंगेगाउदा को, २-२-१९४७

मेरे साथ खेल न किया जाए। मैं ऐसे काम में हाथ नहीं डालता, जिसमें जोखिम नही है। जो लोग जोखिम उठाने को तैयार हों वे मेरे साथ आएं, मैं उनका साथ दूंगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६७

मैं अच्छी तरह समझता हूं कि अल्पसंख्यकों में सुरक्षा की भावना उत्पन्न करने के लिए, बहुसंख्यकों की जिम्मेदारी सबसे बड़ी है। साथ ही हमें अल्पसंख्यक जाति या उसके एक विभाग की वफादारी के प्रश्न पर, बहुसंख्यक जाति के भयों के चिढ़ाने वाले असर का भी ख्याल करना होगा। मैं नहीं मानता कि इस बात की सम्पूर्ण उपेक्षा करना हमारे लिए संभव होगा।

—जवाहरलाल नेहरू को पत्र २८-५-१९५०

मैं यह सिखाना चाहता हूं कि इस सरकार का राज्य केवल आपकी कमजोरी पर चल रहा है। वर्ना देखिए न, एक तरफ तो विलायत से बड़ा अभियान कमीशन यह जांच करने आया है कि जनता को किस तरह जिम्मेदार हुकूमत दी जाए, और दो बरस में गृह-विभाग लोगों को सौंप देने की बातें हो रही है। ये सब निरी गीदड़ भभकियां हैं। जिसे सरकारी नौकरी करनी हो—वह भले ही इससे डरे। किसानों के बच्चों को इनसे डरने का कोई कारण नहीं है। उन्हें तो विश्वास होना चाहिए, यह जमीन हमारे बाप-दादों की थी, और हमारी ही रहेगी।

सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ १४४

यदि हम त्याग और एकता की भावना से परिस्थिति का सामना करें, तो हम अभी सारी मुश्किलों को दूर कर सकते है।

—सरदार का पत्र भीमसेन सच्चर को, २०-२-१९४६

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि भारत राजनीतिक दृष्टि से भिन्न-भिन्न टुकड़ों में बंटा रहा, और उसमें एकता का अभाव रहा, जिसके कारण उस पर बराबर विदेशी हमले होते रहे। फिर हम लोगों में जो आपसी संघर्ष और झगड़े होते रहे, ईर्ष्या-विद्वेष का प्राबल्य रहा, उसीके कारण हमारा अधःपतन हुआ,

और हम लोग कई बार विदेशी पराधीनता के शिकार हुए। अत: फिर से हम लोग वैसी गलतियां नहीं कर सकते, या ऐसे जाल में नही फंस सकते।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ११

यह लड़ाई जबरदस्त खतरों से भरी हुई है। जोखिम-भरा काम न करना अच्छा है, किन्तु किया जाए तो किसी भी कीमत पर उसे पूरा करना चाहिए। हारोगे तो देश की लाज जाएगी। मजबूत रहोगे तो सारे देश को लाभ होगा, उसकी इज्जत बढ़ेगी। अगर मन में हो कि वल्लभभाई जैसा लड़ने वाला मिल गया है, केवल इसलिए लड़ेंगे, तो लड़ो मत। क्योंकि अगर तुम हार गए, तो निश्चित मानो कि सौ वर्ष तक नहीं उठोगे। हमें जो करना है वह तुम्हीं को करना है। इसलिए पूरा विचार कर, अच्छी तरह समझकर, जो करना चाहो सो करो।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ६८

ये अदालतें और शराब की दुकानें शैतान के घर हैं। विदेशी कपड़ा भी ऐसी ही चीज है। इन तीनों को छोड़ो, सरकार को भूल जाओ और निर्भय होकर बैठ जाओ, तो आपका बाल भी बांका नहीं होगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ २०८-९

राज्यों तथा उनकी जनता के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना में जो वास्तविक प्रश्न बाधक बनता है, वह यह है कि अधिकतर राज्य, जनता के बुनियादी अधिकारों अथवा नागरिक स्वतन्त्रता को स्वीकार करने से, तथा जनता की उत्तरदायी सरकार की स्वाभाविक मांग को पूरा करने से इन्कार करते है।

—सरदार का पत्र बीकानेर के महाराजा को (२४-७-१९४६)

लोकतन्त्र और लोकतान्त्रिक संस्थाएं भी उसी घटक में कार्यक्षमतापूर्वक चल सकती है, जिसमें काफी हद तक अपना स्वतन्त्रता और स्वायत्तता टिकाए रखने का सामर्थ्य है। जो राज्य अपने छोटे आकार के कारण, अन्य क्षेत्रों से उसके अलगाव के कारण पड़ोस के स्वायत्त भूभाग के साथ—फिर वह प्रान्त हो या कोई अधिक बड़ा राज्य हो—दैनिक जीवन की लगभग सभी आर्थिक प्रगति की संभावनाओं के विकास के अपर्याप्त साधनों के कारण, जनता के पिछड़ेपन के कारण, और स्वयंपूर्ण प्रशासन की जिम्मेदारी उठाने की निरी अक्षमता के कारण अपने यहां शासन की आधुनिक पद्धति दाखिल नहीं कर सकता, उसे तो स्पष्ट और निश्चित शब्दों में, लोकतन्त्रीकरण और एकीकरण की ही सलाह दी जा सकती है।

—सरदार पटेल का वक्तव्य, १६-१२-१९४७

शरणार्थियों से लड़ना कोई लड़ाई नहीं है। मानवता और वीरता, प्राण-भिक्षा मांगने वाले को मारने वाले की अनुमति नहीं देती।

—भारत की एकता का निर्माण, पृष्ठ ६१

स्वाधीनता प्राप्त करना हमारे लिए अपेक्षाकृत आसान हो रहा है। पर अपने आपको इस स्वाधीनता के योग्य सिद्ध करना कहीं ज्यादा कठिन होगा। यह स्वाधीनता निरर्थक होगी, यदि इसका परिणाम देश की आम जनता की गरीबी और बीमारी के दूर करने में नहीं आया, हमारे चरित्र के विकास और उन्नति में नहीं आया, नागरिक उत्तरदायित्व की विकसित भावना के रूप में नहीं आया, तथा सार्वजनिक आचरण के स्तरों को ऊंचा उठाने के रूप में नहीं आया।

—सरदार पटेल का चुना हुआ पत्र-व्यवहार, (खण्ड १) पृष्ठ ५६७

हम जिस आनन्द के लिए तरस रहे हैं, वे उसे भोग रहे है। कानून और व्यवस्था के सिद्धान्त पर रची हुई होने का ढोंग करने वाली, लेकिन जैसा कि दीपक की तरह स्पष्ट दिख रहा है—दरअसल सिर्फ जबरदस्ती की बुनियाद पर रची हुई इस सरकार ने आज तक इस आनन्द को रोक रखा था।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४३

हमारे हाथ से बुरा काम कभी न हो। हमें अपने हृदय को भी अच्छी तरह पहचान लेना चाहिए। आपस के झगड़े मिटा कर, ऐसे फसादी तत्त्वों को अलग करके दबा देने के लिए हम कुछ न करें, तो वे सारे समाज पर हावी हो जाएंगे।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४१६

हमें भगवान का उपकार मानना है कि जिस देश में व्यक्तिगत रागद्वेष, दलबन्दी और साम्प्रदायिक झगड़ों के भार के नीचे—परस्पर सहिष्णुता, राजनीतिक दीर्घदृष्टि और देश का उच्च हित दब गए थे—और जिस समय शंका और निराशा के बादल देश पर घिरे हुए थे, उस समय उस दयालु भगवान ने हम पर दया की, और राग-द्वेष और कलह के नीचे बहने वाले, जनता की दृढ़ता, शक्ति और हृदयबल के गूढ़ प्रवाह का नम्रता से परिचय देने का अवसर हमें दिया। मित्रों की तमाम गलतफहमियों और शत्रुओं की तमाम झुठाई के बावजूद, निर्मलता और निर्भयता के साधनों से सुसज्जित इस धर्मयुद्ध का स्मरण लोग भविष्य में गौरव के साथ करेंगे, और यह धर्मयुद्ध लोगों में सत्य, अहिंसा और त्याग के शस्त्रों की श्रेष्ठता के बारे में श्रद्धा का संचार करेगा।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ७५

हमें सावधानी से न्यायतन्त्र की स्वतन्त्रता तथा प्रामाणिकता

की रक्षा करनी चाहिए, और ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे यह छाप पड़े कि न्याय-तन्त्र के कार्य में मंत्रियों की ओर से हस्तक्षेप किया जाता है।

—सरदार का पत्र ओ०पी० रामस्वामी रेड्डी को, १२-१२-१९४७

हिन्दुस्तान की सार्वजनिक आकांक्षाओं को कुचल डालने वाले इस शासन-यन्त्र में कोई भी हिन्दुस्तानी असैनिक और खास तौर पर सैनिक की हैसियत से नौकरी करे, वह हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय सम्मान को धक्का पहुंचाने वाली बात है। प्रत्येक भारतीय सिपाही और असैनिक मुलाजिम का यह फर्ज है कि वह सरकार से अपना सम्बन्ध तोड़ ले, और अपने गुजारे का कोई भी उपाय ढूंढ़ ले।

—सरदार पटेल के भाषण, पृष्ठ ४०



मुद्रक : गोयल प्रिन्टर्स, भोलानाथ नगर, दिल्ली-32

